नमो सिरि-तवगच्छायरिय-सयलागमरहस्सवेदीणं-

सिरिविजयदाणसूरिगुरूणं ।

प्राचीनाचार्यकृतान्तर्भाष्य-चूर्णिसहिता चिरन्तनाचार्यकृता

सित्तरी ।



सम्पादकः—परमार्हत-श्रीकुमारपालदेवशासनपुनीतश्रीअणहिलपुरपत्तनवास्तव्यो-भोजकज्ञातीयः-मुश्रद्धासंपन्नो-

मोहनलालात्मजः पंडितोऽमृतलालः ।



वि० सं० १९९९] मूल्य-रु ३-०-० प्रतय ७०० [वीर स० २४६९

प्रकाशक —शाह गुलाबचंद पानाचंद
मा मनो-था शुभायाई ज्ञानमंदिर,
श्रीमाली वगा मु० डभोई



— सित्तरीना प्रकाशनमा द्रव्य सहायकोना मुबारक नामो —

२०१) अमदावादनिवासी धर्मप्रेमी शाह शनालाल हुकमचंदना गगास्वरूप धर्मपत्नी हीरनब्हेन, परम पूजनीय परम कारुणिक गुरुदेव महामहोपाध्याय श्रीमद् मघुविजयजी गणिवरनी शुभ निश्रामां श्री विनयदानसूरीश्वरजी ज्ञानमंदिर अने पौषध शाळाना सुंदर अने मनोहर व्याख्यान हॉलमां सं १९९८ ना अशाढ सु ६ थी करावेला माडेला श्री भगवती महासूत्रना श्रवणनी पुण्यस्मृति निमित्ते ।

२००) मांगरोळनिवासी धर्मप्रेमी शाह जगमोहनदास जेठालाल

२००) अमदावाद निवासी धर्मप्रेमी शाह चीमनलाल कालीदास



मुद्रक —शा गुलाबचंद लल्लुभाई
श्री महोदय प्रिन्टींग प्रेस,
दाणापीठ–भावनगर

विषयानुक्रमणिका









प्रकाशकनुं निवेदन ।

आजे सित्तरी ग्रन्थ तेना भाष्य अने चूर्णि सहित प्रसिद्ध थाय छे, तेथी अमोने अनिर्वचनीय आनन्द थाय छे. श्रीमुक्ताबाई-ज्ञानमंदिरनु आ नवमु प्रकाशन जाहेर थाय छे. अमारी आ ऊगती संस्था टूक वखतमा आटला सुंदर अने सर्वोपकारी प्रकाशनोनो लाभ श्रुतभक्त जिज्ञासु जनोने सादर आपी शकी छे, ते पू. आगमप्रज्ञ प्रवचनप्रभावक प्रखरवक्ता सुविहिताग्रणी गुरुवर्य्य श्री उपाध्यायजी महाराज श्री जंबूविजयजी गणिवरना महान् उपकारने आभारी छे.

आ ग्रन्थ कर्म विषयनो छे अने प्राकृत भाषामा छे. अत्यार सुधी ए अप्रगट रहेलो प्रथम वार प्रकाशित कराय छे. तेनु संपादनकार्य आ संस्थाना एक प्राण समा विद्वान् कार्यकर पंडित अमृतलाल मोहनलाले कर्युं छे तेओ पाटणना वतनी छे. केवल जैनाश्रित गणाती भोजक ज्ञातिना छे, छता तेओ केटला विद्वान् छे अने प्रभुश्री वीरशासनना केवा अडग श्रद्धालु तथा सत्यना खरा सेवक छे ए तेओए आ जटिल ग्रंथना करेला समर्थ संपादनथी वाचकोने स्वयमेव सुविदित थशे तेमना आ यशस्वी कार्यथी भोजक ज्ञाति तो शु परंतु जैन कोम पण गौरव लेशे एवी अमोने खात्री छे. तेओनो आ प्रथम उत्साह छे. पूज्य श्री गुरुदेवना शुभ आशीर्वाद अने टेकाथी ते सफलताथी पार उतर्यो छे एमा शकाने स्थान नथी.

आ ग्रन्थना विद्वान् संपादके ग्रन्थ अने ग्रन्थकर्ता आदि उपयोगी विषयो उपर प्रकाश पाडती एक ऐतिहासिक महत्त्व धरावती प्रस्तावना लखेली छे, जे आ साथे सामेल ज छे एटले तत्संबधि अमारे काई कहेवानु नथी

तीथि आदि अनेक विषयोमां आजे नवीन कपोल कल्पित प्ररूपणाओ करनार आचार्य श्री सागरानन्दसूरिनी उत्सूत्रीयता जगजाहेर छे तेमणे, 'आठ वर्षनी अंदर पण दीक्षा अपाय, अनादि मिथ्यात्वी प्रथम सम्यक्त्व पामे त्यारे सर्वविरती करता पण बहु निर्जरा करे छे, अनादि मिथ्यात्वी पहेलवहेलु क्षायक सम्यक्त्व उपार्जन करे छे,' इत्यादि केई कुमतो जैन समाजमां प्रगट कर्या छे आ ग्रन्थनो स्वाध्याय करनाराओने ते असत्य होवानु तेना विषयानुसार अचूक पुरवार थशे मौलिक जैन शास्त्रोरूपी सूर्य ज्यां सुधी श्री जैन शासनमां तपे छे त्यांसुधी तेमना एके कुमत टकी शके तेवा नथी, ते निर्विवाद छे

कर्मसाहित्यमां आ अति उपयोगी ग्रन्थ छे अभ्यासीओ, साहित्यप्रेमीओ, अने ज्ञानसंग्राहको आ महामूला प्रकाशनने शीघ्र अपनावी लेशे, ए स्पष्ट सुनिश्चित वात छे

पूज्य श्री गुरुवर्ये आ ग्रन्थनां प्रुफो विगेरे तपासी जवानी महती कृपा करी छे ते साथे आ संपादनमां विद्वद्वर्य मुनिराजश्री पुण्यविजयजीए पण स्तुत्य मदद करेली छे, ते उपरांत पाटण, वडोदरा आदि भंडारोना कार्यवाहकोए प्रतिओ पूरी पाडवानु सुंदर सौजन्य बताव्यु छे, तेओ सर्वनो तेमज पूज्य श्री गुरुदेवना सदुपदेशथी आ ग्रन्थ प्रकाशनमां द्रव्यसहाय करी ज्ञानभक्तिथी पुण्योपार्जन करनारा पुण्यशालीओनो पण आ स्थळे अमो आभार मानीए छीए ॐ शांति —

शाह खूबचंद पानाचंद

वना ।

विक्रम सवत् १९९६ मां पूज्यपाद परम शासन प्रभावक व्याख्यातृ चूडामणि परम गुरुदेव उपाध्यायजी श्रीमद् जंबूविजयजी महाराज साहेबने मे प्रस्तुत ग्रन्थना सम्पादन माटे इच्छा दर्शावी. तेओश्रीए सम्मति आपी. मारा जीवनमां कोई पण पुस्तकनु सम्पादनकार्य नहि करेल होवाथी मन सहज आनाकानी पण करवा लाग्यु, पण प्रवर्तक श्री १००८ श्रीकान्तिविजयजी महाराजना शिष्य-प्रशिष्य पं० श्रीचतुरविजयजी तथा साक्षरवर्य मुनि श्रीपुण्यविजयजी पासे आठ वर्षथी सशोधनपद्धतिनु निरीक्षण करेल होवाथी आ ग्रन्थना सम्पादन माटे मने हाम थई। वेशक ते हाममां पूज्य श्री उपाध्यायजी महाराजना आशीर्वाद साथे उपर्युक्त मुनियुगलनी हुफ पण पायारूप हती।

सित्तरी—प्रस्तुत प्रकरणनां सित्तरी सतरी सयरी सत्तरी सत्तरिया सयरिया तथा सप्ततिका ए प्रमाणे एकार्थिक नामो मळे छे। आ प्रकरण सीत्तेर गाथाओथी सूत्रित होवाथी तेनो सित्तरी एवो नामनिर्देश प्राचीनकाळथी थतो आव्यो छे। आज रीते बीजा केटलाय ग्रन्थो तेमनी पद्यसख्या उपरथी नामांकित थयेला छे[1]। एक समय एवो पण हतो के ज्यारे ते ते ग्रन्थोना पद्यसख्या-

---

१ "आना उदाहरण तरीके आचार्य शिवशर्मकृत शतक, आचार्य सिद्धसेनकृत द्वात्रिंशिकाप्रकरण, आचार्य हरिभद्रकृत पञ्चाशकप्रकरण, विंशतिविंशतिकाप्रकरण, षोडशकप्रकरण, अष्टकप्रकरण, आचार्य जिनवल्लभकृत षडशीतिप्रकरण आदि अनेकानेक प्राचीनतम जैनाचार्यकृत ग्रन्थोना नामोनो निर्देश करी शकाय तेम छे।" (कर्मग्रन्थद्वितीयविभागनो प्रस्तावनामाथी)

सूचक नामनी आगळ ते ते ग्रन्थोनो विषय दर्शावी ग्रन्थनु नाम स्थापित थतु । दाखला तरीके दमणमत्तरी कालसत्तरी यात्रा सप्ततिका विचारषट्त्रिंशिका गुरुगुणषट्त्रिंशिका परमसुखपञ्चविंशतिका विगेरे विगेरे । आ सबधमा एम कल्पना करी शकाय के सप्ततिका षट्त्रिंशिका पचविंशतिका आदि ग्रन्थो तेटली ज पद्यसख्यावाळा अन्य ग्रन्थोना अस्तित्वमां तेना विशेष ज्ञान माटे एटले सेळभेळ थवाना भयथी निश्चयात्मक ओळखाण माटे पोतानो अभ्रान्त नामनिर्देश मागी ले । अने तेथी ज पाछळथी रचा येला सित्तेर पद्यमय आदि ग्रन्थोने पूर्वाचार्योए विशेष नामथी विभूषित कर्या छे । आ उपरथी एम कहेवामा जरा य हरकत नथी जणाती के प्रस्तुत प्रकरणना रचनाकाल समये तेवु एके य सित्तेर पद्यमय प्रकरण नहिं होय, जेथी आ प्रकरणनु सित्तरी एवु सामान्य नाम प्रसिद्ध थयु हशे ।

गाथासख्या—आ प्रकरणनी गाथासख्याना निर्णयमा आजसुधी बहु ज विसवाद रह्यो छे । प्राचीनमा प्राचीन ताडपत्रीय प्रतिओमा पण गाथाओनी सख्या एक बीजीथी विषम ज मळी आवे छे । आ वस्तुनु स्पष्टीकरण पू पा मुनिमहाराज श्रीचतुरविजयजीसपादित कर्मग्रन्थ द्वितीय विभागनी प्रस्तावनामा पू पा विद्वद्वर्य मुनि श्रीपुण्यविजयजीए कयु छे, छता अमने अमारा प्रस्तुत प्रकाशनमां ए वस्तुने वधारे विशद करवानी आवश्यकता जणाय छे । कर्मग्रन्थ द्वितीय विभागमा सित्तरि प्रकरणनी ७२ गाथाओ मूलगाथा तरीके स्वीकारी छे अने तेने लगती विस्तृत छणावट प्रस्तावनामा करी छे, परतु अमोए आ प्रकाशनमां सित्तरीनी ७१ गाथाओ ज मूल गाथा तरीके मानी छे । तेनु कारण ए छे के—उपर्युक्त कर्मग्रन्थ द्वितीय विभागमां चउ पणुवीसा सोलस० (गा० २५) ए गाथाने तेना सम्पादकश्रीए मूलगाथा तरीके मानी लीधी छे परतु ए गाथाने चूर्णिकारे

" पाढंतरं " लखीने पाठान्तर गाथा तरीके निर्देशी छे, एटले चउ पणुवीसा सोलस० गाथा मूलनी नथी ए माटे चूर्णिकारनो सचोट पुरावो होवाथी सित्तरीप्रकरणनी ७१ गाथाओ घटित थाय छे । आद्य गाथाने मंगलगाथा तरीके समजवाथी सित्तरीनी सित्तेर गाथाओ बराबर थई जाय छे ।

विषय—प्रस्तुत प्रकरण खास अभ्यासनो ग्रंथ होईने टीका, टबा तथा विवेचन साथे अनेक वार मुद्रित थई चूक्युं छे, अने तेथी ज तेने लगतु तज्ज्ञोए लखेल होवाथी अमोए ग्रन्थना विषय माटे विषयानुक्रमणिका जोवानी भलामण सिवाय कशुं य लख्यु नथी ।

सित्तरीकार—पू. पा. मुनिश्री पुण्यविजयजीए कर्मग्रंथ द्वितीयविभागनी प्रस्तावनामां सित्तरीना कर्ता सबधी विस्तृत विवेचन कर्युं छे जे अमोए आवश्यक समजी अक्षरशः नीचे आप्यु छे—

" सप्ततिकाप्रकरणकारने लगतो प्रश्न विवादग्रस्त छे । सामान्य प्रचलित मान्यता एवी छे के एना प्रणेता श्री चन्द्रर्षिमहत्तर छे, अने आ रूढ मान्यताने अनुसरवा खातर पूज्य गुरुवर श्री चतुरविजयजी महाराजश्रीए पण कर्मग्रन्थना प्रथम विभागनी प्रस्तावनामां अने आ विभागमां सप्ततिकाना शिर्षकमां " श्रीचन्द्रर्षिमहत्तरविरचित " एम जणाव्युं छे, परतु विचार करता आ रूढ मान्यताना मूळमां कोई पण आधार जडतो नथी ।

सप्तविका प्रकरण मूलनी प्राचीन ताडपत्रीय प्रतोमा चन्द्रर्षिमहत्तरनामगर्भित जे " गाहग्गं सयरीए० " (आ गाथा अमे

---

१ संशोधनमा उपर्युक्त कां२ प्रतिमा ते गाथा उपर अन्यकर्तृका चेयं गाथा एवो पाठ पण छे। (जुओ पत्र २० पृष्ठि १ टिप्पणी ८ मी)

उपर लखी आव्या छीए) जोवामा आवे छे ए पण आपणने सत्तरिना प्रणेता चन्द्रर्षि महत्तर होवा मादेनी साक्षी आपती नथी। ए गाथा तो एटलु ज जणावे छे के—" चन्द्रर्षि महत्तरना मतने अनुसरती टीकाना आधारे सत्तरिनी गाथा (७० ने बदले वधीने) नव्यासी थई छे "। आ उल्लेखमां सित्तरिप्रकरणनी गाथामा वधारो केम थयो एनु कारण ज मात्र सूचववामा आव्यु छे, पण एना कर्ता विषे एथी कशो य प्रकाश पडतो नथी। आचार्य श्रीमलयगिरि पण टीकानी शरुआतमा के अंतमां ए माटे कशु य जणावता नथी। एटले आ रीते सित्तरिना प्रणेता अंगेनो प्रश्न अणउकल्यो ज रहे छे।

सित्तरिप्रकरण चन्द्रर्षिमहत्तरप्रणीत होवानी मान्यता अमने तो भ्रममूलक ज लागे छे अने ए तेना अंतनी " गाहग्ग सयरीए० " गाथामां आवता चन्द्रर्षिमहत्तर ए नामश्रवण मात्रमांथी ज जन्म पामेल छे अने टबाकारे करेला असम्बद्ध अर्थथी ए भ्रममा उमेरो थयो छे।

खरु जोतां चन्द्रर्षि महत्तराचार्ये पचसग्रह ग्रन्थनी रचना करी छे तेमा सग्रह करेला अथवा समावेला शतक, सप्ततिका, कषायप्राभृत, सत्कर्म अने कर्मप्रकृति ए पांचे ग्रथो चन्द्रर्षि महत्तरना पहेला थई गएल आचार्योनी कृतिरूप होई प्राचीन ज छे।

---

१ "गाहग्ग सयरीए गाथानो अर्थ टबाकारे आ प्रमाणे कर्यो छे— चन्द्रमहत्तरना मतने अनुसरवावाळी सित्तेर गाथावडे आ ग्रन्थ रचायेल छे। तेमा टीकाकारे रचेली नवी गाथाओ उमेरता नेव्याशी थाय छे ॥ ९१ ॥

विवेचन—ए सप्ततिकाग्रन्थकर्ता चन्द्रमहत्तर आचार्ये तो पूर्वे सित्तर ज गाथा करी हती' इत्यादि। (श्रेयस्करमडळनी आवृत्ति)

२ "सयगाइ पच गथा जहारिह जेण एत्थ सखित्ता। दाराणि पच अहवा तेण जहत्थाभिहाणमिण ॥ २ ॥ पचसग्रह"। पचाना शतक-सप्त

अत्यारनी रूढ मान्यता मुजब खरेखर जो सप्ततिकाकार अने पंचसंग्रहकार आचार्य एक ज होत तो भाष्यकार चूर्णिकार आदि प्राचीन ग्रन्थकारोना ग्रन्थोमां जेम शतक सप्ततिका कर्मप्रकृति आदि ग्रन्थोना नामनो साक्षी तरीके उल्लेख मळे छे तेम पंचसंग्रह जेवा प्रासादभूत ग्रन्थना नामनो उल्लेख पण जरूर मळवो जोईतो हतो, परतु एवो उल्लेख क्याय जोवामां नथी आवतो ए एक सूचक वस्तु छे, अने आ उपरथी आपणे ए अनुमान करी शकीए छीए के 'सप्ततिकाना प्रणेता पंचसंग्रहकार करतां कोई जुदा ज आचार्य छे के जेमनु नाम आपणे जाणता नथी, अने ते प्राचीनतम आचार्य छे'।

सप्ततिकानो रचनाकाळ—भगवान् श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमणे तेमना विशेषणवती ग्रन्थमां सित्तरी कर्मग्रन्थमां आवता विषयने अगे चर्चा करी छे त्या सित्तरिप्रकरणना नामनो उल्लेख कर्यो छे एटले आ प्रकरण महाभाष्यकार श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमणना काळ पहेलां रचाई चूक्यु हतु ए निर्विवाद हकीकत छे। भगवान् श्रीजिनभद्रगणिनो समय विक्रमनी सातमी सदीनो गणाय छे, एटले ए पूर्वे आ प्रकरण रचायुं हतुं एम मानवामां कशी हरकत नथी।

अहीं साथे साथे ए वात ध्यानमां रहे के महत्तर पद अने गर्गर्षि सिद्धर्षि पार्श्वर्षि चन्द्रर्षि आदि जेवां ऋषिपदान्त नामो

तिका-कषायप्राभृत सत्कर्म कर्मप्रकृतिलक्षणाना ग्रन्थानाम्, अथवा पञ्चानामर्थाधिकाराणा योगोपयोगमार्गणा-बन्धक-बन्द्धव्य बन्धहेतु-बन्धविधिलक्षणाना सङ्ग्रह पञ्चसङ्ग्रह ।" (पञ्चसंग्रह गाथा १ मलयगिरिटीका)

१ "सयरीए मोहबधट्ठाणा पंचादओ कया पंच । अनियट्टिणो छलुत्ता, णवादओदीरणापगए ॥ ९० ॥ सयरीए दो विगप्पा, सम्मामिच्छ समोहबंधम्मि । भणिया उईरणाए, चत्तारि कहण्णु होज्जाहि ? ॥ ९१ ॥" इत्यादिका गाथा ।

सामान्य रीते पाछला जमानानां होई सित्तरि प्रकरणनी रचनानो समय अने चन्द्रर्षिमहत्तर ए नामनो संबध पण विषमताभर्यो छे । ए कारणसर पण सित्तरिना प्रणेता चन्द्रर्षिमहत्तर ठरता नथी ।

सित्तरिप्रकरणकार विषे आ करता विशेष अमे अत्यारे कशु ज कही शकता नथी । ”

आ उपरात ‘ चन्द्रर्षिमहत्तर सित्तरिना प्रणेता नथी ’ ए विषेनो सबळ पुरावो श्रीचन्द्रर्षिमहत्तरना पोताना ज शब्दोमा मळी आवे छे—“ एवमेकादश भङ्गाः सप्ततिकाकारमतेन । ” (जुओ पत्र–७ पृष्ठि २ नी टिप्पणी) । सप्ततिकाना निर्माताना संबंधमा जेम टबाकारे भ्रम पेदा कर्यो छे ते ज रीते अवचूरीकार आदिए पण भ्रमित अर्थ लखीने आ वस्तुमां गुंचवण ऊभी करेली छे ।

ज्या सुधी विशेष साधनसामग्री प्राप्त न थाय त्या सुधी सित्तरीप्रकरणना प्रणेता संबंधी विशेष खुलासो थवो मुश्केल छे । अत्यारे तो फक्त एटलु ज सिद्ध थयु के चन्द्रर्षिमहत्तर करता पूर्वकालीन कोई आचार्य सित्तरिप्रकरणना निर्माता छे ।

सित्तरीचुण्णी—चूर्णिग्रन्थोनु महत्त्व अति घणु छे । जो ए ग्रन्थो न होत तो टीकाग्रन्थोनी रचना मुश्केलीभरी बनत, अथवा जेवी अने जेटली ए रचना विशद थई शकी छे तेवी ए न बनी शकत ए वस्तु आपणे अनेक टीकाकार आचार्योए पोताना ग्रन्थनी आदिमा अंतमां, तेम ज कोई कोई वार मध्यमा नोंधेल चूर्णिग्रन्थोना उपकारित्व अने प्राधान्य उपरथी सहेजे समजी शकीए छीए । आचार्य श्रीमलयगिरिजीए पण सप्ततिकाटीकानी आदि, मध्य अने अंतमा चूर्णिनो उपकार अने तेने ज अनुसरीने टीकारचना थई शकी छे तेवु स्पष्ट जणाव्यु छे । टीकानी आदिमा श्रीमलयगिरिजीए “चूर्णयो नावगम्यन्ते, सप्ततेर्मन्दबु-

---

१ अहर्निशं चूर्णिविचारयोगाद् मन्दोऽपि शक्तो विवृतिं विधातुम् । सप्ततिकाटीकानी आदिमा । ‘परं चूर्णिकृता तद् नात्र विवक्षितमित्य

द्धिभिः" एम लखीने चूर्णिग्रन्थो माटे बहुवचननो उपयोग कर्यो छे ते उपरथी सप्ततिकाप्रकरण उपर प्रस्तुत प्रसिद्ध कराता चूर्णिग्रन्थ उपरात बीजा पण चूर्णिग्रन्थो होवा जोईए एम मानवाने कारण छे परंतु हजु सुधी आ चूर्णिग्रन्थ सिवाय बीजी कोई चूर्णी अमारा जोवामां आवी नथी । आचार्य श्रीमलयगिरिजीए जे चूर्णिना आधारे टीका रची छे ते चूर्णि प्रस्तुत चूर्णि ज छे ए वस्तु टीकामा प्रमाण तरीके नोंधेला चूर्णिना पाठो उपरथी जाणी शकाय छे ।

चूर्णिनी भाषा—चूर्णि ए एक प्रकारनो प्राकृत टीकाग्रन्थ छे । प्राचीनकाळमां जैनसंस्कृतिमां प्राकृत भाषाने मौलिकस्थान होई तेनी प्रत्येक कृतिओ–पछी ते सूत्र हो, निर्युक्ति हो, भाष्य हो के गमे ते हो–प्राकृतभाषामा ज गूंथवामां आवती हती । ए ज नियमने अनुसरी चूर्णिग्रन्थोनी रचना पण प्राकृतभाषामां अथवा प्राकृतबहुलभाषामां करवामा आवती हती । प्रस्तुत सप्ततिका-चूर्णी पण ए नियमना अपवादरूप न होई एनी रचना पण प्राकृतप्रधान भाषामां ज थएली छे ।

चूर्णिकार—सप्ततिकाचूर्णिकारे चूर्णिमां पोतानो नामोल्लेख कोई पण स्थळे कर्यो नथी । तेम ज आ विषे आचार्य श्रीमलयगिरिजी पण सित्तरिनी टीकामां " चूर्णिकृत्–चूर्णिकार " सिवाय विशेष कशुं य लखता नथी । एटले अमे पण चूर्णिकार कोण ? ए विषे कशुं ज कही शकता नथी.

आत्मानदसभा प्रकाशित कर्मग्रन्थ प्रथम विभागना परिशिष्टमां श्वेतांबरीय कर्मसाहित्यविषयक ग्रन्थोनी नोंधमां सप्ततिका उपर चूर्णि

स्माभिरपि न विवक्षितम्, एवमुत्तरत्रापि चूर्णिकारमार्गानुसरण परिभावनीयम् ।" (गाथा ४७ मीनी टीकामा) । " यैरेषा विषमार्था, सप्ततिका सुस्फुटीकृता सम्यक् । अनुपकृतपरोपकृतश्चूर्णिकृतस्तान् नमस्कुर्वे ॥" (सप्ततिकाटीकाना अंतमा) ।

तथा श्रीचन्द्रर्पिमहत्तरकृत प्राकृतटीका नोंधी छे। ते बे ग्रन्थो पैकी आ ग्रन्थ चूर्णि छे, चन्द्रर्पिमहत्तरकृत प्राकृतटीका नथी, कारण के एक स्थळे चूर्णिकारे चन्द्रर्पिमहत्तरना मतथी विरुद्ध प्रतिपादन कर्युं छे एटले आ चूर्णिना कर्ता चन्द्रर्पिमहत्तर नथी ए निर्विवाद वात छे।

चूर्णिग्रन्थनो रचनासमय—शतकबृहच्चूर्णि अने शतकलघुचूर्णि पछी सप्ततिकाचूर्णी रचाई हशे ए हकीकत चूर्णिमां आवता निम्न लिखित पाठोथी समजी शकाय तेम छे—" एयासिं अत्थविवरणा जहा सयगे " (पत्र ३ पृष्ठि १), " जीवट्ठाणाण विवरणा जहा सयगे " (पत्र ४ पृष्ठि १), " एएसिं विवरण जहा सयगे " (पत्र ४ पृष्ठि २) " एएसिं भेओ सरूवनिरूवणा य जहा सयगे " (पत्र ५ पृष्ठि २) " भेओ य अत्थनिरूवण च जहा सयगे " (पत्र ९ पृष्ठि २) " एएसिं विवरणा भेओ य जहा सयगे तहा भाणियव्वो " (पत्र १७ पृष्ठि १)।

शतकबृहच्चूर्णि अत्यारे लभ्य नथी। जे चूर्णि मुद्रित थई छे ते शतकलघुचूर्णि छे, कारण के शतक गाथा ३५ मीना भाष्य तथा टीकामां लघुचूर्णि तथा बृहच्चूर्णिना मतांतरोनी जे एकी साथे नोंध भाष्यकार श्रीमान् चक्रेश्वरसूरि तथा टीकाकार मलधारीय श्रीहेमचन्द्रसूरिजीए लीधी छे ते पैकी लघुचूर्णि तरीकेनो अभिप्राय मुद्रित चूर्णिमां मळे छे, तेम ज आचार्य श्रीमलयगिरिजीए पञ्चसंग्रहटीकामां तथा सप्ततिकाटीकामां जे शतकबृहच्चूर्णिना पाठो प्रमाण तरीके नोंध्या छे ते पाठो मुद्रित शतकचूर्णिमां नथी मळता। शतकबृहच्चूर्णि ए जुदो ज ग्रन्थ छे जे अत्यार सुधी मळी शक्यो नथी। शतकबृहच्चूर्णिना रचयिता कोण हता ?

---

१ एत्थ भण्णे अण्णारिसं पढंति—खवग-खीणकसायाण निद्दा-पयलाण उदओ अत्थि' त्ति त न घडइ कारण पुव्वुत्त। (पत्र ७ पृष्ठि १–२ विशेष हकीकत माटे आ पाठ उपर अमारी टिप्पणी जुओ)

तेनी रचना क्यारे थई ? तथा तेनुं ग्रन्थप्रमाण केटलु ? इत्यादि बाबतोनी कशी य माहिती मळती नथी । परतु शतकलघुचूर्णिना कर्ता श्रीचन्द्रर्षिमहत्तर छे । ए विषेनो उल्लेख खभात–श्रीशान्तिनाथजी ताडपत्रीय भडारनी प्रतिना अंतमा मळता नीचेना उल्लेखने आधारे जाणी शकाय छे—" कृतिराचार्य श्रीचंद्रमहत्तरशिताबरस्य। शतकस्य ग्रंथस्य। प्रशस्तच् . . ..। दि ६ शनौ लिखितेति || छ || " आ वस्तु अति अपूर्व होवाथी ते प्रतिना अंतिम पत्रार्धनो ब्लोक पण अमे आप्यो छे (जुओ प्रतिकृति–२)। श्रीमत् चन्द्रमहत्तराचार्यना समय निर्णय माटे अमने साधनो मळयां नथी ।

प्रस्तुत चूर्णि शतकलघुचूर्णि पछीज रचाई होय तो श्रीचन्द्रर्षिमहत्तर पछीनो तेनो रचनाकाळ ठरे । सप्ततिकाभाष्यना प्रणेता नवांगीवृत्तिकार श्रीअभयदेवसूरिना पूर्वे प्रस्तुत चूर्णिनु निर्माण थई चूक्यु हेतु ।

सप्ततिका अन्तर्भाष्य—मूलग्रन्थमा आ भाष्यनी गाथाओ अंतर्गत करवाथी ज मूलग्रन्थनी अभिधेयपरपरा सचवाती होवाथी आ भाष्यने अन्तर्भाष्य कहेवामां आवतुं हशे । सप्ततिकाप्रकरणनी दरेक गाथानी व्याख्या रूपे आ भाष्य नथी, पण मूलग्रन्थमा जे

---

१ शतकलघुचूर्णिना कर्ता सबधी आज पर्यंत क्यारे य कशु प्रमाण नहोतु मळ्यु । विक्रम संवत् १९९७ मा श्रीमोहनलाल दीपचद चोकसी-(खभातनिवासी ए खभातना भंडारनी केटलीएक प्रतिओना मो-माथा वगरना अस्तव्यस्त सेळभेळ थयेला, चोंटेला तथा त्रूटेला ताडपत्रोनो जथ्थो साक्षरवर्य श्रीपुण्यविजयजी महाराज उपर मोकली आप्यो हतो । तेमाथी अतिपरिश्रम वेठा घणा ग्रन्थो तेओश्रीए जूदा पाडता शतकलघुचूर्णिना पत्रो मेळवी छेल्ला पानानो अर्धभाग पण मेळवेलो, जेथी शतकलघुचूर्णिकारना निर्णयनो सुयश तेओश्रीने वर छे ।

२ ' नमिऊण महावीर, कम्मप्परूवण करिस्सामि । वधोदय-सतेहि सत्तरियाचुन्निअणुसारा ॥" (सप्ततिकाभाष्यगाथा १)

स्थळे अर्थानुसंधाननी अपूर्णता जणाय ते स्थळे चूर्णिकारे, तेमने अनुसरता टीकाकार आचार्य श्रीमलयगिरिजीए तेम ज मसप्ततिकाप्रकरणनी मूलप्रतिओना विद्वान् लेखकोए लखेली आ भाष्यनी गाथाओ दृष्टिगोचर थाय छे। चूर्णि तेम ज सप्ततिका-टीकामां अन्तर्भाष्यगाथा तरीके नोंधेली गाथाओ सिवाय चूर्णिमां आवती गाथाओ अन्तर्भाष्यगाथाओ हशे के केम ? ते माटे निर्णय थई शके तेम नथी। चूर्णिकारे तथा टीकाकारे नोंधेली अन्तर्भाष्यगाथाओ कुल १० छे।

गमे तेम हो, प्रस्तुतग्रन्थना अंतमां भाष्य चूर्णिनी समाप्ति बतावी छे तेथी अन्तर्भाष्य संपूर्णपणे आ ग्रन्थमां समाविष्ट होवानुं कल्पी शकाय तेम छे।

संशोधन—(१) मूळ तथा चूर्णिग्रन्थनी प्रतिओमां केटलेक स्थळे अनुस्वारने बदले परसवर्णो होवाथी प्रस्तुत मुद्रणमां तेमने जेमना तेम कायम राख्या छे। (२) प्राकृतव्याकरणना वैकल्पिक नियमवाळा पाठभेदोने मात्र उदाहरण पूरता नोंधी बीजा बधाने छोडी दीधा छे। (३) चूर्णिप्रतिओमां जे जे पाठो खंडित लाग्या ते ते पाठो अमे [ ] आवा कोष्टकनी अंदर उमेरीने मूक्या छे, दाखला तरीके "सम्मामिच्छदिट्ठि [मिच्छदिट्ठि]णो" पत्र २८ पृष्ठि २। (४) चूर्णिमां जे पाठो अशुद्ध होय ते पाठोने कायम राखी तेनी साथे तेना ते स्थानमां घटता शुद्ध पाठोने अमे ( ) आवा कोष्टकनी वचमां राखेल छे, दाखला तरीके "अणायजा(एज्जा)" पत्र २२ पृष्ठि २ टिप्पणी २।

संशोधनमां उपयुक्त प्रतिओ

प्रस्तुत ग्रन्थना संशोधनमां अमे ६ प्रतिओनो उपयोग कर्यो छे। ते पैकी त्रण प्रतिओ मूलग्रन्थनी छे, अने त्रण चूर्णिग्रन्थनी

છે। ખે૧, ખે૨ અને ખે૩ સંજ્ઞક પ્રતિઓ મૂલગ્રન્થની છે। સં, કાં૧ અને કાં૨ સંજ્ઞક પ્રતિઓ ચૂર્ણિગ્રન્થની છે। તે પ્રતિઓનો પરિચય આ નીચે આપીએ છીએ।

૧-૨-૩ ખે૧ ખે૨ અને ખે૩ સંજ્ઞક પ્રતિઓ—આ ત્રણે ય પ્રતિઓ પાટણ ખેતરવસહિના પાડાના ભંડારની છે. તે ભંડાર હાલમાં શ્રીજેસીંગલાલ ભગવાનભાઈ ઝવેરીની દેખરેખમાં છે। ત્રણે ય પ્રતિઓ નાના નાના પ્રકરણોના સંગ્રહરૂપે લખાયેલી તાડપત્રીય પોથીઓની અંતર્ગત થએલી છે। શુદ્ધિ ત્રણે ય પ્રતિઓની ઠીક ઠીક છે। દરેક પ્રતિના પ્રત્યેક પત્રની પૂઠિ દીઠ ૩ અથવા ૪ પંક્તિઓ છે।

ખે૧ પ્રતિ ૧૯ પત્રોમાં લખાયેલી છે। તેની ગાથાસંખ્યા ૯૧ છે। પ્રતિની લિપિ સારી અને હાલત મધ્યમ છે। પ્રસ્તુત મુદ્રણમાં આ પ્રતિને ખાસ બાધક કારણ સિવાય મૂલમાં રાખી છે। તેની લંબાઈ-પહોળાઈ ૧૫×૨ ઇંચ પ્રમાણ છે। પ્રતિના અંતમાં કશો ય ઉલ્લેખ નથી।

ખે૨ પ્રતિ દશ પત્રોમાં લખાયેલી છે। તેની ગાથાસંખ્યા ૯૨ છે। લિપિ સારી, સ્થિતિ મધ્યમ છે। સમસ્ત પોથીના અંતમાં "સંવત્ [૧૨]૭૮ વર્ષે માઘ વદિ ૪ ભૌમે" આવી ટૂંકી પુષ્પિકા મળે છે।

ખે૩ પ્રતિ ૯૩ ગાથાપ્રમાણ છે। લિપિ સારી અને સ્થિતિ મધ્યમ છે। પોથીની લંબાઈ-પહોળાઈ ૧૪×૧$\frac{3}{4}$ ઇંચ પ્રમાણ છે। અંતમાં કશો ય ઉલ્લેખ નથી।

૪ સં સંજ્ઞક પ્રતિ—આ પ્રતિ પાટણ-શ્રીસંઘના ભંડારની છે। આ ભંડાર શ્રીહેમચન્દ્રાચાર્ય જૈન જ્ઞાનમંદિરમાં સુરક્ષિત છે। તેની દેખરેખ પાટણ શ્રીસંઘે નિયત કરેલા જ્ઞાનમંદિરના વહીવટકર્તાઓની કમીટી રાખે છે। આ પ્રતિ અતિ પ્રાચીન છે। તાડપત્રીય

प्रतिनी लिपिनो ख्याल आवे ते माटे अमे
प्रतिओमां जे विषमाक्षरी प्रतिओ होय छे तेमां आ प्रतिनी गणना थई शके तेम छे। सामान्य ताडपत्रीय प्रतिओ करतां आ
प्रतिना ६९ मा तथा ८२ मा पत्रनी एक एक पृष्ठिनो ब्लॉक आप्यो छे (जुओ प्रतिकृति १)। आ ज कारणसर आ प्रतिने अमे अमारा
प्रति विषमाक्षरवाळी होवा छतां एनी लिपिनी स्पष्टता तथा शुद्धि अत्युत्तम छे। आ प्रति विना अमारु आ संपादन
प्रस्तुत संपादनमां मुख्यत्वे करीने खास बाधक कारण सिवाय प्रमाणभूत राखेल छे। अने अतना वे त्रण पत्रो नथी, तेथी ग्रन्थसमाप्तिमां
दुष्कर बनत। प्रतिनां शरुआतना पांच पानाना नाना मोटा टूकडा मात्र छे, दरेक पत्रनी प्रत्येक पृष्ठिमां पांचथी
लखाती लेखकादिनी पुष्पिका वगेरे अमे आपी शकता नथी। आ प्रतिना ११७ पत्रो छे, प्रतिनी लंबाई-पहोळाई १२×२ इंच प्रमाण छे। लेखन
आठ सुधी ओळीओ छे, दरेक पंक्तिमां ४५ थी ५१ सुधी अक्षरो छे। प्रतिनी स्थिति सामान्य रीते ठीक गणाय।
समय संभवतः विक्रमनो ११ मो शतक होय तेम लागे छे। प्रवर्तक श्रीमान् कान्तिविजयजी महाराजना वडोदराना ज्ञान

५-६ कां१ कां२ संज्ञक प्रतिओ—आ बन्ने प्रतिओ पू. पा. प्रवर्तक श्रीमान् कान्तिविजयजी महाराजना वडोदराना ज्ञान
भंडारनी छे। आ भंडार हालमां श्री चदुलाल पुरुषोत्तमदास झवेरीनी देखरेखमां सुरक्षित छे।

कां१ प्रति—आ प्रति ताडपत्र उपर लखाएली छे। अनुमानथी विक्रमना तेरमा शतकमां लखाएली लागे छे। प्रतिना पत्र
९६ छे, वचमां अंतरे अंतरे २७ पत्रो नथी तेम अंतमां पण २५ थी ३० पत्रोनुं लखाण त्रूटे छे। एकदरे आ प्रति अति त्रूटित
प्रति कहेवाय। संशोधनमां आ प्रति ठीक ठीक मददगार थई छे, एकदरे शुद्धि पण ठीक छे। प्रतिनी हालत जीर्ण छे। तेनी

लंबाई–पहोळाई १७×२ इंच प्रमाण छे । दरेक पत्रनी पृष्ठि दीठ ओछामा ओछी ३ अने वधारेमा वधारे ६ पंक्तिओ छे, प्रत्येक पंक्तिमा ६५ थी ७० अक्षरो छे ।

कां२ प्रति—आ प्रति पू. पा. प्रवर्तक श्रीमान् कान्तिविजयजी महाराजश्रीए अमदावाद डहेलाना भंडारनी प्रति उपरथी लखावी छे । आ प्रतिना अभावे प्रस्तुत सप्ततिकाचूर्णिनु संपादन अधूरु ज रहेत, कारण सं अने कां१ प्रतिओ अंतसुधी पूरी नथी । प्रति अत्यत अशुद्ध छे । प्रति नवी होवाथी तेनी हालत सारी छे । प्रतिनी लंबाई–पहोळाई ११×५ इंच प्रमाण छे । पत्र-सख्या ४९ छे । प्रत्येक पत्रनी एक एक पृष्ठिमां तेर तेर पंक्तिओ छे, दरेक पक्तिमा ५२ थी ६० अक्षरो छे । प्रतिना अंतमा " श्री सत्तरिभास चूरणग्रथसमाप्तमिदं ॥ ग्रंथाग्रथ ॥ " आ प्रमाणे लख्यु छे.

आ ग्रन्थमां तथा प्रस्तावनामां उपयुक्त मुद्रित ग्रन्थोनी माहिती

कर्मग्रन्थ प्रथम विभाग=श्री आत्मानन्द सभा (भावनगर) तरफथी प्रकाशित " सटीकाश्चत्वारः कर्मग्रन्थाः " ।

कर्मग्रन्थ द्वितीय विभाग=श्री आत्मानन्द सभा (भावनगर) तरफथी प्रकाशित " शतकनामा पञ्चमकर्मग्रन्थः तथा सप्ततिका-भिधानः षष्ठः कर्मग्रन्थः " ।

सप्ततिका भाष्य=श्रीनन्मेरुतुङ्गाचार्यविरचित वृत्ति साथे, श्री जैन धर्म प्रसारक सभा (भावनगर) द्वारा प्रकाशित ।

शतकचूर्णि=श्री राजनगरस्थ वीरसमाज द्वारा प्रकाशित " सचूर्णिक शतकप्रकरणम् " ।

बन्ध–शतकप्रकरण=भाष्य तथा वृत्ति सहित, श्री राजनगरस्थ वीरसमाज द्वारा प्रकाशित ।

पञ्चसंग्रह=बे टीका सहित (विभाग बीजो) श्री मुक्ताबाई ज्ञानमंदिर (डभोई) द्वारा प्रकाशित ।

कर्मप्रकृति=चूर्णि तथा टीकाद्वययुक्त, श्री मुक्ताबाई ज्ञानमंदिर (डभोई) द्वारा प्रकाशित ।

कर्मग्रन्थ सार्थ द्वितीय विभाग=श्री जीवविजयजीकृत टबा तथा विवेचन सहित, श्री श्रेयस्कर मंडळ (महेसाणा) तरफथी प्रकाशित (नवी आवृत्ति)

आ ग्रन्थमां अमे जे जे स्थळे "शतक" अथवा "शतकप्रकरण" लख्युं छे ते आचार्य श्रीशिवशर्मकृत बन्धशतकप्रकरण समजवुं ।

ऋणस्वीकार तथा आभार—प्रस्तुत ग्रन्थना प्रण फॉर्म सुधीनी कॉपी तथा प्रुफोनुं निरीक्षण करवा बदल तथा प्रस्तुत ग्रन्थनी प्रणे य हस्तलिखित प्रतिओ मेळववामां प्रयत्न करवा बदल तेम ज स्थळे स्थळे अनेक वार अनेक संदेहोने टाळवा बदल, तेम ज ग्रन्थमां आवता उपशमश्रेणि-क्षपकश्रेणिना स्वरूपने सांगोपांग समजाववा बदल साक्षररत्न पू. पा. मुनिश्रीपुण्यविजयजीनो, तथा आखा य ग्रन्थना प्रुफसंशोधनमां सहायकर्ता, अनेक स्थळे संशोधनने लगता महत्त्वना सूचनोना सूचक, प्रस्तुत ग्रन्थना संपादनमां उत्तेजक परमपूजनीय सुगृहितनामधेय परमगुरुदेव उपाध्यायजी श्रीमद् जंबूविजयजी महाराज साहेबनो, तेम ज जेओए पोताना वहीवट नीचे चालता श्रीमुक्ताबाई ज्ञानमंदिरद्वारा आ ग्रन्थ प्रकाशित करी मने आ क्षेत्रमां प्रथम अनुभव अर्प्यो छे ते श्रीखूबचंदभाईनो पण यथाविधि ऋणस्वीकार करुं छुं ।

जे जे भंडारोना वहीवटकर्ताओए आटला लांबा समय सुधी प्रतिओनो उपयोग करवा माटे धीरज राखी छे तेमनो सप्रेम आभार मानुं छुं ।

क्षमायाचन—आ ग्रन्थना सपादनमा विलब वधारे थयो तेनु एक कारण तो ए छे के मारो आ क्षेत्रमा प्रथम परिश्रम, अने वीजु मारी पत्नी कमळा अने पुत्र जयंतनु अकाळे अवसान थयुं एटले कार्यमां अति शिथिलता आवी, एक तो तेने लीधे तथा अल्पज्ञताने लीधे सशोधनमां रहेली त्रुटीओने क्षम्य गणवा विद्वद्गणने नम्र विनंति करीने प्रस्तावना पूर्ण करुं छुं।

सम्पादनेन यत् किञ्चित्, लेभे सुकृतममृतः । तेन बोधिमवाप्नोतु, तन्माता हरकुंवरी ॥

विजया दशमी
विक्रम० १९९८
वागोळनो पाडो–पाटण

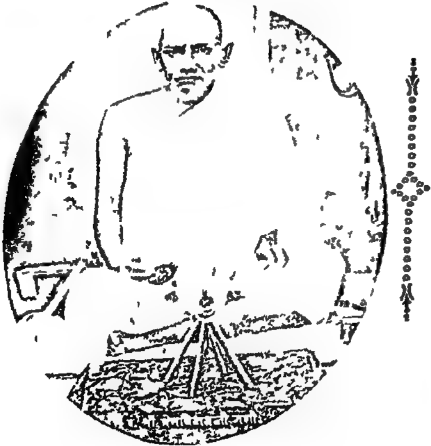
अमृतः



शुद्धिपत्रक

पत्र-पृष्ठि-पङ्क्तयः	अशुद्धम्	शुद्धम्
७-१-८	छवउ	छ वउ
११ २-१४	दियणव	दिय णव
१३-१-३	दोभगा	दो भगा
१३ १ १०	१ । अवघगे	१ अवघगे
२० १ १०	अट्ठुत्तराणि	अट्ठुत्तराणि
२३ १ १४	-ण वण	णवण
३० १ १२	करें ति	करेंति
३०-२-९	एते इस	एते इस (?)
३४-१-७	बघसताणि	बघ-सताणि
३६-१-२	जुगुल	जुगल
३६ २ १२	भगोप मच	भगो पमत्त-
३७ १ १४	ऽपमत्तसु	ऽपमत्तेसु

पत्र-पृष्ठि-पङ्क्तयः	अशुद्धम्	शुद्धम्
४४-१-१	बाणवई	बाणेउई
४४-१ १३	चउ	चउ०
४४-२-९	-थिरा ऽथिरसुभा	थिरा ऽथिर सुभा
४६ १-१२	एकतीस ।	एकतीसा
४७-१-१	अट्ठवीस	अट्ठावीस-
५३ १ ११	तित्थगररहिय	तित्थगरसहिय
५४-२-७	जाए	जोए
५८-२-४	भणियविहीणा	भणियविहिणा
५८-२-४	पगइसब्भावो ' त्ति गइ	पगइसब्भावो ' त्ति जत्थ त्ति-गइ
६७-२-६	दुचरिमव	दुचरिमभव-
६७-२ १०	अजसकित्ति	जस्सकित्ति (घटित सम्भाव्यते)



ग्रन्थ—समर्पण

शासनदिवाकर—सकलागमरहस्यवेदीस्वर्गस्थ—आचार्यदेव श्री १००८ श्री विजयदानसूरि—पट्टप्रभावक—सिद्धान्तमहोदधि—परम पूज्य श्री १००८
श्री गुरुदेव आचार्यश्री विजयप्रेमसूरिवर,

वर्तमान जिनशासनमां विचरता मुनिगणमां कर्मसाहित्यना निष्णात तरीके आपनुं स्थान अजोड छे, एवा निस्पृह विद्वानोना सत्यमतनी साथे मळतो थईने हुं आ कर्म विषयक श्री सित्तरी ग्रन्थनुं मारुं प्रथम संपादन आप कृपाळुना करकमलमां सादर समर्पण करी कृतार्थ थाउं छुं.

लि० नम्र सेवक अमृतनी आप कृपाळुना चरणारविन्दमां
कोटिशः वंदनावली



प्रतिकृति (१)

सप्ततिकाचूर्णि पत्र ६९ मुद्रितपत्र ३९ पृष्ठि २, तथा पत्र ८२ मुद्रित पत्र ४७ पृष्ठि २ (श्रीसंघ भंडार-पाटण)

प्रतिकृति (२)

शतकलघुचूर्णिकार श्रीचन्द्रर्षि महत्तर छे एम सूचवतु शतकलघुचूर्णिनु अन्त्य पत्रार्ध

(श्री शांतिनाथजी भंडार–खंभात)

ॐ णमो कम्मातीताणं जिणाणं ।

णमो सयलागमरहस्सवेईणं सिरिविजयदाणसूरीणं ।

पाईणायरियकयचुण्णिसमेया चिरंतणायरियविरइया

सित्तरी ।



॥ नम सर्वज्ञाय ॥

सिद्धिविबंधणबंधुदय-संतखवणविहिदेसओ सिद्धो । भगवं भवजणगुरू, विक्खायजसो जयइ वीरो ॥

एकारस वि गणहरा, सव्वे वेइगोयरस्स पारगया । सव्वसुयाणं पभवा, सुयकेवलिणो जयंति सया ॥

सुह-दुक्ख-तक्कारणसरूवपरिण्णाणाओ सव्वजीवाणं सोक्खकारणाऽऽयाण-दुक्खकारणपरिच्चागनिमित्तो सव्वदुक्खविमोक्ख-लक्खणो परमसुहलंभो त्ति सुह-दुक्ख-तक्कारणनिद्देसो कायव्वो । दोसोवसमणाओ उत्तरकालं आरोग्गसुहलंभ इव सो सुहो

१ °यति वी° का २ ॥ २ वचोगोचरस्य ॥ ३–आदान–॥

साभाविओ त्ति पढममेव दुक्ख-तक्कारणपरूवण परमरिसओ करेंति त्ति, पच्छा सुहकारण-सुहाण परूवण ति। ताइ च कम्मपगइयातिमहागयेसु भणियाइ। ते य गथा दुरवगाह त्ति काउ कालदोसोपहयमेहा-ऽऽउ-बलाण अज्जकालियाण साहूण अणुग्गहत्थ आयरिएण कय पमाणनिप्पण्णनामय सत्तरि त्ति पगरण। त विवरिस्सामो। तस्स मगला ऽभिधेय-णिद्देस-सबधत्था पढमगाहा—

सिद्धपएहिं महत्थ, बधोदय-सन्तपगइठाणाण। वोच्छ सुण सखेव, नीसद दिट्ठिवायस्स ॥ १ ॥

सिद्धपएहिं महत्थ० गाहा। मगलपरिग्गहियाइ सत्थाइ निप्फत्ति गच्छति, सिस्स-पसिस्सपरपराए पट्ठाहिति चेति सिद्धसद्दो मगलत्थो। महत्थ बधोदय-सताण सखेव वोच्छ ति अभिधेयनिद्देसो। दिट्ठिवायस्स निस्सदो त्ति सबधो। एस पिंडत्थो।

इयाणिं अवयवा विवरिज्जति—'सिद्धपएहिं' ति सिद्धानि—निष्ठां गतानि न खोहिज्जतीत्यर्थ उदाराणि पयाणि जेसु गथेसु ते सिद्धपदा गथा। के ते? भण्णति—कम्मपगतियाइया कतियादिचउवीमाणुओगदारवित्थरा। कम्हा? सवण्णुभणियत्थाणु-सारिचउविहबुद्धिसपन्नगणहरगंहियपाण्पामत्ताओ। तेसिं बधाओ बध उदयाओ उदय सताओ सत कड्ढिऊण 'महत्थ सखेव

१ ण। ता स॥ २ पयडिठा खे २ खे ३ ॥ ३ निस्सद खे २ खे ३ ॥ ४ जे द्रि चउविहा कति स ॥ ५-ग्रथितत्व आमाण्यात् का १ टिप्पणी ॥

वोच्छं' ति संबज्झइ। सिद्धपएहिं ति पंचमीनिद्देसो, सिद्धपदेहिंतो त्ति वुत्तं भवइ। अहवा ससमयसिद्धाणि पयाणि जीवट्ठाण-गुणट्ठाणाणि, तेहिं सिद्धपएहिं ति। आहारस्स[1] करणभावेण विवक्खियत्ताओ तेसु तान्याश्रित्य बंधोदय-संताणि भवंति, भण्णंति त्ति भणियं होति। अहवा सन्ना-परिभासादिपदेहिं[2] तेसु चेव गंथेसु पसिद्धेहिं वोच्छं ति, करणत्थे चेत्र तंयिता[3]। 'महत्थं' ति निपुणं गंभीरं दुरवगाहपयत्थवित्थारविसयं सुहगहण-गुणण-धारणत्थं संखेवं वोच्छं ति संखेवो चेव विसेसिज्जति। नणु संखेवसद्देणेव महत्थो त्ति गम्मतीति चेत्, सच्चमेतं, संखेवसद्दस्स महागंथविसयत्तवहिचाराभावाओ[4]; किंतु मा होज्ज अक्खाणा-ऽऽलावग-संगहणीओ व अप्पत्थो त्ति महत्थगहणं। केसिं महत्थं संखेवं? ति, उच्यते—'बंधोदय-संतपगति-ठाणाणं' तत्थ बंधो त्ति–मिच्छत्तादिसामण्ण-विसेसपच्चयनिमित्तो जीवस्स कम्मपोग्गलाणं च अभेदसंबंधपरिणामो तप्तायः-पिण्डवत्। तस्सेव विवागपत्तस्स अणुभवणं उदओ। बंधसमयप्पभिति जाव अणण्णहाकयं अखवियं वा ताव तमेव संतं वुच्चति। तेसिं बंधोदय-संताणं पगतीउ बंधोदय-संतपगतीउ, पगति त्ति–सभावो, तेसिं ठाणाणि बंधोदय-संतपगतिठाणाणि। उदयग्गहणेण उदीरणा खवणा य गहिया। कहं? उदओ दुविहो—ठिइक्खओदओ पओगोदओ य। तत्थ ठिइक्खओदओ उदओ वुच्चइ, पओगोदओ उदीरण त्ति। इदाणीं उदयग्गहणेण खवणा कहं गहिया? इति चेत्, उच्यते—खीयमाणं सगपगइत्तणेण अण्णपगइत्तणेण वा वेइज्जइ त्ति काउं णीसेसवेओ खओ त्ति, तम्हा उदयग्गहणेण उदीरणा खवणा य गहिया। संतग्गहणेण

---

१ आधारस्य ॥ २ "सञ्ज्ञा च परिभाषा च विधिर्नियम एव च। अतिदेशोऽधिकारश्च षड्विधं सूत्रलक्षणम् ॥" इति लक्षणं ॥ ३ तृतीया ॥ ४ व्यभिचाराभावात् ॥

काउ । एवमेते छ अत्थाहिगारा एयम्मि सत्थे वण्णिज्जंति । उवसामणा गहिया । कह ? संतस्सेव उवसामणा भवति त्ति एगेगपगइबंधोदय-संताण वुदासो । पगइट्ठाणबंधोदय-संताण पगइग्गहणेण ठिति अणुभाग-पएसाण वुदासो, ठाणग्गहणेण मेव गहणं एत्थ मूलुत्तरपगइपविभत्ताणं बंधोदय-संतपगतिठाणाणमेव महत्थं संखेवं 'वोच्छं' भणामि त्ति संबज्झति । 'सुण' त्ति सीसस्स चित्तसमाहाणत्थं सोविंदिओवयोगजणणत्थं च आयरिओ भणइ सुण त्ति । 'संखेवं' ति संखेवो पिंडो समुच्चओ त्ति एगट्ठा । निस्संद 'दिट्ठिवायस्स' त्ति परिकम्म १ सुत्त २ पढमाणुओग ३ पुव्वगय ४ चूलियामय ५ पंचविहमूलभेयस्स दिट्ठिवायस्स, तत्थ चोद्दसण्ह पुव्वाण बीयाओ अग्गेणीयपुव्वाओ, तस्स वि पंचमवत्थूउ, तस्स वि वीसपाहुडपरिमाणस्स कम्मपगडिणामधेज्जं चउत्थं पाहुडं तओ नीणियं, चउवीसाणुओगदारमइयमहण्णवस्सेव एगो बिंदू, तओ वि इमे तिण्णि अत्थाहिगारा नीणिया, तम्हा नीसंदो दिट्ठिवायस्स त्ति भण्णइ । तं नीसंद दिट्ठिवायस्स बंधोदय संतपगइठाणाणं महत्थं संखेवं वोच्छं सुण त्ति संबंधो ॥ १ ॥

आह—भणियं 'बंधुदय-संतपगइठाणाणं संखेवं वोच्छं' ति, किं तं पत्तेगमेव तेसिं संखेवो भण्णइ ? उयाहु संखेवसंखेवो ? त्ति, भण्णइ—न पत्तेयसंखेवो संखेवसंखेवो भणइ त्ति । तदुद्देसत्थं पराकयपदसणोवक्कमं करेमाणो सयमेवाऽऽयरिओ आह भणइ—

कइ बंधतो वेयइ, कइ कइ वा पयडिठाणकम्मंसा । मूलुत्तरपयडीसु, भंगविगप्पा उ बोद्धव्वा ॥ २ ॥

१ संगस अ २ ५ २ वा सन्तपयडिठाणाणि । खे ३ ॥ ३ पडिठाणसतसा । खे २ ॥ ४ डीण, भंग खे २ ॥ ५ प्पा य जो खे ३ ॥

कइ बंधंतो वेयइ कइ० त्ति । कइसद्दो परिमाणपुच्छायां । कइ कम्मपगडीओ बंधमाणो वेएइ कइ कम्मपगडीओ ? 'कइ वा पगइठाणकम्मंसा' इति तस्सेव कति कम्मपगइठाणाइं संतकम्माइं? ति; एयम्मि पगरणे एयं वण्णिज्जइ। वासद्दो तेसिं तिण्हं पि विगप्पदंसणत्थो । एयं संवेधपरूवणं कासु पगईसु संभवंति ? इति चेत्, उच्यते—'मूलुत्तरपगईसुं' ति मूलपगतीओ अट्ठ नाणावरणाई, उत्तरपगईओ अट्ठावण्णं सयं आभिणिबोहियनाणावरणाई । 'भंगवियप्पा उ बोद्धव' त्ति एयासु मूलुत्तरपगईसु बंधोदय-संते पडुच्च बहू भंगा संभवंति त्ति जाणियव्वा ॥ २ ॥

उद्दिट्ठक्कमेणं मूलपगतीणं पगइसमुक्कित्तणा, बंधुदय-संताणं पगतिठाणा य पुव्वं परूविज्जंति, पच्छा तेसिं संवेहो । तत्थ मूलपगती अट्ठविहा, तं जहा—णाणावरणिज्जं जॉवंतरायियमिति। एयासिं अत्थविवरणा जहा सयगे ।

मूलपगडीणं बंधं पडुच्च पगतिठाणाणि चत्तारि, तं जहा—अट्ठविहं सत्तविहं छविहं एक्कविहं ति । सव्वपगईओ जुगवं बंधमाणस्स अट्ठविहं पगइठाणं, तं जहण्णुक्कोसेणं अंतोमुहुत्तकालियं । आउगवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ बंधमाणस्स सत्तविहं, तं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं देसूणाइं अंतोमुहुत्तूणपुव्वकोडीतिभागब्भहियाइं लब्भंति । आउगमोहणिज्जवज्जाइं बंधमाणस्स छविहं, तं जहण्णेण एक्कं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । सत्तण्ह कम्माणं बंधवोच्छेदे जाते एक्कं वेयणिज्जं बंधमाणस्स एगविहं, तं जहण्णेण एगं समयं उक्कोसेण पुव्वकोडी देसूणा ।

---

१ वेयति का २ ॥ २ °णार्ति सं° का १ का २ ॥ ३ °वति उच्य° का २ ॥ ४ जाव अत° का १ का २ ॥ ५ पश्यन्तु शतकप्रकरणस्य ३८–३९ गाथासूत्रे, तच्चूर्णिं च ॥ ६ चत्वारि का २ ॥ ७ षण्मासोनानीत्यर्थ ॥

इयाणिं उदय पडुच्च तिण्णि ठाणाइ, त जहा—अट्ठविह सत्तविह चउविह । अट्ठविहकम्मपगडीओ जुगव वेएमाणस्स अट्ठविह, त कालओ अणादीय वा अपज्जवसिय, अणादीय वा सपज्जवसिय, सादीय वा सपज्जवसिय अभव भवेऽहिकिच । तत्थ ज सादीय सपज्जवसिय त जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण अवड्ढ पोग्गलपरियट्ट देसूण । मोहणिज्जवज्जाओ सत्त कम्म पगडीओ वेदेमाणस्स सत्तविह, त जहण्णेण एगसमइय उक्कोसेण अंतोमुहुत्तिग । घातिकम्मवज्जाओ चत्तारि वेयमाणस्स चउविह, त जहण्णेण अंतोमुहुत्तिग उक्कोसेण पुव्वकोडी देसूणा ।

इयाणि सन्तकम्म पडुच्च तिण्णि पगइठाणाइ, त जहा—अट्ठविह सत्तविह चउविह ति । सव्वकम्मपगडीसमुदओ अट्ठविह सत, त अणाइय वा अपज्जवसिय अणाइय वा सपज्जवसिय अभव भवेऽहिकिच । मोहणिज्जे खीणे सत्तविह, त अजहण्णमणु क्कोसेण अंतोमुहुत्तिग । घाइकम्मक्खए चउविह लब्भइ, त जहण्णेण अंतोमुहुत्तिय उक्कोसेण पुव्वकोडी देसूणा ।

बधुदय-सताण पगइठाणसमुक्कित्तणा कया । इदाणिं सवेहपरूवणत्थ भण्णइ—

अट्ठविह-सत्त-छब्बधगेसु अट्ठेव उदय सतसा । एगविहे तिविगप्पो, एगविगप्पो अबधम्मि ॥ ३ ॥

अट्ठविहसत्तछब्बधएसु० गाहा । 'अट्ठविहसत्तछब्बधगेसु अट्ठेव उदयसतसा' इति जो अट्ठविह वा सत्तविह वा छव्विह वा बधइ तस्स अट्ठविहो उदओ अट्ठविह चेव सत भवति । कम्हा ? अट्ठविह सत्तविह-छव्विहबधगा णियमा सरागिणो, त च

१ °घइपो का १ ॥ २ मतिय को २ ॥ ३-४ °णातिय को २ ॥

अट्ठविह-मत्त-छब्बंधगेसु अट्ठविहा उदय-संता सरागत्तं मोहणिज्जोदयाओ हवइ, उदए सति संतं नियमादेव तदेव, तम्हा
लब्भंति। 'एगविहे तिविगप्पो' त्ति एगविहबंधगम्मि तिण्णि विगप्पा लब्भंति, तं०—एगविहो बंधो मत्तविहो उदओ अट्ठविहं
संतं ति; एयं जस्स मोहणिज्जं सव्वं उवसंतं तं पडुच्च, उवसंतत्ताओ उदओ न होइ संतभावेण अत्थि त्ति, एम पढमो वियप्पो।
एगविहो बंधो सत्तविहो उदओ सत्तविहं संतं ति; एसो जस्स मव्वं मोहणिज्जं खीणं तं पडुच्च, एसं वितिओ। एगविहो बंधो
चउविहो उदओ चउविहं संतं ति; एसो जस्स घाइकम्माणि चत्तारि वि खीणाणि जोगपच्चइओ य बंधो तं पडुच्च, एम तइओ
वियप्पो। 'एगवियप्पो अबंधम्मि' त्ति जोगाभावाओ बंधो नत्थि, तस्म संमारत्थस्म वि अजोगिणो चत्तारि वि अघाति-
कम्माइं उदय-संतत्तणेण अत्थि त्ति, एसो एगो चेव वियप्पो पंचरहस्मक्खरुच्चारणकालपरिमाणो, परओ मिद्धो हवइ ॥ ३ ॥

मूलपगडीओ पडुच्च एए सत्त वियप्पा भणिया। इयाणिं ते चेव विगप्पा जीवट्ठाण-गुणट्ठाणेसु मग्गिज्जंति, केसु ठाणेसु
केत्तिया संभवंति ? त्ति। पुव्वं ताव जीवट्ठाणेसु भण्णइ। तत्थ इमा गाहा—

सत्त-ऽट्ठबंध अट्ठुदय-सन्त तेरससु जीवठाणेसु। एगम्मि पंच भंगा, दो भंगा होंति केवलिणो ॥ ४ ॥

सत्तट्ठबंध अट्ठुदयसंत तेरमसु जीवठाणेसु० त्ति। जीवट्ठाणाणं विवरणा जहा सयगे। सत्तविहो बंधो अट्ठविहो उदओ
अट्ठविहं संतं ति, एसो वियप्पो सन्निपंचिंदियपज्जत्तगवज्जाणं तेरसण्हं जीवट्ठाणाणं आउगबंधकालं मोत्तूणं सव्वकालं लब्भइ;

१ °मा तदे° का १ ग्रा २ ॥ २ °स वीओ। [illegible] ॥ ३ निगण्णो [illegible]

एसो विगप्पो चिरं कालं लब्भइ त्ति काउं अट्ठविहबंधविगप्पाओ पुव्वं भणिओ। अट्ठविहो बंधो अट्ठविहो उदओ अट्ठविहं संतं ति, एसो विगप्पो एएसिं चेव तेरसण्हं जीवट्ठाणाणं आउगबंधकाले अंतोमुहुत्तकालं लब्भइ; एसो थोवकालिओ त्ति काउं पच्छा भणिओ। 'एगम्मि पंच भंगा' त्ति सन्निपंचिंदियपज्जत्तगम्मि मूलिल्ला पंच भंगा भवंति। कहं? सत्त ऽट्ठबंधगाणं भावना पूर्ववद् योज्या। छव्विहो बंधो अट्ठविहो उदओ अट्ठविहं संतं ति, एसो विगप्पो सेढीए वट्टमाणस्स छव्विहबंधगस्स मोहणिज्जस्स बंधे वोच्छिण्णे सुहुमसंपरायस्स लब्भति। एगविहो बंधो सत्तविहो उदओ अट्ठविहं संतं ति, एसो विगप्पो सन्निस्स उवसंतस्स लब्भइ। एगविहो बंधो सत्तविहो उदओ सत्तविहं संतं ति, तस्सेव खीणकसायस्स लब्भइ। 'दो भंगा होंति केवलिणो' त्ति अंतिमा दो भंगा केवलीणं जहक्कमेणं सजोगि अजोगीणं भवंति। केवलिग्गहणं मणोविण्णाणरहिया सण्णिणो ण हुंति त्ति ज्ञापनार्थं ॥ ४ ॥

इदाणिं ते चेव सत्त विगप्पा गुणट्ठाणेसु भंगिज्जंति त्ति तयट्ठा इमा गाहा—

अट्ठसु एगविगप्पो, छस्सु वि गुणसन्निएसु दुविगप्पो। पत्तेयं पत्तेयं, बंधोदय-संतकम्माणं ॥ ५ ॥

अट्ठसु० गाहा। 'अट्ठसु' त्ति गुणट्ठाणाणि चोद्दस, त०—मिच्छादिट्ठिपभिती जाव अजोगि त्ति, एएसिं विवरणं जहा सयगे,

---

१ चिरकालं का १ ॥ २ रागस्स का १। रागस्स का २ ॥ ३ तगस्स कां १ का २ ॥ ४ दृश्यतां शतकप्रकरणस्य नवमं गाथा तच्चूर्णिश्च ॥

अट्ठसु गुणट्ठाणेसु—सम्मामिच्छदिट्ठी अपुव्वकरणादि जाव अजोगिकेवलि त्ति, एएसु ऐक्केको विगप्पो लब्भइ। तत्थ सम्मामिच्छद्दिट्ठी-अपुव्वकरण-अणियट्टीणं सत्तविहो बंधो अट्ठविहो उदओ अट्ठविहं संतं ति एसो एगो भंगो। कहं? आउं-बंधऽज्झवसायरहिया मोहणिज्जस्स य नियमा बंधगा बायरकसायवेयग त्ति काउं। सुहुमसंपरायस्स छव्विहो बंधो अट्ठविहो उदओ अट्ठविहं संतं ति एसो विगप्पो एगो लब्भइ। कहं? बायरकसायाऽभावाओ आउगं मोहं च न बंधइ, सरागो त्ति काउं सेसाणि सव्वाणि बंधइ त्ति। उवसंतकसायस्स एगविहो बंधो सत्तविहो उदओ अट्ठविहं संतं ति एसो विगप्पो एगो लब्भइ। कहं? रागाभावाओ वेयणिज्जवज्जाणं बंधो नत्थि, उवसंतत्ताओ मोहणिज्जस्स उदओ नत्थि, संतभावेण अत्थि त्ति काउं। खीणकसायस्स एगविहो बंधो सत्तविहो उदओ सत्तविहं संतं ति एसो एगविकप्पो लब्भइ। कहं? मोहणिज्जं सव्वहा खीणं ति उदय-संतेहिं नत्थि, सजोगि त्ति वेयणिज्जस्स बंधो अत्थि त्ति काउ। सजोगिकेवलिस्स एगविहो बंधो चउविहो उदओ चउविहं संतं ति एसो एगो विगप्पो लब्भइ। कहं? चउण्हं घाइकम्माणं उदय-संतखएणं केवली भवइ, सरीरसंबं-धाओ चत्तारि वि अघाईणि उदय-संतत्तणेण अत्थि, जोगसहियत्ताओ वेयणिज्जस्स बंधो अत्थि त्ति काउं। अजोगिकेव-लिस्स बंधो नत्थि, चउविहो उदओ चउविहं संतं ति एसो एगो विगप्पो लब्भइ, कहं? जोगाभावाओ बंधो नत्थि, सरीर-संबंधाओ उदय-संता अत्थि त्ति।

'छस्सु वि गुणसन्निएसु दुविगप्पो' त्ति मिच्छद्दिट्ठी-सासायणसम्मद्दिट्ठि-अविरयसम्मद्दिट्ठि-संजयासंजय-पमत्त-अपमत्तसंज-

---

१ एक्को वि° का २॥ २ उस्स बं स का १॥ ३ कातुं। सु° का १॥ ४ °जोगिकेव [illegible]॥

एसु एएसु छसु गुणठांणगेसु दो दो विगप्पा भवति, त०—अट्ठविहो बधो अट्ठविहो उदओ अट्ठविह सत ति, एसो आउयबधकाले सवेसिं लब्भइ । कह ? आउगबधऽज्झवसाणठाणाणि एएसु लब्भति त्ति काउ । सत्तविहो बधो अट्ठविहो उदओ अट्ठविह सत ति, ऐसो बीओ विगप्पो आउगबधकाल मोत्तूण सेस सव्व काल लब्भइ त्ति । कह ? सवे बायरमोहस्स उदये वट्टुति त्ति काउ । 'पचेय पचेय बधोदयसतकम्माण' ति एय पय सवेसिं सामण्ण, पचेय पचेय गुणट्ठाणेसु एक्केको दो दो वा विगप्पा होंति त्ति वुत्त भवइ ॥ ५ ॥

मूलपगडीण बधोदय-सताण सवेहो सामित्त च भणियाणि । इयाणिं उत्तरपगडीण पगइसमुक्कित्तणा बधोदय-सताण ठाणसमुक्कित्तणा सवेहो य अप्पप्पणो ठाणे भण्णिहिति । तत्थ पगइसमुक्कित्तणा नाणावरणाईण, त०—

पच नव दोण्णि अट्ठावीसा चउरो तहेव बायाला । दोण्णि य पच य भणिया पयडीओ आणुपुव्वीए ॥[3] (शतकप्रकरणगाथा ३९) इति ।

एएसिं भेओ सरूवनिरूवणा य जहा सयगे । पगइसमुक्कित्तणा कया । इयाणिं बधोदय सताण ठाणसमुक्कित्तणा, पुव ताव नाणावरणस्स बधट्ठाणाइ तुल्लपगइत्ताओ अंतराइयस्स य जुगव भण्णति[4] । इमा गाहा[5]—

बधोदय-सतसा, नाणावरणतराइए पच । बधोवरमे वि तहा, उद-सत्ता होंति पचेव ॥ ६ ॥

---

१ ट्ठाणेसु का १ ॥ २ स्सो विइओ का १ कां २ ॥ ३ प्राचीनकर्मस्तवे गाथेय दशमी । केनापि विपश्चिता प्रक्षिप्तेय गाथा सर्वेष्वपि मूलसूत्रादर्शेषूपलभ्यते ॥ ४ ण्णाइणो तत्तुल्ल० कां १ का २ ॥ ५ ति । तत्थ इमा का १ कां २ ॥

बंधोदयसंतंसा णाणावरणंतराइए पंच० त्ति । नाणावरणिज्जस्स आभिणि०-सुओहि-मणपज्जव-केवलणाणावरणाणं एयासिं पंचण्हं पगतीणं समुदओ एक्कं चेव बंधाइट्ठाणं। कम्हा ? धुवबंधादित्ताओ। अंतराइयस्स दाण-लाभ-भोगोवभोग-वीरियंतराइगाणं पंचण्हं पगतीणं समुदओ धुवबंधाइत्तादेव । इयाणिं संवेहो—णाणावरणस्स पंचविहं बंधमाणो पंचविहं एगं चेव बंधाइट्ठाण, पंचण्हं पगतीणं समुदओ धुवबंधाइत्तादेव । इयाणिं संवेहो— वेएइ पंचविहं चेव संतं। कथम् ? ध्रुवकत्वात् । एवमंतराइयस्स वि । 'बंधोवरमे वि तहा उदसंता होंति पंचेव' त्ति दोण्ह वि जुगवं पंचण्हं पगईणं बंधवोच्छेए जाए उदय-संता पंचेव भवंति, ध्रुवकत्वादेव । उदओ संतं च जुगवं फिट्टति त्ति काउं अण्णो विगप्पो नत्थि ॥ ६ ॥ इयाणिं दंसणावरणस्स बंधाइट्ठाणा भण्णंति—

बंधस्स य संतस्स य, पगईठाणाणि तिन्नि तुल्लाणि। उदयट्ठाणाणि दुवे, चउ पणगं दंसणावरणे ॥ ७ ॥

बंधस्स य संतस्स य पगईठाणाइं तिण्णि तुल्लाइं० ति । दंसणावरणस्स तिण्णि बंधट्ठाणाणि, तं०—नवविह छव्विहं चउ-व्विहं । तत्थ नवविहं—निद्दानिद्दा पयलापयला थीणद्धी निद्दा पयला चक्खुदंसणावरणीयं अचक्खुदंसणावरणीय ओहिदंस-णावरणीयं केवलदंसणावरणीयमिति, एएसिं नवण्हं कम्माणं समुदओ एगं बंधट्ठाणं । कथम् ? ध्रुवबन्धित्वात् । ततो थीणगि-द्धितिगस्स जुगवं बंधे वोच्छिण्णे सेसाणं छण्हं कम्माणं एगं बंधट्ठाणं । तओ निद्दा-पयलाणं बंधे वोच्छिण्णे सेसाणं चउण्हं कम्माणं एक्कं बंधट्ठाणं । एए चेव संतस्स वि तिण्णि ठाणा—नवण्ह समुदओ एक्कं संतट्ठाण, नवगाओ संताओ थीणगिद्धि-

---

१ °वण्ह कं° का १ का २ ॥

तिगे जुगव खविए छव्विह सत, तओ निद्दा पयलाहिं जुगव खवियाहिं चउविह सतट्ठाण, तेण भण्णइ—'चयस्स य सतस्स य पगईठाणाइ तिण्णि तुल्लाइ'। 'उदयट्ठाणाइ दुवे' त्ति—दसणावरणे दोण्णि उदयट्ठाणाणि। के ते ? भण्णइ—'चउ पणग' त्ति चउन्ह समुदओ पचन्ह वा। तत्थ चत्तारि चक्खुदसण-अचक्खुदसण-ओहि केवलदसणावरणाणि, एएसिं चउण्ह पगडीण समुदओ धुवोदय त्ति काउ एग उदयट्ठाण। एएसु निद्दापणगाण अण्णयरे छूढे पच भवति, एय एक उदयट्ठाण। अण्णो नत्थि विगप्पो। कम्हा ? निद्दापणगाउ दुगाइ जुगव न उदेंति त्ति काउ। निद्दादओ अधुवोदया, कह ? कालाँयिय-वेक्खाओ। 'दसणावरणे' त्ति एयाणि बधोदय-सन्ताण ठाणाणि दसणावरणे जाणियव्वाणि ॥ ७ ॥

इयाणिं सवेहावसरो सो भण्णइ—

बीयावरणे नवबधएसु चउ पच उदय नव सता। छ च्चउ बधे चेव, चउ बधुदए छलसा य ॥ ८ ॥

बीयावरणे णवबधगेसु॰ गाहा। बीयावरण—दसणावरण, तम्मि बीयावरणे जे नवविह बधति तेसिं चउविहो पचविहो वा उदओ भवइ, सत पडुच्च नवविह चेव। 'छ च्चउ बधे चेव' त्ति जे छव्बधगा तेसिं पि चउविहो पचविहो वा उदओ। सत पडुच्च नवविह चेव, कह ? छव्विहबधगम्मि थीणगिद्धितिगस्स खओ नत्थि त्ति। चउविहबधगे वि उवसमसेढिं पडुच्च एव चेव। खवगसेढीए छव्विह चउविहबधगाण चउविहो उदओ एगो चेव, पचोदयस्स सभवो नत्थि, कह ? खवगा अच्चतविसुद्ध त्ति

---

१ दओ त्ति का १ ॥ २ गादि दुगा स ॥ ३ लाइयपेक्खा का १ ॥ ४ म्मि य बी का २ ॥ ५ छव्विहबध का २ ॥

काउं, तेण निद्दा-पयलाणं उदओ नत्थि,—"नाइविसुद्धस्स सकिलिट्ठस्स वा निद्दोदयो" (   ) त्ति वयणाओ। चउविहबंधगस्स चेव खवगस्स जाव थीणगिद्धितिगं न खीणं ताव चउविहो उदओ, नवविहं संतं। तओ थीणगिद्धितिगे खीणे 'चउबंधुदए छलंसा य' त्ति चउविहो बंधो चउविहो उदओ छविहं संतं ति ॥ ८ ॥

उवरयबंधे चउ पण, नवंस चउरुदय छ चउ संताइं। वेयणिया-ऽऽउय-गोए, विभज्ज मोहं परं वोच्छं ॥९॥

उवरयबंधे चउ पण[2] नवंस० त्ति गाहा। 'अंस' इति संतकम्मं भण्णइ। दंसणावरणस्स बंधे वोच्छिण्णे चउ पणगमुदया नवविहं संतं, एय उवसंतकसायं पडुच्च। कहं? उवसामग-उवसंतेसु निद्दा-पयलोदओ संभवइ, संतकम्मे भणियं—"निद्दादुगस्स उदओ खीणग-खवगे परिच्चज्ज" त्ति। नवविहं संतं, उवसमसेढीए थीणगिद्धितिगस्स खओ नत्थि त्ति। 'चउ उदय छचउ संताइं' ति चउविहो उदओ छ संतगाइं ति एयं खीणकसायस्स चरिमसमयं मोत्तूणं सेसकाल लब्भइ। चउविहो उदओ चउविहं संतं ति एयं तस्सेव दुचरिमसमए निद्दादुगे खविए चरिमसमए लब्भति। एवं एगादस विगप्पा दंसणावरणे[3]। एत्थ अण्णे[4] अण्णारिसं पढंति—'खवग-खीणकसायाणं निद्दा-पयलाणं उदओ अत्थि' त्ति

१ छ च्च चउ संता। खे ३। छ च्च चउरंसा। सं २॥ २ °णग उदय नवविहं संतं। अस इ ग। सं १ प्रतिस्तु ...... तत्र पत्राभावान्न तत्पाठभेदोऽत्र निर्देष्टुं शक्यते॥ ३ °रणे वधे का २॥ ४ 'अण्णे' इति प्राचीनकर्मस्तवकारादयः। तथा प्राचीनकर्मस्तवे—"निद्दा पयला य तहा खीणदुचरिमम्मि उदयवोच्छेओ।' निद्राप्रचलयोः क्षीणकषायस्य द्विचरमसमये उदयव्यवच्छेदः। चरमसमये तु क्षीणकषायाद्

त न घडइ, कारण पुच्छुच ।

उदयाभाव । अपरे पुनराहु—उपशान्तमोहे निद्राप्रचलयोरुदयव्यवच्छेद, पञ्चानामपि हि निद्राणां घोलनपरिणामे भवत्युदय क्षपकाणां त्वतिविशुद्धत्वाद् न निद्रोदयसम्भव ॥ (त्रयस्त्रिंशत्तमगाथापूर्वार्द्धं तट्टीका च) ।

श्रीचन्द्रर्षिमहत्तरा अपि प्राचीनकर्मस्तवकारमतानुगा । तथा—'मोत्तूण खीणराग इंदियपज्जत्तगा उदीरेंति । निद्दापयला० मुत्तथा क्षीण रागम्, किमुक्त भवति ? क्षीणकषायान्त्यावलिकाकाल मुक्त्वा शेष काल तदारतो जीवा इन्द्रियपर्याप्त्या पर्याप्तका निद्राप्रचलयोरुदीरका । (पञ्चसङ्ग्रहे प्रकृत्युदीरणायामेकोनविंशतितमी गाथा तत्स्वोपज्ञटीका च) । न्यायाचार्यमहोपाध्यायश्रीयशोविजया अप्येतदेव कर्मप्रकृतिटीकायां प्रतिपादयन्ति स्म—ये तु कर्मस्तवकारादय क्षपकक्षीणमोहयोरपि निद्राद्विकस्योदयमिच्छन्ति तन्मते उदये सत्युदीरणाया अवश्यम्भावात् क्षीणरागमन्त्यावलिकाभाविन मुक्त्वा तदारत सर्वेऽपि जीवा इन्द्रियपर्याप्त्या पर्याप्ता निद्राप्रचलयोरुदीरका द्रष्टव्या । तदुक्त तन्मतानुसारेण पञ्चसङ्ग्रहे—मोत्तूण खीणराग इंदियपज्जत्तगा उदीरंति । निद्दापयला । इति । (प्रकृत्युदीरणायामष्टादशगाथाटीकायाम्) ।

यत् पुन श्रीमच्चन्द्रर्षिपाद पञ्चसङ्ग्रहस्यसप्ततिकासङ्ग्रहे तत्स्वोपज्ञटीकायां च “पढमे सुहुममि चउबंधमि अबंधगम्मि खीणम्मि । छस्सत चउदयो पचण्ह वि केइ इच्छति ॥ १४ ॥ क्षपकश्रेण्यां बादरकषाये सूक्ष्मकषाये चतुर्बन्धके अबन्धके च क्षीणकषाये षट् प्रकृतय सद्भावेन भवन्ति चतसृणामुदय, एवमेकदेश भङ्गा सप्ततिकाकारमतेन । कर्मस्तवकारमतेन पञ्चानामप्युदयो भवति ततश्च त्रयोदश भङ्गा । एव दर्शनावरणत्रिक-संवेध इति गाथार्थ ॥ १४ ॥' इत्यत्र उपर्युक्तस्वमतद्वय प्रतिपादित तत् सप्ततिकाप्रकरणस्य सङ्ग्रहत्वेन तदाशयानुरोधादिति बोद्धव्यम्, न पुनरत्रार्थे स्वमतविरुद्धप्रतिपादनाशङ्कोद्भावनीयेति ॥

'वेयणियाऽऽउगगोए विभज्ज' त्ति । इदाणिं वेयणियस्स बंधादिट्ठाणा भण्णंति—वेयणियस्स सामण्णेण एक्कं बंधट्ठाणं सायं वा असायं वा, दो वि जुगवं न बज्झंति, विरुद्धत्वात् । उदयट्ठाणं पि एक्कं चेव दोण्हमण्णयरं, दो वि जुगवं न उदेंति विरुद्धत्वादेव । दो संतट्ठाणाणि—दो वा एक्कं वा । जाव अण्णयरं न खीणं ताव दो हवंति, एक्कयरे खीणे एगं भवइ । इयाणिं संवेहो—असायं बंधंतस्स असायमुदयं साया-ऽसायाणि दो वि संतं, अहवा असायं बंधं० सायमुदयं दो वि संतं, अहवा सायं बंधं० असायमुदयं दो वि संतं, अहवा सायं बंधं० सायमुदयं दो वि संतं । बंधे उवरए असायमुदयं साया-ऽसायाणि दो वि संतं, अहवा सायमुदयं साया-ऽसायाणि दो वि संतं; अहवा असायमुदयं साए खीणे असायं संतं, एयं एक्कं समयं लब्भइ; अहवा सायमुदयं असाए खीणे सायं संतं, एयं पि एक्कं समयं लब्भइ । वेइज्जमाणं मोत्तूण इयरं पढमं खविज्जति त्ति । वेयणिज्जे एए अट्ठ भंगा । इयाणिं आउगस्स बंधादिट्ठाणा भण्णंति—

'आउग' त्ति आउगस्स बंधं पडुच्च सामण्णेणं एक्कं बंधट्ठाणं चउण्हमण्णयरं, विरुद्धत्वात् दुगादि जुगवं न बज्झंति । उदयं पडुच्च एक्कं ठाणं सामण्णेण चउण्हमण्णयरं, विरुद्धत्वात् दुगादिणो जुगवं न उदेंति त्ति । दो संतट्ठाणाणि—ठाणं पडुच्च सामण्णेणं एक्कं वा दो वा । एक्कं ति चउण्हमण्णयरं, ताव जाव अण्णं परभवियाउयं न बज्झति, परभवियाउए बद्धे जाव अण्णत्थ न उप्पज्जति ताव दोण्हं संतट्ठाणं। इदाणिं संवेहावसरो—आउगस्स तिण्णि अवत्था—बंधपुव्वकालावत्था बंधकाला-

१ वेदनीया-ऽऽयु-र्गोत्राणा भङ्गसङ्ख्यासूचिकेय गाथा त्रिष्वपि मूलसूत्रादर्शेषु उपलभ्यते—"गोयम्मि सत्त भंगा, अट्ठ य भंगा हवंति वेयणिए । पण णव णव पण भंगा, आउचउक्के वि कमसो उ ॥" २ °साये खी° का १ ॥ ३ °णाणि भ° का १ ॥ ४ °याउं न का १ ॥

वत्था बधुत्तरकालावत्था इति । बधपुब्वकालावत्थाए एक्को, सेसाण दोण्ह चत्तारि वा दो वा विगप्पा । नेरइयस्स निरयाउय उदय निरयाउय सत ति बधपुव्वकाले । तिरियाउय बधति निरयाउय उदय निरय तिरियाउय सत, अहवा मणुयाउय बधति निरयाउगमुदय निरय मणुस्साउगाणि सत ति, एए दो भगा बधकाले । उवरए बधे निरयाउग उदय निरय तिरियाउय सत, अहवा निरयाउगमुदय निरय मणुस्साउगाणि दो वि सत, एए दो भगा बधुत्तरकाले भवति । देव निरयाउगाण बधकाले बधुत्तरकाले य परोप्परसजोगो नत्थि । कम्हा ? भण्णइ—देव-नेरयिया देवेसु नेरयिगेसु य न उववज्जति त्ति काउ । जेण निरयाउगेण पच भगा । एव देवाउगेण वि पच भगा, नवर देवाउगमुदय देवाउग सत ति भाणियव्व । तिरिक्खस्स तिरिक्खाउगमुदय तिरिक्खाउग सत ति बधपुव्वकाले । निरयाउग बधइ तिरियाउगमुदय नरय तिरियाउगाणि सत, अहवा तिरियाउग बधइ तिरियाउग उदयं तिरिय तिरियाउगाणि सत, अहवा मणुयाउग बधइ तिरियाउग उदय तिरिय मणुस्सा उगाणि सत, अहवा देवाउग बधइ तिरियाउग उदय तिरिय देवाउगाणि सत ति, एए चत्तारि भगा बधकाले । बधे वोच्छिण्णे तिरियाउगमुदय तिरिय निरयाउगाणि दो वि सत, अहवा तिरियाउगमुदय तिरिय-तिरियाउगाणि सत, अहवा तिरियाउगमुदय तिरिय मणुयाउगाणि दो वि सत, अहवा तिरियाउगमुदयं तिरिय-देवाउगाणि सत; एए चत्तारि भगा बधुत्तरकाले । एए तिरियाउगेण णव भगा लद्धा, तिरिक्खा चउसु वि गईसु उववज्जति त्ति काउ । एव मणुयाउगेण वि नव

१ °स्स नेराउयं ख ॥ २ याउ व फां १ ॥ ३ णुयाउ का १ ॥ ४ एव चत्ता कां १ ॥ ५ णि दो वि स कां २ । स अतावयं भज्ञ पतित ॥ ६ गा, तिरि का १ ॥

भंगा, नवरि मणुयाउगमुदयं मणुस्साउगं संतं ति आलावो भाणियव्वो। एवं आउगभंगा सव्वे सहिया अट्ठावीसं।

इदाणिं गोत्ते बंधाइट्ठाणा भण्णंति—'गोए' त्ति गोयस्स ट्ठाणं पडुच्च एक्कं बंधट्ठाणं—उच्चं नीयं वा। दो वि जुगवं न बज्झंति, विरुद्धत्वात्। ठाणं पडुच्च सामण्णेण एक्कं उदयट्ठाणं उच्च-नीयाणमण्णयरं। दो वि जुगवं न उदेंति, विरुद्धत्वात्। दो संतट्ठाणाणि—दो वा एक्कं वा। उच्चा-णीयाण समुदओ दोण्णि। तेउकाय-वाउकाया उच्चागोयं उव्वलंति, तिरिक्खेसु चेव उववज्जंति त्ति काउं, तिरिक्खेसु[1] चेव उच्चागोयस्स उदओ नत्थि त्ति तम्मि उच्चागोए उव्वलिए नीयागोयमेव एगं संतं। अहवा नीयागोए अजोगिदुचरमसमए खविए उच्चागोए सेसे एवं वा एक्कं संतट्ठाणं[3] ति। इदाणिं 'कइ बंधंतो वेयइ कइ?' त्ति एयस्स अवसरो—नीयागोयं बंधइ नीयागोयमुदयं नीयागोयं संतं, एसो भंगो तेउकाइग-वाउकाइगे पडुच्च, तओ अणंतरुवट्टिए वा सेसजीवे पडुच्च। अहवा नीयं बंधं नीयमुदयं नीयमुच्चं सन्तं, अहवा नीयं बंधं उच्चमुदयं नीयमुच्चं संतं, अहवा उच्चं बंधं नीयमुदयं नीउच्चं संतं, अहवा उच्चं बंधं उच्चमुदयं नीउच्चं संतं। बंधे उवरए उच्चमुदयं नीउच्चं संतं, अहवा उच्चमुदयं उच्चं संतं; एए बंधोवरमे दो भंगा। वईसु[4] नीयागोयस्स उदओ नत्थि त्ति काउं अण्णो विगप्पो नत्थि त्ति। एए गोयम्मि सव्वे सत्त भंगा। एवं वेयणिया-ऽऽउग-गोए[5] 'विभज्ज' त्ति विभजेद्, विकल्पयेदित्यर्थः। तथा चैव विभक्ताः।

'मोहं परं वोच्छं' ति अओ परं मोहणिज्जस्स पगइसमुक्कित्तणा बंधाइट्ठाणाणं सामण्णेणं परूवणा संवेहो य भण्णइ ॥ ९॥

---

१ °एसु त्ति सं का २ ॥ २ °सु उच्चा° का १ ॥ ३ °णं। इयाणिं का १ का २ ॥ ४ व्रतिष्विलर्थ, प्रमत्तगुणस्थानकाद्योगिगुणस्थानकपर्यन्तवर्तिष्विति भाव ॥ ५ °एसु 'वि° सं का २ ॥

तत्थ पगइसमुक्कित्तणा—मोहणीयं दुविहं—दसणमोहणीय चरित्तमोहणीय च । मेओ य अत्थनिरूपण च जहा सयगे । तत्थ बधट्ठाणाणि—

बावीस एक्कवीसा, सत्तरसा तेरसेव नव पंच । चउ तिग दुग च एक्कं, बधट्ठाणाणि मोहस्स ॥१०॥

बावीस॰ गाहा । २२ । २१ । १७ । १३ । ९ । ५ । ४ । ३ । २ । १ । एयाणि मोहणिज्जस्स दस बधट्ठाणाणि ॥१०॥

एगं च दो य चउरो, एत्तो एक्काहिया दसुक्कोसा । ओहेण मोहणिज्जे, उदयट्ठाणा नव हवंति ॥११॥

एक्क च दो च॰ गाहा । १ । २ । ४ । ५ । ६ । ७ । ८ । ९ । १० । एयाणि मोहणिज्जे सामण्णेण सव्वजीवे पडुच्च नव उदयट्ठाणाणि । एयाओ दो वि गाहाओ उवरिं सभेदाओ वण्णिहिंति ॥ ११ ॥

अट्ठग-सत्तग-छ-चउ-तिग-दुग एगाहिया भवे वीसा । तेरस बारेक्कारा, एत्तो पंचाइ एक्कूणा ॥ १२ ॥

अट्ठ॰ गाहा । २८ । २७ । २६ । २४ । २३ । २२ । २१ । १३ । १२ । ११ । ५ । ४ । ३ । २ । १ । एयाणि मोहणिज्जे पण्णरस सतट्ठाणाणि । तत्थ अट्ठावीसा सव्वमोहपगडिसमुदओ । तओ सम्मत्ते उव्वलिए सत्तावीसा । तओ सम्मा-मिच्छे उव्वलिए छव्वीसा, अणाइमिच्छद्दिट्ठिस्स वा । अट्ठावीसाओ अणताणुबंधिसु विसजोइएसु चउवीसा । तओ मिच्छत्ते

---

१ दृश्यन्तां शतकप्रकरणस्य १८–१९ गाथे, तच्चूर्णिश्च ॥ २ °रस ते° खे २ ॥ ३ एक्को व दो व चउ खे १ । एक्को य दो दे २ ॥
४ °णिज्जा उ खे १ ॥ ५ दुयसत्तयछचउतियदु खे २ खे ३ ॥ ६ °बारस, ए° खे २ खे ३ ॥ ७ वा छव्वीसा । अट्ठा° का २ ॥

खविए तेवीसा। तओ सम्मामिच्छत्ते खविए बावीसा। तओ सम्मत्ते खविए एक्कवीसा। तओ अट्ठकसाए खविए तेरस। तओ नपुंसगवेए खविए बारस। तओ इत्थिवेए खविए एक्कारस। तओ छन्नोकसाए खविए पंच। तओ पुरिसवेए खविए चत्तारि। तओ कोहसंजलणे खविए तिण्णि, माणे दोण्णि, मायाए खवियाए एक्को॥ १२॥

संतस्स पगइठाणाणि ताणि मोहस्स होंति पन्नरस। बंधोदय-संते पुण, भंगविगप्पे बहू[2] जाण॥१३॥

संतस्स पगइठाणाणि० गाहा। पुव्वद्धं पढियसिद्धं। मोहणिज्जस्स संतट्ठाणाणं परूवणा कया। 'बंधोदयसंते पुण भंगविगप्पे बहू जाण' त्ति बंधोदय-संताणं बहुगा भंगा जाणियव्वा॥ १३॥

एवं बंधट्ठाणाणि सामण्णेणं उद्दिट्ठाणि ताणि इयाणिं सभेयाणि वक्खाणिज्जंति—

छ ब्बावीसे चउ[3] इगवीसे सत्तरस तेरसे दो दो। णवबंधए वि दोन्नि उ, एक्केक्कमओ परं भंगा॥१४॥

छ ब्बावीसे० गाहा। बावीसबंधगस्स छ ब्बंधविगप्पा भवंति। का य बावीसा? के य तस्स भेया? भण्णति—मिच्छत्तं, सोलस कसाया, तिण्हं वेयाणमेगयरं, हासरइ-अरइसोगाणं दोण्हं जुयलाणमेगयरं, भयं, जुगुंछा[4] चेति। एयम्मि बावीसाए पगडीणं एगं चेव बंधट्ठाणं तं बंधमाणस्स मिच्छद्दिट्ठिस्स। एयाए बावीसाए छब्भेया, तं०—तिवेद-हासरइ-अरइसोगजुवलेहिं उट्ठंति[5], तिण्णि दुगा छ त्ति। मिच्छत्तेण विणा[6] सा चेव बावीसा एक्कवीसा भवइ। नवरं दोण्हं वेयाण-

१ तत्तो कोहसंजलणाए खवियाए तिण्णि, तओ माणसंजलणाए खवियाए दोण्णि, तओ मायासंजलणाए खवियाए एक्को का २॥
२ बहुं जा° खे ३॥ ३ °उ एक्कवीस स° खे २॥ ४ °य दुगुं° का १ का २॥ ५ उट्ठेंति का १ का २॥ ६ णा स च्चेव का १ का २॥

मेगयर ति माणियव। किं कारण ? नपुंसवेओ मिच्छत्तपच्चेओ त्ति काउ नत्थि। एत्थ चत्तारि भगा दुवेय हासरइ अरइसोग-जुवलेहिं उद्वेंति, दो दुवगा चत्तारि[1]। सा चेव एगवीसा अणताणुबधिरहिया सत्तरस। नवर बारस कसाया पुरिसवेओ त्ति माणियव। किं कारण ? इत्थिवेयस्स अणताणुबधिसहचरियत्ताओ। एत्थ दो भगा हासरइ-अरइसोगजुवलेहिं। ते चेव सत्तरस अपच्चक्खाणावरणरहिया तेरस। एत्थ वि अणतरुत्ता चेव दो भगा। ते चेव पच्चक्खाणावरणरहिया नव। एत्थ वि ते चेव दो भगा। ते चेव जुंवलगदुग[4] भय-जुगुच्छारहिया पच। इओ परमिइ विगप्पो नत्थि। ते चेन पुरिसवेयरहिया चत्तारि। कोहसजलणेण विणा तिण्णि। माणेण विणा दोण्णि। मायाए विणा एक्को॥ १४॥

बधट्ठाणाणि भणियाणि इदाणिं 'कइ बधतो वेयइ कइ ?' त्ति एयस्स अवसरो। पुव्वुद्दिट्ठाणि उदयट्ठाणाणि बध बध पइ सविगप्पाणि भण्णति—

दस बावीसे णवं इक्कवीस सत्ताइ उदयंठाणाणि। छाई णव सत्तरसे, तेरे पचाइ अट्ठेव॥ १५॥

दस बावीसे नव एक्कवीस० गाहा। बावीसबधगस्स मिच्छद्दिट्ठिस्स सत्ताइ दसताणि चत्तारि उदयट्ठाणाणि, त०—सत्त अट्ठ नव दस त्ति ७।८।९।१०। तत्थ सचोदओ—मिच्छत्त अपच्चक्खाण पच्चक्खाणावरण सजलणाण य चउण्ह कोहाई-णमेगयरं तिग, किं कारण ? कोहम्मि वेइज्जमाणे सवे कोहा वेइज्जति, तज्जातीयकत्वात्, एव माण माया-लोभा वि, तिण्ह

१ सगवे° कां १ कां २॥ २ बइउ त्ति कां २॥ ३ रि त्ति। स चेव कां १ का २॥ ४ जुगलगदुगभयदुगु कां १। जुयलदुग कां २॥ ५ व इगवीसे स खे १॥ ६ यकम्मसा। छा खे ३॥

वेयाण एगयरं, तिण्णि वि जुगवं न उदेंति, विरुद्धत्वात्; हासरइ-अरइसोगाणं दोण्ह जुयलाणमेगयरं, एए विरुद्धत्तणओ जुगवं न उयंति। एयासिं सत्तण्हं पगईणं धुवोदओ मिच्छद्दिट्ठिस्स ठाणं पडुच्च। एयम्मि सत्तोदए चउवीसं भंगा, तं०— चत्तारि कोह-माण-माया-लोमे तिण्णि वेए हासरइ-अरइसोगे दोण्णि वि जुवेले अहिगिच्च उदेंति परोप्परगुणिया २४। एयम्मि चेव सत्तोदए भयएण वा दुगुंछाए वा अणंताणुबंधिए वा छूढे अट्ठ। एत्थ भय-दुगुंछा-ऽणंताणुबंधीहिं अट्ठगे तिण्णि चउवीसाओ लब्भंति। अणंताणुबंधिउदयरहिओ मिच्छद्दिट्ठी कम्मि काले भवइ? भण्णइ—सम्मद्दिट्ठी अणंताणुबंधिणो विसंजोएत्तु चउवीससंतकम्मिओ जाओ, पुणो वि मिच्छत्तं गंतूण अणंताणुबंधिणो बंधमाणस्स बंधावलियाए अगयाए अणंताणुबंधीणं उदयो नत्थि, तम्मि काले आवलियामेत्तं कालं मिच्छद्दिट्ठी अणंताणुबंधिउदयरहिओ लब्भइ, नान्यत्र। तम्मि चेव सत्तोदए भय-दुगुंच्छाए वा भय-अणंताणुबंधिए वा दुगुंच्छ-अणंताणुबंधिए वा छूढे नवोदओ भवइ। तत्थ वि ते चेव तिण्णि विगप्पा। एक्केक्कम्मि य चउवीसं भंगा। तम्मि चेव सत्तोदए भय-दुगुंच्छाए अणंताणुबंधीहिं य छूढेहिं दसोदओ भवइ। तम्मि दसोदए एगा चेव चउवीसा। बावीसबंधगस्स उदयट्ठाणा सविगप्पा भणिया इति।

इदाणिं एक्कवीसबंधगस्स सत्ताइ-नवंतगाइं तिण्णि उदयट्ठाणाइं, तं जहा—७। ८। ९। तत्थ सत्तोदओ—अणंताणुबंधिअपच्चक्खाण-पच्चक्खाणावरण-संजलणाणं कोहाईण चउण्हं पि एगयरं चउक्क, तिण्ह वेयाणमन्नयरं, दोण्ह जुयलाणमेगयर।

१ °द्धत्ताओ का १॥ २ जुगले का १ का २॥ ३ °यएत्तु का २॥ ४ °ओ। त° का १॥ ५ °च्छा-अ° का १ का २॥ ६ रं, तिण्ह स॥ ७ °ण एगय° का २॥

एएसिं सत्तण्ह कम्माण समुदओ सासायणस्स धुवोदओ ठाण पडुच्च । एयम्मि सत्तोदए एगा चउवीसा कोहाइ वेय-जुयले य अहिकिच्च । तम्मि चेव सत्तोदए भए वा दुगुच्छाए वा छूढाए अट्ठोदओ । एत्थ भय-दुगुच्छाहिं दो चउवीसाओ अट्ठगाण । तम्मि चेव सत्तोदए भय-दुगुच्छाहिं छूढाहिं नवोदओ भवति तम्मि नवोदए एगा चउवीसा । सव्वाओ चत्तारि । एय असेढिगय पडुच्च । सेढिगय पडुच्च दुविहो आएसो—जेसिं अणताणुबंधिसहिओ सेढिं पडिवज्जति तेसिं आएसेण सेढीओ परिवडमाणो वि सासणो लब्भइ । जेसिं अणताणुबंधिरहिओ सेढिं पडिवज्जइ तेसिं आएसेण सेढीओ परिवडमाणो सासणो न लब्भइ । कह ? भण्णति—अणताणुबंधिरहियस्स सासणभावो न संभवइ त्ति काउ । जइ अणताणुबंधिरहियस्स सासणभावो लभेज्ज तो छादिं णवताणि चत्तारि उदयट्ठाणाणि लभेज्ज । जम्हा दोण्ह वि भएण चत्तारि न लब्भंति तम्हा अणताणुबंधिसंतरहिस्स सासणभावो नत्थि त्ति सद्धेय ।

'छादी नव सत्तरसे' त्ति सत्तरसबंधगस्स छादी नवताणि चत्तारि उदयट्ठाणाणि, त०—छ सत्त अट्ठ नव त्ति । सत्तरस-बंधगा दो—सम्मामिच्छद्दिट्ठी असंजयसम्मद्दिट्ठी य । तत्थ सम्मामिच्छद्दिट्ठिस्स सत्तरसबंधगस्स तिण्णि उदयट्ठाणाणि—७ । ८ । ९ । तत्थ सत्तोदओ—सम्मामिच्छत्त, अणताणुबंधिवज्जाण तिण्ह कसायाण चउप्पगाराणमेगयर, तिण्ह वेदाण एगयरं, दोण्ह जुयलाणमेगयर ति । एयासिं सत्तण्ह पगडीण सम्मामिच्छद्दिट्ठिस्स धुवोदओ ठाण पडुच्च । एयम्मि सत्तोदये एगा चउवीसा पूर्ववत् । एयम्मि चेव सत्तोदए भएण वा दुगुछाए वा छूढाए अट्ठोदओ । एत्थ भय दुगुछाहिं दो चउवी-

१ एण घा का २ ॥ २ धिसतरहि नों १ क २ ॥ ३ दिप्पणय ७ ॥

साओ अट्ठगाणं । तम्मि चेव सत्तोदए भय-दुगुंछाहिं छूढाहिं नवोदओ होइ । एयम्मि नवोदए एका चउवीसा । सव्वाओ चत्तारि चउवीसाओ । इयाणिं असंजयसम्मदिट्ठिस्स सत्तरसबंधगस्स छादि-नवंताणि चत्तारि उदयट्ठाणाणि—६ । ७ । ८ । ९ । तत्थ छलोदओ उवसमसम्मदिट्ठिस्स वा खाइगसम्मदिट्ठिस्स वा—अणंताणुबंधिवज्जा तिण्णि कसाया, तिण्हं वेदाणं एगयरं, दोण्हं जुवलाणं एगयरं ति । एए छक्कम्मा अविरयसम्मदिट्ठिस्स धुवोदओ ठाणं पडुच्च । तत्थ छलोदए एगा चउवीसा पूर्ववत् । तम्मि चेव छलोदए भएण वा दुगुंछाए वा वेदगसम्मत्तेण वा एगयरेण सत्तोदओ । एत्थ भय-दुगुंछा-सम्मत्तेहिं सत्तगाणं तिण्णि चउवीसाओ भवंति । तम्मि चेव छक्कगे भय-दुगुंछाए वा भय-सम्मत्तेण वा दुगुंछा-सम्मत्तेण वा छूढेण अट्ठोदओ । एत्थ वि तेहिं चेव तिहिं दुगेहिं अट्ठगाणं तिण्णि चउवीसाओ । तम्मि चेव छक्के भय-दुगुंछ-सम्मत्तेहिं छूढेहि नवोदओ होइ । एत्थ नवोदए एका चउवीसा । सव्वाओ अट्ठ । सत्तरसबंधगस्स सव्वाओ बारस चउवीसाओ ।

'तेरे पंचादि अट्ठेव' त्ति तेरसबंधगस्स पंचादि-अट्ठगंताणि चत्तारि उदयट्ठाणाणि, तं—५ । ६ । ७ । ८ । जाणि असंजयसम्मदिट्ठिस्स छलोदयादीणि चत्तारि उदयट्ठाणाणि वुत्ताणि ताणि चेव अपच्चक्खाणावरणरहियाणि संजयासंजयस्स पंचादि-अट्ठगंताणि उदयट्ठाणाणि सविगप्पाणि भवंति । सव्वाओ अट्ठ चउवीसाओ ॥ १५ ॥

चत्तारि आइ णवबंधएसु उक्कोस सत्त उदयंसा । पंचविहबंधगे पुण, उदओ दोण्हं मुणेयव्वो ॥१६॥

---

१ °के तिहिं भ° का १ ॥ २ °त्तमुदयं° खे ३ ॥

चत्तारि आदि नवबंधएसु उक्कोस सत्तमुदयस० त्ति । नवविहबंधगस्स संजयस्स चउरादि सत्तगताणि चत्तारि उदयट्ठाणाणि—४ । ५ । ६ । ७ । जाणि चेव संजयासंजयस्स पंचादि-अट्ठगताणि उदयट्ठाणाणि ताणि चेव पच्चक्खाणावरणरहियाणि संजयस्स चउरादि-सत्तोदयताणि चत्तारि उदयट्ठाणाणि सविगप्पाणि भवंति । 'पंचविहबंधए पुण उदओ दोण्ह मुणेयव्वो' त्ति पंचविहबंधगस्स दोण्ह कम्माण समुदओ त्ति एक्कं उदयट्ठाणं । दोण्णि—चउण्ह संजलणाण एगयरं, तिण्ह वेयाणमेगयरं । एत्थ तिवेद-संजलणचउक्केहिं बारस भंगा भवंति ॥ १६ ॥

एत्तो चउबंधादी, एक्केकुदया हवंति सव्वे त्ति । बंधोवरमे वि तहा, उदयाभावे वि वा होज्जा ॥१७॥

चउविहबंधगस्स वेदोदए पुरिसवेदबंधे य जुगवं फिट्टे एक्कमेव उदयट्ठाणं लब्भति, तं०—चउण्ह संजलणाण एगयरं । एत्थ चत्तारि भंगा । कहं ? भण्णइ—कोयि कोहेण उवट्ठाइ कोयि माणेण उवट्ठाइ कोइ मायाए कोइ लोभेण । एत्थ अण्णे अण्णारिसं पढंति ।卐 तद्यथा—

'पंचाओ य चउक्क सकम्ममाणस्स हाति ते चेव । वेएहिं परिहीणा चउरो बारिमेसु कसिणेसु ॥ ( ) ॥卐

तं च कसायपाहुडादिसु विहडति त्ति काउ परिसेसिय। तिविहबंधगस्स एक्को उदओ—कोहसंजलणवज्जाण तिण्ह कसा

१ णि तं०—४ । का १ का २ ॥ २ ति । एत्थ वि अट्ठ । 'प का २ ॥ ३ रभंगा भवति—एकनपुंसकवेदोदयाभावे चतुष्कद्वयमष्टौ प्येक(एक)स्त्रीवेदोदयाभावे एके(क) चतुष्क(म्) एवमन्ये द्वादश ॥ १६ ॥ कां २ ॥ ४ गाथेयं चूर्णौ अक्षरशोऽवतारिताऽस्ति ॥ ५ स्वस्तिकद्विकान्तर्गतः पाठः सप्ततौ नास्ति ॥

याणमण्णयरं । कहं ? कोहसंजलणाए उदए वट्टमाणो नियमा चउविहबंधगो, बंधोदओदीरणा य जुगवं फिट्टंति त्ति काउं । माणसंजलणाए भावणा जहा कोहस्स । एत्थ तिण्णि भंगा । दुविहबंधगस्स एक्को उदओ माया-लोहसंजलणाणं अण्णयरं । मायाए भावणा जहा कोहस्स । एत्थ एगो भंगो । एत्थ दोभंगा । एगविहबंधगस्स एगं उदयट्ठाणं लोहसंजलणा । 'उदयाभावे वि वा होज्ज' त्ति तस्सेव इदाणिं अबंधगस्स एगं उदयट्ठाणं, लोभसंजलणाए एगाए सुहुमकिट्टी वेदेइ त्ति । अबंधगस्स उदयाभावे वि संतं लब्भति, उवसंतकसायं पडुच्च ॥ १७ ॥

इदाणिं सामण्णेणं सव्वोदएसु सव्वबंधगे पडुच्च सव्वभंगा केत्तिया होज्ज ? त्ति तन्निरूवणत्थं भण्णइ—

एक्कग छक्केक्कारस, दस सत्त चउक्क एक्कगं चेव । एए चउवीसगया, चउवीस दुगेक्कमेक्कारा ॥ १८ ॥

एक्कग छक्केक्कारस० गाहा । दसोदए एक्का चउवीसा । नवोदए छ चउवीसाओ । अट्ठोदए एक्कारस । सत्तोदए दस । छलोदए सत्त । पंचोदए चत्तारि । चउरोदए एक्का चउवीसा । 'चउवीस दुगे' त्ति दुगोदए पंचविह-चउविहंबंधगं पडुच्च ४ । ३ । २ । १ । १ । अबंधगे य एक्का चउवीसा । 'एक्कमेक्कारे' त्ति एक्कोदए चउविह-तिविह-दुविह-एक्कविहबंधगे य पडुच्च यथासङ्ख्यमेकादश भङ्गा भवन्ति सव्वे वि ॥ १८ ॥

इदाणिं सव्वोदयपरिमाणनिरूवणत्थं भण्णइ—

---

१ °या, वार दुगेक्कम्मि एक्का° खं१ खं२ ॥ २ "एतच्च मतान्तरेणोक्तम्, अन्यथा स्वमते द्वादशैव भङ्गा वेदितव्याः" इति श्रीमलयगिरीयटीकायाम् ॥ ३ °ह एक्केक्कं पडु° स ॥ ४ °च्च बारस अट्ठ चउभगो दि एक्काए चउ° कां२ ॥

चत्तारि आदि नवबंधएसु उक्कोस सत्तमुदयसं० त्ति । नवविहबंधगस्स संजयस्स चउरादि-सत्तगताणि चत्तारि उदयट्ठाणाणि—४।५।६।७। ताणि चेव संजयासंजयस्स पंचादि-अट्ठगताणि उदयट्ठाणाणि ताणि चेव पच्चक्खाणावरणरहियाणि संजयस्स चउरादि-सत्तोदयताणि चत्तारि उदयट्ठाणाणि सविगप्पाणि भवंति । 'पंचविहबंधए पुण उदओ दोण्ह मुणेयव्वो' त्ति पंचविहबंधगस्स दोण्ह कम्माण समुदओ त्ति एक्कं उदयट्ठाणं । दोण्णि—चउण्ह संजलणाणं एगयरं, तिण्ह वेयाणमेगयरं । एत्थ तिवेद-संजलणचउक्केहिं बारस भंगा भवंति ॥ १६ ॥

एत्तो चउबंधादी, एक्केक्कुदया हवंति सव्वे वि । बंधोवरमे वि तहा, उदयाभावे वि वा होज्जा ॥१७॥

चउविहबंधगस्स वेदोदए पुरिसवेदबंधे य जुगवं फिट्टे एक्कमेव उदयट्ठाणं लब्भति, तं०—चउण्ह संजलणाण एगयरं । एत्थ चत्तारि भंगा । कहं ? भण्णइ—कोयि कोहेण उवट्ठाइ कोयि माणेण उवट्ठाइ कोइ मायाए कोइ लोभेण । एत्थ अण्णे अण्णारिसं पढंति ।卐 तं चेदम्—

'पंचाओ य चउक्क सक्कममाणस्स हांति ते चेव । नेपर्हि परिहीणा चउरो चरिमेसु कसिणेसु ॥ ( ) ॥卐

तं च कसायपाहुडादिसु विहडति त्ति काउं परिसेसिय। तिविहबंधगस्स एक्को उदओ—कोहसंजलणवज्जाणं तिण्ह कसा

1 णि तं०—४ । का १ का २ ॥ 2 ति । एत्थ वि अट्ठ । 'पं' कां २ ॥ 3 रभंगा भवंति—एकनपुंसकवेदोदयाभावे चतुष्कद्वयमष्टौ प्येक(एक)स्त्रीवेदोदयाभावे पके(क) चतुष्क(म्) एवमन्ये द्वादश ॥ १६ ॥ कां २ ॥ 4 गाथेयं पूर्णा अक्षरशो ऽवतारिताऽस्ति ॥ 5 स्वस्तिकद्विकान्तर्गतः पाठः सप्रतौ नास्ति ॥

याणमण्णयरं । कहं ? कोहसंजलणाए उदए वट्टमाणो नियमा चउविहबंधगो, बंधोदओदीरणा य जुगवं फिट्टंति त्ति काउं ।
एत्थ तिण्णि भंगा । दुविहबंधगस्स एको उदओ माया-लोहसंजलणाणं अण्णयरं । माणसंजलणाए भावणा जहा कोहस्स ।
एत्थ दोभंगा । एगविहबंधगस्स एगं उदयट्ठाणं लोहसंजलणा । मायाए भावणा जहा कोहस्स । एत्थ एगो भंगो ।
इदाणिं अबंधगस्स एगं उदयट्ठाणं, लोभसंजलणाए एगाए सुहुमकिट्टी वेदेइ त्ति । 'उदयाभावे वि वा होज्ज' त्ति तस्सेव
अबंधगस्स उदयाभावे वि संतं लब्भति, उवसंतकसायं पडुच्च ॥ १७ ॥

इदाणिं सामण्णेणं सवोदएसु सवबंधगे पडुच्च सवभंगा केत्तिया होज्ज ? त्ति तन्निरूवणत्थं भण्णइ—

एक्कग छक्केक्कारस, दस सत्त चउक्क एक्कगं चेव । एए चउवीसगया, चउवीस दुगेक्कमेक्कारा ॥ १८ ॥

एक्कग छक्केक्कारस० गाहा । दसोदए एक्का चउवीसा । नवोदए छ चउवीसाओ । अट्ठोदए एक्कारस । सत्तोदए दस ।
छलोदए सत्त । पंचोदए चत्तारि । चउरोदए एक्का चउवीसा । 'चउवीस दुगे' त्ति दुगोदए पंचविह-चउविहबंधगं पडुच्च
एक्का चउवीसा । 'एक्कमेक्कारे' त्ति एक्कोदए चउविह-तिविह-दुविह-एक्कविहबंधगे य पडुच्च ४ । ३ । २ । १ । १ । अबंधगे य
यथासङ्ख्यमेकादश भङ्गा भवन्ति सवे वि ॥ १८ ॥

इदाणिं सवोदयपरिमाणनिरूवणत्थं भण्णइ—

---

१ °या, वार दुगेक्कम्मि एक्का° खे१ खे२ ॥ २ "एतच्च मतान्तरेणोक्तम्, अन्यथा स्वमते द्वादशैव भङ्गा वेदितव्याः" इति श्रीमलयगिरीयटीकायाम् ॥ ३ °ह एक्केकं पडु° स ॥ ४ °च्च वारस अट्ठ चउभगो हि एक्काए चउ° का२ ॥

नवपचाणउयसए,उदयविगप्पेहिं मोहिया जीवा। अउणत्तरिएगत्तरिपयविंदसएहिं विन्नेया ॥१९॥

नवपचाणउयसए उदयविगप्पेहिं मोहिया जीवा० गाहा । 'उदयविगप्पेहिं' ति उदयभेदेहिं । दसण्ह पगतीण समुदओ एग उदयट्ठाण १०।९।८।७।६।५।४।२।१। एगाए पगईए एगो उदओ। एव सवे उदयभेदा एत्तिया हवति ९९५। एएहिं मोहिया जीवा। एएसिं उप्पत्ती—सवेसिं दसोदयादि दुगोदयपज्जयसाणाण मूलभेदा पिंडिज्जति, एत्थ एक्केक्कम्मि चउवीसं भगा अत्थि त्ति काउ चउवीसाए गुणितु एक्कोदयभेदेहिं यि एक्कारसहिं छूढेहिं नवसया पचाणउया हवति।

'अउणत्तरिएगर हे‍ ए र ए ण र' त्ति एकूणसत्तरिसएहिं एगत्तरेहिं 'पदवदेहिं' ति कम्मपगडिसमुदएहिं। नेगु ' । एएहिं मोहिया जीव त्ति सवज्झति। एयस्स उप्पत्ती—दसोदयभगो ।, अट्ठोदय० अट्ठहिं, सत्तोदय० सत्तहिं, छलोदय० छहिं, पचोदय० ति। किं कारण? तम्मि तम्मि उदये वत्तियाण कम्माण समुदओ त्ति कम्मसमुदएण गुणिया मेलिज्जति। तेसु एक्केक्कम्मि चउवीस भगा अत्थि यपिंडे एकोदए जे एक्कारस भगा ते छुब्भति। एएहिं अउणत्तरिसयाणि एक्कस-

— १ हे२ ॥ ३ एकुदय को२ ॥ ४ १। जाव एगा को१ का२ ॥ ५ एसिं मो को१ ॥ — गत्त को२ ॥

त्तराणि पदवृन्दानां भवन्ति ॥ १९ ॥

णवतेसीयसएहिं, उदयविगप्पेहि मोहिया जीवा। अउणत्तरिसीयाला, पयवंदसएहिं विन्नेया ॥२०॥

नवतेसीयसएहिं उदय० गाहा । 'उदयविगप्पेहिं' ति उदयभेदेहिं । दसण्हं पगतीणं समुदओ एगो उदओ । १० । ९ । ८ । ७ । ६ । ५ । ४ । २ । १[2] । एगाए पगतीए एगो[3] उदओ । एवं सव्वे उदयभेदा पिंडिया नवसया तेसीया । एएहिं मोहिया जीवा । एएसिं उप्पत्ती—सव्वेसिं दसोदयाइ-चउरोदयपज्जवसाणाणं मूलभेदा पिंडिज्जंति । एत्थ एक्केक्कम्मि चउवीसं भंगा अत्थि त्ति काउं चउवीसाए गुणितु दुगोदय-एगोदयविगप्पेहिं बारस-एकारसहिं छूढेहिं नवसया तेसीया भवति । 'अउणत्तरि सीयाला पदवंदसएहिं विण्णेय' त्ति एगूणसत्तरिसएहिं सीयालअहिएहिं 'पदवंदेहिं' ति कम्मपगडिसमुदएहिं ति । तेसु सव्वोदएसु कम्मपगडीओ एत्तियाओ भवंति । तेहिं मोहिया जीव त्ति संबज्झति । एयस्स उप्पत्ती—दसोदयभंगो दसहिं गुणिज्जति, एवं नवोदयभंगा नवहिं गुणिज्जंति, अट्ठोदय० अट्ठहिं, सत्तोदय० सत्तहिं, छलोदय० छहिं, पंचोदय० पंचहिं, चउरोदय० चउहिं, दुगोदयभंगा दुहिं गुणिज्जंति । किं कारणं ? तम्मि तम्मि उदए तत्तियाण कम्माण समुदओ त्ति काउं । दसोदयादी चतुरुदयपज्जवसाणा उदया अप्पप्पणो कम्मसमुदएण गुणिया मेलिज्जंति २८८ । तेसु एक्केक्कम्मि चउवीसं

---

१ "इयं चोदयस्थानसङ्ख्या पदसङ्ख्या च ये मतान्तरेण चतुर्विधसङ्क्रमकाले द्विकोदये द्वादश(चतुर्विंशति) भङ्गा उक्तास्तानधिकृत्य वेदितव्या ॥ १९ ॥ यदा पुनरेते नाधिक्रियन्ते तदा इयमुदयस्थानसङ्ख्या—नवतेसीय०" इति श्रीमलयगिरीयटीकायाम् ॥ २ १ । जाव एगा° कां१ कां२ ॥ ३ °गोदओ कां१ कां२ ॥

नवपञ्चाणउयसए, उदयविगप्पेहिं मोहिया जीवा। अउणत्तरिएगत्तरिपयविंदसएहिं विन्नेया ॥१९॥

नवपञ्चाणउयसएं उदयविगप्पेहिं मोहिया जीवा० गाहा । 'उदयविगप्पेहिं' ति उदयभेदेहिं । दसण्ह पगतीण उदओ एग उदयट्ठाण १०।९।८।७।६।५।४।२।१। एगाए पगईए एगो उदओ । एव सवे उदयभेदा पिंडिसमुदओ एग उदयट्ठाण १०।९।८।७।६।५।४।२।१। एएहिं मोहिया जीवा । एएसिं उप्पत्ती—सवेसिं दसोदयादि दुगोदयपज्जवसाणाण मूलभेदा पिंडिएत्तिया हवति २९५ । एएहिं मोहिया जीवा । एएसिं उप्पत्ती—सवेसिं दसोदयादि दुगोदयपज्जवसाणाण मूलभेदा पिंडिएक्कारसहिं छूढेहिं जाति, एत्थ एक्केकम्मि चउवीस भगा अत्थि त्ति काउ चउवीसाए गुणित्तु एकोदयभेदेहिं वि एकारसहिं छूढेहिं नवसया दचाणउया हवति ।

'अउणत्तरिएगत्तरिपदवदसएहिं विण्णेय' त्ति एकूणसत्तरिसएहिं एगत्तरेहिं 'पदवदेहिं' ति कम्मपगडिसमुदएहिं । तेसु दसोदयभगो सवोदएसु कम्मपगडीओ एत्तियाओ हवति ६९७१ । एएहिं मोहिया जीव त्ति सबज्झति । एयस्स उप्पत्ती—दसोदयभगो दसहिं गुणिजइ, एव नवोदयभगा नवहिं गुणिजति, अट्ठोदय० अट्ठहिं, सत्तोदय० सत्तहिं, छलोदय० छहिं, पञ्चोदय० पञ्चहिं, चउरोदय० चउहिं, दुगोदय० दुहिं गुणिजति । किं कारण ? तम्मि तम्मि उदये तत्तियाण कम्माण समुदओ त्ति काउ । दसोदयादि दुगोदयपज्जवसाणां अप्पप्पणो कम्मसमुदएण गुणिया मेलिज्जति । तेसु एक्केक्कम्मि चउवीस भगा अत्थि त्ति काउ चउवीसेहिं गुणिजति । तम्मि उदयपिंडे एकोदए जे एकारस भगा ते छुब्भति । एएहिं अउणत्तरिसयाणि एकस-

१ नास्तीय गाथा खे१ प्रतौ ॥ २ रि सीयाला, प खे२ ॥ ३ यहुदय कां२ ॥ ४ १ । जाव एगा को१ कां२ ॥ ५ पदसि मो को१ ॥ ६-११ दए को१ ॥ १२ णा उदया अप्प कां२ ॥ १३ यगत्त कां२ ॥

मगा अत्थि त्ति काउ चउवीसाए गुणिजंति । तम्मि उदयपिंडे दुगोदयचउवीसाए एक्कोदयएक्कारसहिं य छूढेहिं अउणत्तरि सयाणि सीयालाणि पयवदाण भवंति ॥ २० ॥

इदाणिं 'कइ वा पगतिट्ठाणकम्मस ?' (गा० २) त्ति एय भण्णइ । बावीसाइबधमाणाण तम्मि तम्मि उदयट्ठाणे कति सतट्ठाणाणि होज ? त्ति तन्निरूवणत्थ भण्णति—

'तिण्णेवं उ बावीसे, इगवीसे अट्ठवीस सत्तरसे । छ च्चेव तेर णवबधएसु पचेव ठाणाणि ॥ २१ ॥

बावीसबधगस्स मिच्छदिट्ठिस्स चउण्हमण्णयरे उदयट्ठाणे वट्टमाणस्स तिण्णि सतट्ठाणाणि, त०—अट्ठावीसा सत्तावीसा छव्वीस त्ति । एएसिं अत्थो पुव्वविवरीओ । तत्थ दसोदए तिण्णि वि सतट्ठाणाणि अत्थि । कह ? अणताणुबधीण उदओ अत्थि त्ति काउ । नवोदए वि एमेव । जत्थ अणताणुबधीण उदओ नत्थि तत्थ अट्ठावीसा चेव । कह ? भण्णइ—चउवीस-सतकम्मिओ सम्मद्दिट्ठी मिच्छत्त गतूण अणताणुबधिणो बधिउमाढत्तो, बधावलियाए अगयाए उदओ न होइ तम्हा तस्स अट्ठावीसा सत पडुच्च । एव अट्ठोदए वि तिण्णि वि भाणियव्वाणि । सत्तोदए अट्ठावीसा चेव । कह ? भण्णइ—चउवीससत कम्मिगस्स सम्मत्ताओ परिवडियमेत्तस्स अणताणुबधीण उदयाभावे मिच्छत्तोदए वट्टमाणे अणताणुबधिणो नियमा बधति (बज्झति) त्ति । एव बावीसबधगस्स चत्तारि उदयट्ठाणाणि पडुच्च दस सतभेदा लब्भति ।

---

१ गाथेयं चूर्णावक्षरशोऽवतारिताऽस्ति ॥ २ ख य बा खे२ ॥

'इगवीसे अट्ठवीस' त्ति एगवीसबंधगस्स तिसु वि उदयट्ठाणेसु एगं चेव संतं अट्ठावीसा। कहं? पढमसम्मत्तं उप्पाएत्तु समसम्मद्दिट्ठिट्ठाणे वट्टमाणो सासणभावं गच्छति, तओ सासणभावं गच्छंतस्स सव्वमोहपगडीओ अत्थि त्ति काउं समसम्मद्दिट्ठिट्ठाणे वट्टमाणो सासणभावं गच्छति सो एत्थ णाहिकओ। एवं ताणुबंधिसहिता अट्ठावीसा। उवसमसेढीओ ओयरंतो वि कोइ सासणभावं गच्छति सो एत्थ णाहिकओ। एवं ताणुबंधिसहिता अट्ठावीसा। तीसु वि उदयट्ठाणेसु तिण्णि वि अट्ठावीसाओ लब्भंति।

एकवीसबंधगस्स तीसु वि उदयट्ठाणेसु तिण्णि वि अट्ठावीसाओ लब्भंति।

एक्कवीसबंधगस्स चउसु उदयट्ठाणेसु वट्टमाणस्स सामण्णेण छ संतट्ठाणाणि, तं०[2]—अट्ठावीसा २८। २७।

'सत्तरसे छ चेव' त्ति सत्तरसबंधगस्स चउसु उदयट्ठाणेसु वट्टमाणस्स सामण्णेण छ संतट्ठाणाणि। कहं? वेयगसम्मद्दिट्ठिं सम्मामिच्छद्दिट्ठिं वा २४। २३। २२। २१। तत्थ नवोदयट्ठाणे एगवीसवज्जाणि पंच संतट्ठाणाणि। कहं? वेयगसम्मद्दिट्ठिं सम्मामिच्छद्दिट्ठिं वा पडुच्च अट्ठावीसा चउवीसा य लब्भंति, अट्ठावीससंतकम्मिगो सम्मत्तं सम्मामिच्छत्तं वा गच्छति त्ति काउं। चउगइगा य पज्जत्ता सम्मद्दिट्ठिणो अणंताणुबंधिणो विसंजोएंति त्ति काउं असंजतसम्मद्दिट्ठिस्स चउवीसा लब्भइ। सो चेव कोइ सम्मामिच्छत्तं पि जाइ त्ति सम्मामिच्छादिट्ठिस्स वि चउवीसा लब्भइ। सत्तावीसा सम्मामिच्छद्दिट्ठिं पडुच्च, कहं? मिच्छद्दिट्ठी सम्मत्तं उव्वलेउं सम्मामिच्छत्तसंते वट्टमाणो कोइ सम्मामिच्छत्तं[3] जाइ त्ति काउं। तेवीसा मणुसस्स अट्ठण्हं वरिसाणं उवरिं वट्टमाणस्स वेयगसम्मद्दिट्ठिस्स खवणाए अब्भुट्ठियस्स अणंताणुबंधि-मिच्छत्ते य खविए तेवीसा लब्भइ। तस्सेव सम्मामिच्छत्ते खविए बावीसा। सा य चउसु वि गईसु लब्भइ। किं कारणं? भण्णइ—"पट्ठवगो पुण मणुओ निट्ठवगो होइ चउसु वि गईसु।" ( ) मिच्छत्ते सम्मामिच्छत्ते य खविए पच्छा चउसु वि गईसु उववाओ बद्धाउगं पडुच्च। अट्ठोदए वि एयाणि त्ति वयणाओ।

1 °विण अट्ठा° का1 का2 ॥ 2 तं०—२८। सा1 ॥ 3 °गा प° स ॥ 4 त्त ट्ठाइ त्ति सा1 ॥

पूर्ववत् एव वेयगसम्मद्दिट्ठि-सम्मामिच्छद्दिट्ठीण भावेयव्वाणि। तत्थ वेयगसम्मत्त सम्मामिच्छत्तेण विणा जो अट्ठोदओ सो उवसमसम्मद्दिट्ठिस्स खाइगसम्मद्दिट्ठिस्स वा भवइ। तत्थ उवसमसम्मद्दिट्ठिं पडुच्च अट्ठावीसा चउवीसा य लब्भइ। तत्थ अट्ठावीसा पढमसम्मत्त उप्पाडितस्स, उवसमसेढीओ परिवडमाण वा पडुच्च दो वि लब्भंति। खाइगसम्मद्दिट्ठिस्स एगवीसा लब्भइ। एव अट्ठोदए छ संतट्ठाणाणि। एयाणि छ वि संतट्ठाणाणि सत्तोदए वि तहा भाणियव्वाणि जहा अट्ठोदए। छलोदए वि तिण्णि संतट्ठाणाणि लब्भंति—२८। २४। २१। कह? वेयगसम्मत्त सम्मामिच्छत्तेण विणा छलोदओ हवइ। तत्थ उवसमसम्मद्दिट्ठिं पडुच्च अट्ठावीसा चउवीसा य पूर्ववद् भावयितव्या। एगवीसा खाइगसम्मद्दिट्ठिस्स। एव सत्तरसबंधगस्स सामण्णेण चउसु वि उदयट्ठाणेसु बीस संतट्ठाणाणि।

'तेरेनवबंधगेसु एवेव ठाणाणि' त्ति तेरस-नवविहबंधगाण—देसविरय संजयाण जहा असंजयसम्मद्दिट्ठिस्स चउसु वि उदयट्ठाणेसु भावणा भणिया तहा भाणियव्व। नवरं बावीस-एगवीससंताण परमणो न भाणियव्वो। तत्थ तेरसबंधगस्स तिरिक्खस्स अट्ठावीसा चउवीसा च, एए मोत्तूण सेसा न संभवंति। कह? भण्णइ—तेवीसा बावीसा य खाइगसम्मत्त उप्पाएन्तस्स, सो उप्पाएतो नियमा मणुओ त्ति काउ, तेण णत्थि। एगवीसा तिरिक्खेसु संजयाऽसंजएसु नत्थि। कह? भण्णइ—संखेज्जवासाउएसु तिरिक्खेसु खाइगसम्मद्दिट्ठी ण उववज्जइ, असंखेज्जवासाउएसु उववज्जेज्जा, तत्थ वि देसविरई

१ °गस्स वा स ॥ २ र २८। २४। २३। २२। २१। नव २८। २४। २३। २२। २१। बंध कं०२ ॥ ३ त्ति २८। २४। २३। २२। २१ तेर कं०१ ॥ ४ भाविय कं०१ ॥ ५ °सा ए य। °सा य ए° कं०२ ॥

नत्थि। तम्हा तिण्णि वि मणुयदेसविरएसु भावेयव्वाणि। एवं तेरस-नवबंधगाणं अप्पप्पणो उदये पडुच्च सत्तरस सत्तरस संतट्ठाणाणि भवंति ॥ २१ ॥

पंचविह-चउविहेसुं, छ छक्क सेसेसु जाण पंचेव। पत्तेयं पत्तेयं, चत्तारि[1] उ बंधवोच्छेए ॥ २२ ॥

पंचविहचउविहेसुं छ छक्क० त्ति। पंचविहबंधगस्स दुगोदए वट्टमाणस्स छ संतट्ठाणाणि भवंति[2], तं०—अट्ठावीसा, २८। २४। २१। १३। १२। ११। अट्ठावीसा चउवीसा य उवसमसेढिं पडुच्च। एक्कवीसा दोसु वि सेढीसु। खवगसेढीए जाव अट्ठ कसाया ण[3] खविज्जंति ताव एगवीसा। अट्ठकसाए खविए तेरस। तओ नपुंसगवेए खविए बारस। तओ इत्थिवेए खविए एक्कारस। जाव पुरिसवेयस्स बंधो ताव छण्णोकसाया धरंति। एवं पंचविहबंधगस्स छ संतट्ठाणाणि।

इयाणिं चउव्विहबंधगस्स चउण्हं संजलणाणं अण्णयरोदए वट्टमाणस्स छ संतट्ठाणाणि, तं०—२८। २४। २१। ११। ५। ४। एयाणं छण्हं संतट्ठाणाणं आदिमाणि तिण्णि संतट्ठाणाणि उवसमसेढीए चेव। चउविहबंधगो एक्कारससंतकम्मिगो एक्कोदए। कहं? भण्णइ—नपुंसगवेएण उवट्ठियस्स नपुंसग-इत्थिवेयसंतक्खए पुरिसवेयबंधवोच्छेए य जुगवं कए तस्स एक्कारस संतं। सो य चउव्विहबंधगो अवेयगो सत्त कम्मंसे जुगवं खवेइ, खविए चत्तारि संतं। एमेव इत्थिवेएण वि उवट्ठियस्स, नवरि नपुंसगवेओ पढमं खिज्जइ त्ति। तओ अंतोमुहुत्तेण इत्थिवेयस्स उदयसंतक्खओ पुरिसवेयबंधवोच्छेओ य जुगवं भवइ। एवं वा एक्कारससंतकम्मिओ। पुरिसवेएण उवट्ठियस्स छण्णोकसायखवणकाले पुरिसवेयस्स बंधोदयवोच्छेए

१ °रि य बं° खे३ ॥ २ °ति—२८। का१। °ति—अट्ठा° का२ ॥ ३ ण खिज्जंति का२ ॥ ४ °मादि तिण्णि स ॥ ५ °यगस्स ता१ ॥

जुगव कए तओ पचसतकम्मिओ भवइ समयूणदुयावलियमेव काल । पुरिसवेए खीणे चउसतकम्मिगो अंतोमुहुत्तकाल ।

'सेसेसु जाण पचेव पत्तेय पत्तेय' ति सेसेसु तिविहबधगाइसु एकेकम्मि उदयट्ठाणे पत्तेय पत्तेय पच पच सतट्ठाणाणि । तत्थ तिविहबधगस्स कोहवज्जाण तिण्ह सजलणाण अण्णयरवेयगस्स २८ । २४ । २१ । ४ । ३ सतट्ठाणाणि भवति । अट्ठावीस-चउवीस एकवीसा य उवसमसेढिं पडुच्च लब्भति । चत्तारि तिण्णि य खवगसेढीए लब्भति । कह ? कोहसजलणाए पढमट्ठिईए आवलियासेसे बधो उदओ उदीरणा य जुगव फिट्टति, समऊणदुआवलियबद्ध पढमट्ठिती य धरइ, त पि बद्ध सचि एण कालेण खय गच्छइ, ताव तिविहबधगस्स चउविह एकोदए सत लब्भइ; कोहसंजलणाए खवियाए तिण्णि भवति अंतो मुहुत्तकाल । एव तिविहबधगस्स पच सतट्ठाणाणि । एमेव दुविहबधगस्स वि माया-लोभाण अण्णयर वेयमाणस्स २८ । २४ । २१ । ३ । २[1] । तिण्णि वे यं पडुच्च खवगसेढिं लब्भति—माणसजलणाए बधोदए फिट्टे समऊणदुआवलियबद्ध पढमट्ठिइए लब्भइ, त खविज्जत खविज्जत समयऊणाहिं दोहिं आवलियाहिं खीयइ, ताव सत तिण्णि । तओ माणसजलणाए खीणाए दोण्णि लब्भति । एव दुविहबधगस्स सव्वाणि पच सतट्ठाणाणि । एगविहबधगस्स पच संतट्ठाणाणि—२८ । २४ । २१ । २ । १ । तत्थ एकम्मि लोभोदए वट्टमाणस्स अट्ठावीसाईण तिण्ह भावणा जहा तिविहबधगस्स । खवगसेढीए दोण्णि एक्क च दो

१ इत आरभ्य सर्वेषु मोहनीयसत्तास्थानेषु 'समयूणदुयावलिय०" इत्येतत्स्थाने श्रीमलयगिरीयटीकायां समयद्वयोनावलिकाद्विक०" इति मता न्तर लभ्यते ॥ २ एकम्मि सं को२ ॥ ३ स्स पच २८ । को१ ॥ ४ सेस च उ को२ ॥ ५ मण्णति ३ ॥ ६ २ । पूर्ववत् । ति को१ ॥ ७ थ खवगसेढिं पडुच्च ल को१ ॥

संतट्ठाणाणि लब्भंति । तत्थ दोण्णि मायासंजलणाबंधोदए फिट्टे, समयऊणदुयावलियभावना पूर्ववत् । तओ मायाए खीणाए एक्कं लोभसंजलणा एव । इयाणिं अबंधगस्स 'चत्तारि उ बंधवोच्छेए' त्ति बायर[लोभ]बंधोदए वोच्छिण्णे सुहुमलोभोदए वट्टमाणस्स चत्तारि संतट्ठाणाणि लब्भंति, तं जहा—२८ । २४ । २१ । १ । आइल्लाणि तिण्णि उवसामगस्स । एगं लोभसंजलणा-संतं खवगसेढीए लब्भइ, सेसा खविय त्ति काउं लोभं वेएइ, सो चेव संतं ति । एवमबंधगस्स चत्तारि संतट्ठाणाणि ॥ २२ ॥

दस नव पन्नरसाइं, बंधोदय-सन्तपगइठाणाइं[2] । भणियाइं[3] मोहणिज्जे, एत्तो णामं परं वोच्छं ॥२३॥

दस नव पण्णरसाइं० गाहा । कंण्ठचा[4] । मोहणिज्जस्स[5] बंधोदय-संताणं संवेहो भणिओ । 'एत्तो नामं परं वोच्छं' ति इतो परं नामस्स पगइसमुक्कित्तणा बंधोदय-संतट्ठाणनिरूवणा संवेहो य भण्णइ ॥ २३ ॥

तत्थ पगइसमुक्कित्तणा, तं०—नामस्स कम्मस्स बायालीसं पिंडपगडीओ गइनामाइ० । एएसिं विवरणा भेओ य जहा सयगे[6] तहा भाणियव्वो । तत्थ पुव्वं बंधट्ठाणनिरूवणा—

तेवीस पन्नवीसा, छव्वीसा अट्ठवीस[7] उगुतीसा । तीसेक्कतीसमेगं, बंधट्ठाणाणि[8] नामस्स ॥ २४ ॥

तेवीस पण्णवीसा० गाहा । २३ । २५ । २६ । २८ । २९ । ३० । ३१ । १ एगमिति, एयाणि सामण्णेण चउगइए अहिगिच्च

---

१ °तं । ए° सं ॥ २ °पयडिठाणाणि । खे३ ॥ ३ °याणि मो° खे३ ॥ ४ °कंठा । मो° का२ ॥ ५ °ज्जबंधो° का२ ॥ ६ पश्यन्तु शतकप्रकरणस्य ३८-३९ गाथे तच्चूर्णि च ॥ ७ °स गुणती° खे३ ॥ ८ °णाइ ना° खे२ ॥

अट्ठ बंधट्ठाणाणि । तत्थ तिरियगइपाउग्गं बंधमाणस्स पंच बंधट्ठाणाणि, तं जहा—२३। २५। २६। २९। ३०। तत्थ एगिंदियपाउग्गं बंधमाणस्स तिण्णि बंधट्ठाणाणि, तं०—२३। २५। २६। तत्थ तेवीसा इमा—तिरियगइ एगिंदियजाइ ओरालिय तेय कम्मयसरीरं हुंड संठाण वण्ण गंध रस फास तिरियगइपाउग्गाणुपुव्वी अगरुयलहुग उवघाय थावर बायर-सुहुमेगयर अपज्जत्तगं पत्तेग-साहारणाणमेगयर अथिर असुह दूभग अणाएज्ज अजसं निमेणं ति २३। एएसिं तेवीसाए कम्मपगईण एगं चेव बंधट्ठाणं एगिंदियअपज्जत्तगसंजुत्तं बंधमाणस्स मिच्छादिट्ठिस्स । एत्थ तेवीसाए चत्तारि भंगा, तं जहा—बायरं अपज्जत्तगं पत्तेयं १ बायर अपज्जत्त साहारण २ सुहुम अपज्जत्तग पत्तेय ३ सुहुम अपज्जत्तग साहारण ४ एवं सव्वे वि चत्तारि। एसा तेवीसा पराघाय-उस्साससहिया पणुवीसा भवइ, सा तिरियगइयाइ जाव य थावरं ताव अविकप्पा, तओ उवरि एवं भाणियव्वं—थावरं बायर-सुहुमाणमेगयरं पज्जत्तगं पत्तेय साहारणाणमेगयरं थिरा ऽथिराणमेगयरं सुभा ऽसुभाणमेगयरं दूभगं अणाएज्जं जसा ऽजसाणमेगयरं निमेणमिति २५। एयासिं पणुवीसाए पगडीण एगं चेव बंधट्ठाणं एगिंदियपज्जत्तगसहियं बंधमाणस्स मिच्छादिट्ठिस्स । एयम्मि पणुवीसे एगिंदियपज्जत्तगपाउग्गं बंधमाणस्स वीसं भंगा, तं जहा—बायर पज्जत्त पत्तेय-थिरा ऽथिर-सुभा ऽसुभ-जसा ऽजसेहिं अट्ठ भंगा हवंति, बायर पज्जत्त य साहारण थिरा ऽथिर-सुभा ऽसुभ-अजसकित्तीहिं चत्तारि भंगा, सुहुम पज्जत्त य पत्तेय-साहारण थिरा ऽथिर सुहा ऽसुह अजसकित्तीहिं अट्ठ भंगा, एवं सव्वसमासो वीसं । सुहुम साहारणेहिं जसकित्तीए बंधो नत्थि त्ति। एसा चेव पणुवीसा आयावुज्जोयएगयरसहिया छव्वीसा भवति, नवरि एवं भाणि

१ णाणि—२३ कां२ ॥ २ मेणमिति। ए कां१ कां२ ॥ ३ वे य च कां१ ॥ ४ वं—धाय कां२ ॥

यव्वं—पराघायं ऊसासं आयावुज्जोयाण एगयरं थावरं बायरं पज्जत्तं पत्तेयं थिरा-ऽथिराणमेगयरं सुभा-ऽसुभाणमेगयरं दूभगं अणाएज्जं जसकित्ति-अजसकित्तीणमेगयरं निमेणमिति २६ । एयासिं छवीसाए पगडीणं एगं चेव बंधट्ठाणं एगिंदियपज्जत्तगपाउग्गं आयावुज्जोयएगयरसहियं बंधमाणस्स मिच्छद्दिट्ठिस्स । एयाए छवीसाए सोलस भंगा आयावुज्जोय-थिरा-ऽथिर-सुभा-ऽसुभ-जसा-ऽजसेहिं उट्ठेंति, आयावुज्जोवा सुहुम-साहारणेहिं बंधं न एंति त्ति काउं । एगिंदियपाउग्गा बंधा भणिया ।

इयाणिं बेइंदियपाउग्गं बंधमाणस्स तिण्णि बंधट्ठाणाणिं—२५ । २९ । ३० । तत्थ पणुवीसा—तिरियगइ बेइंदियजाइ ओरालियं तेयगं कम्मगसरीरं हुंडसंठाणं असंपत्तसेवट्टसंघयणं ओरालियंगोवंगं वण्ण गंध रस फास तिरियाणुपुव्वी अगरुलहु उवघाय तस बायर अपज्जत्तगं पत्तेयं अथिरं असुहं दूभगं अणाएज्जं अजसकित्ति निमेणमिति । एयासिं पणुवीसाए पगडीणं एगं चेव बंधट्ठाणं बेइंदियअपज्जत्तगपाउग्गं बंधमाणस्स मिच्छद्दिट्ठिस्स । एत्थ अपसत्थपरियत्तमाणीहिं एगो चेव भंगो, अपज्जत्तगेण पसत्थपरिवत्तमाणीओ बंधं न एन्ति त्ति काउं । एसा चेव पणुवीसा पराघाय-ऊसास-अपसत्थविहायगति-पज्जत्तग-दूसरसहिया अपज्जत्तगरहिया एगूणतीसा भवति । नवरि एवं भाणियव्वं—उवघायं पराघायं ऊसासं अपसत्थविहायगइ तसं बायरं पज्जत्तगं पत्तेयं थिरा-ऽथिराणमेगयरं सुभा-ऽसुभाणमेगयरं दूभगं दूसरं अणाएज्जं जसा-ऽजसाणमेगयरं निमेणमिति । एयासिं एगूणतीसाए पगतीणं एगं चेव बंधट्ठाणं तं बंधमाणस्स मिच्छद्दिट्ठिस्स । एत्थ अट्ठ भंगा थिरा-ऽथिर-सुहा-ऽसुह-जसा-जसेहिं । एसा चेव एगूणतीसा उज्जोयसहिया तीसा भवइ । एत्थ वि ते चेवं अट्ठ भंगा । एवं

१ °णिं बेंदि° का२ । एवमन्यत्रापि ॥ २ °णि, तं जहा—२५ का२ ॥ ३ °त्तं सेव° सं ॥ ४ °व भंगा का१ ॥

बेइंदिय चउरिंदियपाउग्गं बंधमाणस्स तिण्णि तिण्णि बंधट्ठाणाणि, नवरं अप्पप्पणो जाई भाणियव्वा ।

इयाणिं पंचिंदियतिरिक्खपाउग्गं बंधमाणस्स तिण्णि बंधट्ठाणाणि, तं जहा—२५ । २९ । ३० । तत्थ पणुवीसा जहा बेइंदियअपज्जत्तगपाउग्गं बंधमाणस्स तहा चेव, नवरं पंचिंदियजाती भाणियव्वा । एत्थ एगो चेव भंगो । एगूणतीसा इमा—तिरियगइ पंचिंदियजाइ ओरालियं तेय कम्मगं हुंड संठाणं असंपत्त ओरालियगोवंग वण्णादि ४ तिरियाणुपुव्वी अगरुलहु उवघायं पराघायं ऊसासं पसत्था ऽपसत्थविहायगईणं एगा तस बायर पज्जत्त पत्तेय थिरा ऽथिराणमेगयरं सुहा ऽसुहाणमेगयरं सुभग दूभगाणमेगयरं सुस्सर दुस्सराणमेगयरं आएज्ज अणाएज्जयाणमेगयरं जसकित्ति अजसकित्तीणं मेगयरं निमेणमिति । एयासिं एगूणतीसाए पगतीणं एगं बंधट्ठाणं तं बंधमाणस्स मिच्छद्दिट्ठिस्स । एसा पढमा एगूणतीसा । हुंड असंपत्तं च सासणो ण बंधति त्ति बितिया एगूणतीसा एवं चेव, नवरं पंचण्ह संठाणाणं पंचण्ह संघयणाणमेक्कयरं तु, तं बंधमाणस्स मिच्छद्दिट्ठिस्स वा सासणसम्मद्दिट्ठिस्स व त्ति भाणियव्वं । एत्थ एगूणतीसे छायालसयाणि अट्ठुत्तराणि भंगाणं भवंति ४६०८ । छ संठाणाणि छसंघयणं पसत्था ऽपसत्थविहायगति थिरा ऽथिर सुहा ऽसुह सुभग दूभग सुस्सर-दूसर आएज्ज अणाएज्ज जसकित्ति-अजसकित्तीहिं भंगा कायव्वा ४६०८ । पढमा एगूणतीसा उज्जोयसहिया तीसा भवति, सा मिच्छद्दिट्ठिस्स । बितिया एगूणतीसा उज्जोयसहिया तीसा भवति, सा मिच्छद्दिट्ठिस्स वा सासणसम्मद्दिट्ठिस्स वा । भंगा जत्तिया एगूणतीसे तत्तिया चेव एत्थ वि । तिरियपाउग्गं समत्तं ।

---

१ त०—२५ कां१ कां२ ॥ २ सेवार्तसंहननमिश्रं ॥ ३ हा तस स ॥ ४ णमेगयरं त° कां२ ॥ ५ °यबंधपाउ° कां२ ॥

तत्थ पणुवीसा जहा बेइंदियअप-
तत्थ मणुयगइपाउग्गं बंधमाणस्स तिण्णि बंधट्ठाणाणि, तं०—२५ । २९ । ३० । तत्थ पणुवीसा जहा बेइंदियअप- मणुयगइपाउग्गाणुपुव्वी य भाणियव्वा । एत्थ एगो चेव
ज्जत्तगपाउग्गं बंधमाणस्स तहा चेव । नवरं मणुयगइ पंचिंदियजाइ मणुयगइपाउग्गाणुपुव्वी य भाणियव्वा । एत्थ एगो चेव
भंगो । एगूणतीसा तिविहा । तत्थ पढमा जहा पंचिंदियतिरिक्खाणं तहा चेव । बितिया वि एगूणतीसा जहा [1]पंचिंदियति-
रियाणं तहा चेव । नवरं आद्यन्तवर्जानि संघयण-संठाणाणि भाणियव्वाणि । सा मिच्छद्दिट्ठि-सासणाणं । तत्थ तइया एगूण·
तीसा मणुस्सगति [2]पंचिंदिय० ओरालिय तेयग कम्मग समचउरंससंठाण ओरालियंगोवंग वज्जरिसभनारायसंघयणं वण्ण
गंध रस फास मणुयाणुपुव्वि अगरुलहु उवघाय पराघाय ऊसास पसत्थविहायगइ तसं बायरं पज्जत्तगं पत्तेयं थिरा-ऽथिर[3]०
सुहा-ऽसुहाण एगयरं सूभगं सुस्सरं आदेज्जं जसा-ऽजसाणमेगयरं निमेणमिति । एयासिं एगूणतीसाए पगतीणं एगं चेव
बंधट्ठाणं तं बंधमाणस्स मिच्छद्दिट्ठिस्स वा सासणस्स वा सम्मामिच्छद्दिट्ठिस्स वा असंजयसम्मद्दिट्ठिस्स वा । एसा [4]तइया
एगूणतीसा । एत्थ एगूणतीसाए सामण्णेण छायालसयाणि अट्ठुत्तराणि भंगाण ४६०८ । छसंठाण६-छसंघयण३६-पसत्था-
ऽपसत्थविहायगति७२-थिरा ऽथिर१४४-सुहा-ऽसुह२८८-सुभग-दूभग५७६-सुस्सर-दूसर११५२-आएज्जा-ऽणाएज्ज २३०४जसा-
ऽजसेहिं ४६०८ उट्ठंति । इयाणि तीसा भण्णइ—जा तइया एगूणतीसा सा तित्थयरसहिया तीसा भवति । एयासिं
तीसाए पगईणं एगं चेव बंधट्ठाणं, तं तित्थयरसहियं बंधमाणस्स असंजयसम्मद्दिट्ठिस्स । एयं देव-नेरइया बंधंति । एत्थ अट्ठ
भंगा थिरा० २ सुहा० २ जसा० २ एएहिं कायव्वा । मणुयगइपाउग्गं [5]सम्मत्तं ।

---

१ पंचेंदि° का२, एवमन्यत्रापि ॥ २ पञ्चेन्द्रियजाति ॥ ३ स्थिरा-स्थिरयोरेकतरत् ॥ ४° सा तिइया का१ । तृतीया ॥ ५ समत्तं । का१ का२ ॥

इयाणिं देवगइपाउग्ग। तत्थ चत्तारि बंधट्ठाणाणि—२८। २९। ३०। ३१। तत्थ अट्ठावीसा देवगति पंचिंदिय० वेउव्विय तेय कम्म समचउरंसं वेउव्वियअंगोवंग वण्णादि ४ देवाणुपुव्वि अगरुलहु उवं० परा० ऊसास पसत्थविहा० तस बादर पज्जत्त पत्तेय थिरा०२ सुहा०२ सुभग सुस्सर आएज्ज जसकित्ति अजसकित्तीणमेगयर निमेणमिति। एयाण अट्ठावीसाए पगतीण एक्कं बंधट्ठाणं तं बंधमाणस्स मिच्छ० सासण० सम्मामिच्छ० असंजयसम्मद्दिट्ठि० संजयासंजय० संजयस्स वा। एत्थ अट्ठावीसाए अट्ठ भंगा थिरा ऽथिर सुहा-ऽसुह-जसा ऽजसेहिं कायव्वा। एसा चेव अट्ठावीसा तित्थयरसहिया एगूणतीसा भवति। एत्थ वि ते चेव अट्ठ भंगा। तं देवगइपाउग्गं असंजयसम्मद्दिट्ठियादओ बंधति। इदाणिं तीसा—देवगइ पंचिंदिय० वेउव्विय आहारग तेय कम्म समचउरंस वेउव्वियंगोवंगा आहारयंगोवंगा वण्णादि ४ देवाणुपुव्वि अगरुलहु उवघाय परा० ऊसास विहेगगई पसत्था तस बादर पज्जत्त पत्तेय थिर सुभ सुभग सुस्सर आएज्ज जसकित्ति निमेणमिति। एयासिं तीसाए पगडीण एगं बंधट्ठाणं, आहारगदुगसहियं देवगइपाउग्गं तं बंधमाणस्स अपमत्तसंजयस्स वा अपुव्वकरणस्स वा। एत्थ भेदो नत्थि, विसुद्धो बंधइ त्ति। एसा चेव तीसा तित्थयरसहिया एगतीसा भवति। एत्थ वि नत्थि भेदो देवगइपाउग्गं सम्मत्तं।

इदाणिं निरयगइपाउग्गं बंधमाणस्स एक्कं चेव बंधट्ठाणं अट्ठावीसा, तं जहा—निरयं० पंचिंदिय० वेउव्विय तेय कम्म हुंड वेउव्वियंगोवंग वण्णादि ४ निरयाणुपुव्वि अगरु० उव० परा० ऊसास अपसत्थविहा० तस बादर पज्जत्त पत्तेय अथिर असुभ

१ °घाय प कां२ ॥ २ थिरा ऽथिर सुहा-ऽसुह सु कां२। स्थिरा ऽस्थिरयोरेकतरत्, शुभा ऽशुभयोरेकतरदित्यर्थः ॥ ३ विहगइपसत्थ त ब ॥ ४ समत्त कां१ ॥ ५ यगति प कां२ ॥

दूभग दूसर अणाएज्ज अजस निमेणमिति। एयासिं अट्ठावीसाए पगडीणं एक्कं बंधट्ठाणं निरयगइपाउग्गं तं बंधमाणस्स[1] मिच्छद्दिट्ठिस्स। एत्थ नत्थि भंगो अविशुद्धत्वात्। 卐 "एगं"[2] ति देवगइपाओग्गे बंधे समत्ते जसकित्तीए चेव एगाए बंधो। एत्थ एगो भंगो। 卐 "एक्कं" ति देवगइपाउग्गे बंधे वोच्छिण्णो अपुव्वकरणाईणं तिण्हं एक्का जसकित्ती बज्झइ। एत्थ नत्थि विगप्पो ॥ २४ ॥

सव्वबंधाणं[3] भेयनिरूवणा भण्णइ—

चउ[4] पणुवीसा सोलस, नव बाणउई "सआ य अडयाला[5]। इगियालुत्तर छायालसया[6] एक्केक्कबंधविही[7] ॥ पाढतरं।

इयाणिं तेवीसादि बंधट्ठाणेसु[9] भंगसंखा भण्णइ—एगिंदियअपज्जत्तपाउग्गं तेवीसं बंधमाणस्स सव्वे चत्तारि भंगा। एगिंदियपज्जत्तगपाउग्गं पणुवीसं बंधमाणस्स वीसं भंगा, बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियतिरिय-मणुयाऽपज्जत्तगपाउग्गं बंधमाणाणं एक्केक्को भंगो, सव्वे पणुवीसं। छव्वीसे आयावेण अट्ठ, उज्जोएण अट्ठ, सव्वे सोलस। अट्ठावीसे देवगतीए अट्ठ, निरयगईए एगो, सव्वे नव। एगूणतीसे पंचिंदियतिरियपाउग्गं बंधमाणस्स छायालीसं सयाणि अट्ठुत्तराणि, मणुस्सगतीए वि एत्तिया चेव, बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियपाउग्गे एक्केक्के अट्ठ अट्ठ भंगा, देवगइपाउग्गं तित्थयरसहियं एगूणतीसं बंधमाणस्स

---

१ °स्स। एत्थ का१ ॥ २ स्वस्तिकद्विकमध्यग पाठ सप्रतावेव ॥ ३ °णं निरू° का१। °णं भंगनिरू° का२ ॥ ४ नास्तीय गाथा खे१खे२-प्रत्यो ॥ ५ सया य का१। सयाइ अ° खे२ ॥ ६ °ला। एयालु° खे२ ॥ ७ °या इक्कि° खे२ ॥ ८ °ही ॥ अन्यकर्तृका चेयं गाथा। इया° का२ ॥ ९ °सु बंधसं° स ॥

अट्ठ । सव्वे समुइया बाणउइसयाणि अडयालाणि । तीसबंधे पंचिंदियतिरियपाउग्ग बंधमाणस्स छायालसयाणि अट्ठुत्तराणि, बेइंदिय-तेइंदिय चउरिंदियपाउग्ग० अट्ठ अट्ठ भंगा, मणुयगइपाउग्ग तित्थयरसहिय तीस बंधमाणस्स अट्ठ, देवगइपाउग्गं आहारगसहिय तीस बंधमाणस्स एक्को भंगो । सव्वसमुदओ छायालसयाणि एगचत्तालाणि । एगतीस बंधमाणस्स एगो भंगो । एगविह बंधमाणस्स एगो भंगो । एवं बंधट्ठाणाणि सविगप्पाणि भणियाणि ।

इयाणिं उदयट्ठाणाणि भण्णंति—

[1]वीसिगवीसा चउवीसगाति एगाहिया उ इगतीसा। उदयट्ठाणाणि भवे, नव अट्ठ य होंति नामस्स॥२५॥

२० । २१ । २४ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । ९ । ८ । एयाणिं बारस सामण्णेण संसारत्थाण उदयट्ठाणाणि । तत्थ एगिंदियपाउग्गाणि पंच उदयट्ठाणाणि—२१ । २४ । २५ । २६ । २७ । संसारत्थाण सजोगीण जीवाण नामकम्मम्मि बारस धुवोदया, तं जहा—तेजइग कम्मइग सरीर वण्णाई ४ अगरुलहु थिर अथिर सुभ असुभ निमेणमिति । तत्थ एगवीसा—तिरियगई एगिंदियजाति तिरियाणुपुव्वी थावरं बादर-सुहुमाण एगयर दूभग अणाएज्ज जसकित्ति-अजसकित्तीणयेगयरं पज्जत्ता ऽपज्जत्ताणमेगयरं, एया णव धुवोदयसहिया एक्कवीसा अंतरगईए वट्टमाणस्स ।

---

१ उई स° कां१ । उई स कां२ ॥ २ °ति—इगवीस चउव्वीसा० गाहा । इगवीसाइ-इगतीसंताणि उदयट्ठाणाणि भवे नव अट्ठ य होंतिनामस्स २१ । २४ । सं ॥ ३ वीसेगवीसत्व सं१ खे२ खे३ ॥ ४ वीस च कां१ ॥ ५ °गादि इगतीसग ति एग-हिया । उ खे१ खे२ खे३ ॥ ६ गाथेयं चूर्णावक्षरशोऽवतारिता ॥ ७ णि एकारस य ॥

एत्थ एकवीसाए पंच भंगा, तं जहा—बायरं पज्जत्तगं दूभगं अणाएज्जं जसकित्ती एको भंगो, बादरं पज्जत्तगं दूभगं अणाएज्जं अजसं एको, बायरं अप्पज्जत्तगं दूभगं अणाएज्जं अजसं एको, एवं बादरेण तिण्णि भंगा। सुहुमे छूढे सुहुमं पज्जत्तं दूभगं अणाएज्जं अजसं एको, सुहुमं अपज्जत्तं दूभगं अणाएज्जं अजसं एको, एवं सुहुमेण विण्णि[1] २। सुहुमेणं अपज्जत्तगेण य सह जसकित्तीए[2] उदओ नत्थि। सव्वसमासो पंच। तओ सरीरत्थस्स[3] आणुपुव्विं अवणेऊण ओरालियसरीरं हुंडसंठाणं उवघायं पत्तेय-साहारणाणमेगयरे छूढे चउवीसोदओ। एत्थ एकारस भंगा—बायरं पज्जत्तगं पत्तेय साहारण-जसा-ऽजसेहिं चत्तारि ४, बायरा-ऽपज्जत्त-पत्तेय-साहारण-अजसेणं दोण्णि २, एवं बायरे छब्भंगा। सुहुम-पज्जत्ता-ऽपज्जत्तग-पत्तेय-साहारण अजसेणं चत्तारि ४, सुहुमेण अपज्जत्तेण य जसकित्तीए उदओ नत्थि त्ति सव्वे दस १०। अण्णो बायरवाउकाइयस्स ओरालियं छड्डेऊण वेउव्वियं करेंतस्स करणअपज्जत्तगकाले चउवीसा लब्भइ। कहं? भण्णइ—पव्वुत्ताओ एकवीसाओ आणुपुव्विमवणेऊणं वेउव्वियसरीर-हुंडसंठाण-उवघाय-पत्तेगे य छूढे चउवीसा। एत्थ एको भंगो। किं कारणं? तेउकाय-वाउकाइगेसु साहारण-जसकित्तीओ नत्थि त्ति काउं। एवं चउवीसोदयभंगा सव्वे एकारस ११। तस्सेव सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तगस्स तम्मि चेव पज्जत्तगसहियाए चउवीसाए पराघाए छूढे पणुवीसा। एत्थ सत्त भंगा, तं०—बायर-पज्जत्तग-पत्तेय-साहारण-जसा-ऽजसेहिं चत्तारि, सुहुम-पज्जत्त-पत्तेग-साहारण-अजसेणं दोण्णि २, वेउव्वियसरीरस्स सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तगस्स पराघाए छूढे पणुवीसा, एत्थ एगो भंगो। एवं पणुवीसोदए सव्वे सत्त ७। तस्सेव आणापाणुपज्जत्तीए पज्जत्तगस्स ऊसासे छूढे छव्वीसं। एत्थ वि

---

१ °ण वेण्णि। का१। द्वौ भङ्गावित्यर्थ ॥ २ °त्तीउद सं ॥ ३ °स्स एको(कं) आ° का२ ॥

अट्ठ। सव्वे समुइया चाणउइसयाणि अडयालाणि। तीसबंधे पंचिंदियतिरियपाउग्गं बंधमाणस्स छायालसयाणि अट्ठुत्तराणि, बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियपाउग्ग० अट्ठ अट्ठ भंगा, मणुयगइपाउग्गं तित्थयरसहियं तीसं बंधमाणस्स अट्ठ, देवगइपाउग्गं आहारगसहियं तीसं बंधमाणस्स एक्को भंगो। सव्वसमुदओ छायालसयाणि एगचत्तालाणि। एगतीसं बंधमाणस्स एगो भंगो। एगविहं बंधमाणस्स एगो भंगो। एवं बंधट्ठाणाणि सविगप्पाणि भणियाणि।

इयाणिं उदयट्ठाणाणि भण्णंति—

[1]वीसिगवीसा[2] चउवीसगाओ[3] एगाहिया[4] उ इगतीसा। उदयट्ठाणाणि भवे, नव अट्ठ य होंति नामस्स॥२५॥

२०।२१।२४।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१।९।८। एयाणि बारस सामण्णेण संसारत्थाण उदयट्ठाणाणि। तत्थ एगिंदियपाउग्गाणि पंच उदयट्ठाणाणि—२१।२४।२५।२६।२७। संसारत्थाण सजोगीण जीवाण नामकम्मस्स बारस धुवोदया, तं जहा—तेजइग कम्मइग सरीर वण्णाई ४ अगरुलहु थिर अथिरं सुभ असुभ निमेणमिति। तत्थ एगवीसा—तिरियगई एगिंदियजाति तिरियाणुपुव्वी थावर बादर-सुहुमाण एगयरं दूभग अणाएज्ज जसकित्ति-अजसकित्तीणमेगयरं पज्जत्ता ऽपज्जत्ताणमेगयरं, एया णव धुवोदयसहिया एक्कवीसा अंतरगईए वट्टमाणस्स।

---

१ उद सं° को१। उई स ता२॥ २ लि—इगवीस चउव्वीसा० गाहा। इगवीसाइ इगतीसंताणि उदयट्ठाणाणि भवे नव अट्ठ य होंतिनामस्स २१।२४। सं॥ ३ वीसेगवीसच्च स१ खे२ खे३॥ ४ वीसं च को१॥ ५ गादि इगतीसंत त्ति एगाहिया। उ खे१ खे२ खे३॥ ६ गाथेयं चूर्णिकृताऽवतारिता॥ ७ णि पकारस्स सं॥

एत्थ एक्कवीसाए पंच भंगा, तं जहा—बायरं पज्जत्तगं दूभगं अणाएज्जं जसकित्ती एक्को भंगो, बादरं पज्जत्तगं दूभगं अणाएज्जं अजसं एक्को, बायरं अप्पज्जत्तगं दूभगं अणाएज्जं अजसं एक्को, एवं बादरेण तिण्णि भंगा। सुहुमे छूढे सुहुमं पज्जत्तं दूभगं अणाएज्जं अजसं एक्को, सुहुमं अपज्जत्तं दूभगं अणाएज्जं अजसं एक्को, एवं सुहुमेण[1] बिण्णि २। सुहुमेणं अपज्जत्तगेण य सह जसकित्तीए[2] उदओ नत्थि। सव्वसमासो पंच। तओ सरीरत्थस्स[3] आणुपुव्विं अवणेऊण ओरालियसरीरं हुंडसंठाणं उवघायं पत्तेय-साहारणाणमेगयरे छूढे चउवीसोदओ। एत्थ एक्कारस भंगा—बायरं पज्जत्तगं पत्तेय साहारण-जसा-ऽजसेहिं चत्तारि ४, बायरा-ऽपज्जत्त-पत्तेय-साहारण-अजसेणं दोण्णि २, एवं बायरे छब्भंगा। सुहुम-पज्जत्ता-ऽपज्जत्तग-पत्तेय-साहारण अजसेणं चत्तारि ४, सुहुमेण अपज्जत्तेण य जसकित्तीए उदओ नत्थि त्ति सव्वे दस १०। अण्णो बायरवाउकाइयस्स ओरालियं छड्डेऊण वेउव्वियं करेंतस्स करणअपज्जत्तगकाले चउवीसा लब्भइ। कहं? भण्णइ—पव्वुत्ताओ एक्कवीसाओ आणुपुव्विमवणेऊणं वेउव्वियसरीर-हुंडसंठाण-उवघाय-पत्तेगे य छूढे चउवीसा। एत्थ एक्को भंगो। किं कारणं? तेउकाय वाउकाइगेसु साहारण-जसकित्तीओ नत्थि त्ति काउं। एवं चउवीसोदयभंगा सव्वे एक्कारस ११। तस्सेव सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तगस्स तम्मि चेव पज्जत्तगसहियाए चउवीसाए पराघाए छूढे पणुवीसा। एत्थ सत्त भंगा, तं०—बायर-पज्जत्तग-पत्तेय-साहारण-जसा-ऽजसेहिं चत्तारि, सुहुम-पज्जत्त-पत्तेग-साहारण-अजसेणं दोण्णि २, वेउव्वियसरीरस्स सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तगस्स पराघाए छूढे पणुवीसा, एत्थ एगो भंगो। एवं पणुवीसोदए सव्वे सत्त ७। तस्सेव आणापाणुपज्जत्तीए पज्जत्तगस्स ऊसासे छूढे छव्वीसं। एत्थ वि

[1] °ण वेण्णि। का१। द्वौ भङ्गावित्यर्थ॥ [2] °त्तीउद स॥ [3] °स्स एक्को(क्कं) आ° का२॥

ते चेव सत्त भगा ७ । अहवा एयम्मि चेव उदए ऊसासे अणुदिण्णे आयावुज्जोयाण एगयरे उइण्णे छवीसा । तत्थ आयावेण पत्तेय-जसा ऽजसेहिं दो भगा, उज्जोवेण पत्तेग-साहारण जसा ऽजसेहिं चत्तारि भगा, तेउकाइय-वाउकाइयाण आयावुज्जोव जसकित्तीओ नत्थि । सव्व छवीसोदए तेरस भगा १३ । एत्थ चेव ऊसासछवीसे आयावुज्जोयाण एगयरे छूढे सत्तावीसोदओ हव । एत्थ छब्भगा, तं०—आयावं पत्तेय जसा ऽजसेहिं दोण्णि २, उज्जोय पत्तेग साहारण जसा ऽजसेहिं चत्तारि ४, एव

सव्वोदया बायालीस ४२ ।

बेइंदियपाउग्गाणि छ उदयट्ठाणाणि, तं०—२१ । २६ । २८ । २९ । ३० । ३१ । एत्थ एक्कवीसा तिरियगइ इ तिरियाणुपुव्वि तस बायरं पज्जत्ता ऽपज्जत्ताणमेगयर दूभग अणाएज्ज जसा जसाणमेगयर, एए नव धुवोदयसहिया ीसा भवइ, बेइंदियस्स पज्जत्तगस्स वा अपज्जत्तगस्स वा अंतरगइए वट्टमाणस्स । एत्थ एक्कवीसे तिण्णि भगा—पज्जत्तग जसा ऽजसेहिं दो भगा, अपज्जत्तगा ऽजसकित्तीए एगो भगो, सव्वे तिण्णि । एव तेइंदिय चउरिंदियाण तिण्णि तिण्णि भगा । तस्सेव बेइंदियस्स सरीरत्थस्स आणुपुव्विमवणेत्ता ओरालिय हुंड ओरालियगोवग छेवट्ठसंघयण उवघाय पत्तेगेसु छूढेसु छवीसा । १ २४ णेण भगा । तस्सेव सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयस्स पराघाए अपसत्थविहगे य छूढे अट्ठावीसा । तोदओ पसत्थविहायगती य नत्थि त्ति काउ । तस्सेव आणापाणुपज्जत्तीए पज्जत्तगस्स । चेव दो भगा । अहवा एयम्मि चेव अट्ठावीसे ऊसासे अणुदिण्णे उज्जोवे वा उइण्णे

२ ॥ ३ °तया ग कां१ ॥

एगूणतीसा । एत्थ वि ते चेव दो भंगा । सव्वे वि चत्तारि । तस्सेव ऊसासएगूणतीसे भासापज्जत्तीए पज्जत्तगस्स दूसर-सूस-राणमेगयरे छूढे तीसा भवइ । एत्थ चत्तारि भंगा सुस्सर-दूसर-जसा-ऽजसेहिं कायव्वा ४ । अण्णे भणंति—सुस्सरं विगलिं-दियाण णत्थि तण्ण, संतकम्मे उक्तत्वात् । अथवा तम्मि चेव ऊसासएगूणतीसे सरे अणुदिण्णे उज्जोए वा उइण्णे तीसा । एत्थ दो भंगा उज्जोव-जसा-ऽजसेहिं । सव्वे छब्भंगा । तम्मि चेव सरसहिए तीसे उज्जोवे छूढे एगतीसा भवइ । एत्थ चत्तारि भंगा दुस्सर-सूसर-जसा-ऽजसेहिं कायव्वा । सव्वुदयविगप्पा बेइंदियाणं बावीसा । एवं तेइंदिय चउरिंदियाण वि । सव्वे वि छावट्ठि ६६ । विगलिन्दियपाउग्गं सम्मत्तं ।

इयाणिं पंचिंदियतिरियपाउग्गाणि अट्ठ उदयट्ठाणाणि, तं०—२१ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । एत्थ एकवीसा तिरिक्खगइ पंचेंदियजाइ तिरिक्खाणुपुव्वि तसं बादरं पज्जत्ता-ऽपज्जत्ताणमेगयरं सुभग-दूभगाणमण्णयरं आएज्ज-अणाएज्जाणमेगयरं जसा-ऽजसाणमेगयर, एए नव धुवोदयसहिया एकवीसा, अंतरगतीए वट्टमाणस्स पज्जत्तगस्स वा अप-ज्जत्तगस्स वा । एत्थ नव भंगा, पज्जत्तग-सुभग-दूभग-आएज्ज-अणाएज्ज-जसा-ऽजसेहिं कायव्वा अट्ठ, अपज्जत्तग-दूभग-अणा-एज्ज-अजसकित्तीहिं एक्को, सव्वे नव । अण्णे आयरिया भणंति—सुभग-आएज्जा उ जुगवं उदेंति, दूभग-अणाएज्जा जुगवं उदेंति । तम्हा एत्थ पंच भंग त्ति । वेउव्वियस्स तिरिक्खस्स पणुवीसादओ संभवंति । ते पच्छा वक्खाणिज्जंति । सरीरत्थस्स

१ °त्थि तण्णो, सं° का२। तद् न, इत्यर्थ ॥ २ गा सुस्सर-दुस्सर-ज° का१ ॥ ३ °वट्ठी । वि° का१ का२ ॥ ४ ज्जत्तमे° रा का२ ॥ ५ °णमेगयर का१ का२ ॥ ६ °अड, अ° का२ ॥ ७ °वं ति । तम्हा का१ ॥ ८ °म्हा तत्थ का२ ॥ ९ °वीसोदया सं° ग ॥

ते चेव सत्त भगा ७ । अहवा एयम्मि चेव उदए ऊसासे अणुदिण्णे आयावुज्जोयाण एगयरे उइण्णे छव्वीसा । तत्थ आयावेण पत्तेय-जसा-ऽजसेहिं दो भगा, उज्जोवेण पत्तेग साहारण जसा ऽजसेहिं चत्तारि भगा, तेउकाइय-वाउकाइयाण आयावुज्जोव-जसकित्तीओ नत्थि । सव्वे छव्वीसोदए तेरस भगा १३ । एत्थ चेव ऊसासछव्वीसे आयावुज्जोयाण एगयरे छूढे सत्तावीसोदओ हवइ । एत्थ छब्भगा, त०—आयावं पत्तेय जसा ऽजसेहिं दोण्णि २, उज्जोय पत्तेग साहारण-जसा ऽजसेहिं चत्तारि ४, एव एगिंदियाण सव्वोदया बायालीसं ४२ ।

इयाणिं बेइंदियपाउग्गाणि छ उदयट्ठाणाणि, त०—२१ । २६ । २८ । २९ । ३० । ३१ । एत्थ एक्कवीसा तिरियगइ बेइंदियजाइ तिरियाणुपुव्वि तस बायर पज्जत्ता ऽपज्जत्ताणमेगयर दूभग अणाएज्ज जसा जसाणमेगयर, एए नव धुवोदयसहिया एक्कवीसा भवइ, बेइंदियस्स पज्जत्तगस्स वा अपज्जत्तगस्स वा अंतरगइए वट्टमाणस्स । एत्थ एक्कवीसे तिण्णि भगा—पज्जत्तग जसा ऽजसेहिं दो भगा, अपज्जत्तगा ऽजसकित्तीए एगो भगो, सव्वे तिण्णि । एवं तेइंदिय चउरिंदियाण तिण्णि तिण्णि भगा । तस्सेव बेइंदियस्स सरीरत्थस्स आणुपुव्विमवणेत्ता ओरालिय हुंड ओरालियंगोवंग छेवट्ठसंघयण उवघाय पत्तेगेसु छूढेसु छव्वीसा । एत्थ वि ते चेव तिण्णि भगा । तस्सेव सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयस्स पराघाए अपसत्थविहगे य छूढे अट्ठावीसा । एत्थ दो भगा जसा-ऽजसेहिं, अपज्जत्तोदओ पसत्थविहायगती य नत्थि त्ति काउ । तस्सेव आणापाणुपज्जत्तीए पज्जत्तगस्स ऊसासे छूढे एगूणतीसा । एत्थ वि ते चेव दो भगा । अहवा एयम्मि चेव अट्ठावीसे ऊसासे अणुदिण्णे उज्जोवे वा उइण्णे

१ °वजसा स ॥ २ २१ । तत्थ का०२ ॥ ३ °तरा ग का१ ॥

एगूणतीसा । एत्थ वि ते चेव दो भंगा । सव्वे वि चत्तारि । तस्सेव ऊसासएगूणतीसे भासापज्जत्तीए पज्जत्तगस्स दूसर-सूसराणमेगयरे छूढे तीसा भवइ । एत्थ चत्तारि भंगा सुस्सर-दूसर-जसा-ऽजसेहिं कायव्वा ४ । अण्णे भणंति—सुस्सरं विगलिंदियाण णत्थि तण्ण, संतकम्मे उक्तत्वात् । अथवा तम्मि चेव ऊसासएगूणतीसे सरे अणुदिण्णे उज्जोए वा उइण्णे तीसा । एत्थ दो भंगा उज्जोव-जसा-ऽजसेहिं । सव्वे छब्भंगा । तम्मि चेव सरसहिए तीसे उज्जोवे छूढे एगतीसा भवइ । एत्थ चत्तारि भंगा दुस्सर सूसर-जसा-ऽजसेहिं कायव्वा । सव्वुदयविगप्पा वेइंदियाणं बावीसा । एवं तेइंदिय-चउरिंदियाण वि । सव्वे वि छावट्ठिं ६६ । विगलिन्दियपाउग्गं सम्मत्तं ।

इयाणिं पंचिंदियतिरियपाउग्गाणि अट्ठ उदयट्ठाणाणि, तं०—२१ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । एत्थ एकवीसा तिरिक्खगइ पंचेंदियजाइ तिरिक्खाणुपुव्वि तसं बादरं पज्जत्ता-ऽपज्जत्ताणमेगयरं सुभग-दूभगाणमण्णयरं आएज्ज-अणाएज्जाणमेगयरं जसा-ऽजसाणमेगयरं, एए नव धुवोदयसहिया एक्कवीसा, अंतरगतीए वट्टमाणस्स पज्जत्तगस्स वा अपज्जत्तगस्स वा । एत्थ नव भंगा, पज्जत्तग-सुभग-दूभग-आएज्ज-अणाएज्ज-जसा-ऽजसेहिं कायव्वा अट्ठ, अपज्जत्तग-दूभग-अणाएज्ज-अजसकित्तीहिं एक्को, सव्वे नव । अण्णे आयरिया भणंति—सुभग-आएज्जा उ जुगवं उर्येति, दूभग-अणाएज्जा जुगवं उदेंति । तम्हा एत्थ पंच भंग त्ति । वेउव्वियस्स तिरिक्खस्स पणुवीसादओ संभवंति । ते पच्छा वक्खाणिज्जंति । सरीरत्थस्स

१ °त्थि तण्णो, सं° का२। तद् न, इत्यर्थ ॥ २ गा सुस्सर-दुस्सर-ज° का१ ॥ ३ °वट्ठी । वि° का१ का२ ॥ ४ °ज्जत्तमे° स का२ ॥ ५ °णमेगयरं का१ का२ ॥ ६ °अड, अ° का२ ॥ ७ °वं ति । तम्हा का१ ॥ ८ °म्हा तत्थ का२ ॥ ० °वीसोदया सं° म ॥

आणुपुव्विमवणेऊण ओरालिय छन्ह सठाणाणमेगयर ओरालियगोवग छन्ह सघयणाणमेगयर उवघाय पत्तेगे छूढे छवीसा । एत्थ बे सयाणि एगूणणउयाणि भगाण । छ सठाण छ सघयण पज्जत्तग सुभगदूभग आएज्जअणाएज्जाण एगयर जसाऽ जसेहिं बे सयाणि अट्ठासीयाणि लब्भति, हुड सठाण असंपत्त–सेवट्ठ अपज्जत्त दूभग अणाएज्ज अजसकित्तीहिं एगो भगो, सव्वे समुदिया दो सयाणि एगूणणउयाणि २८९ । सुभगाऽऽएज्जाणे युगपद्भावना सर्वत्र पूर्ववत् । एव भाविए सव्वोदएसु भगविगप्पा जहासभव योज्याः । सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तगस्स पराघाय पसत्था ऽपसत्थविहायगईणमण्णयरे छूढे अट्ठावीसा । एत्थ भगाण पचसयाणि छावत्तराणि लब्भति । जे छवीसे पुव्वभणिया भगा अपज्जत्तगभगरहियाणि विहायगइजुवलेण गुणियाणि पचसयाणि छावत्तराणि भवति ५७६ । तस्स आणापाणुपज्जत्तीए पज्जत्तगस्स ऊसासे छूढे एगूणतीसा । अहवा ऊसासे अणुदिण्णे उज्जोए वा उइण्णे एगूणतीसा । एत्थ एक्कारससयाणि बावण्णाणि भगाण । पचछावत्तरा ऊसासेण, उज्जोएण वि तत्तिया चेव, सव्वे वि ११५२ । ऊसासएगूणतीसे भासापज्जत्तीए पज्जत्तकस्स सुस्सर दूसराणमेगयरे छूढे तीसा भवति । अहवा सरे अणुदिण्णे उज्जोए वा उदिण्णे तीसा भवइ । एत्थ सत्तरससयाणि अट्ठावीसाणि भगाण । अट्ठावीसाए पुव्वुत्ता छावत्तरा पंचसया भगाण उज्जोय-सरदुवेणं तिहिं गुणिया १७२८ भवति । सरसहियाए तीसाए उज्जोवे छूढे एक्कतीसा भवइ । एत्थ एक्कारससयाणि बावण्णाणि भगाण, जे तीसोदए सरसहिया भगा, उज्जोवभगरहिया ११५२ भवति । पाणयतिरिक्खाण सव्वुदयपिंडो एगूणपण्णसयाणि छऽब्भहियाणि भगाण ४९०६ ।

---

१ पज्जमेग सं का२ ॥ २ ण दूभग-अणायजा(एज्जा) ण युग का२ ॥ ३ °या वि का१ ॥ ४ ण तीहिं का१ ॥

इयाणिं वेउव्वियस्स तिरिक्खस्स पंच उदयट्ठाणाणि[1], तं जहा—२५ । २७ । २८ । २९ । ३०[2] । एत्थ पणुवीसा ओरालियं विजहित्तु विउव्वियंतस्स करणअपज्जत्तगस्स । पुव्वुत्तपज्जत्तगतिरिक्खएक्कवीसे आणुपुव्विरहिए[3] वेउव्वियसरीर-समचउरंस-वेउव्वियंगोवंग-उवघायपत्तेगे छूढे पणुवीसा । एत्थ अट्ठ भंगा सुभग-दूभग-आएज्जा-ऽणाएज्ज-जसा-ऽजसेहिं कायव्वा । सुभगा-ऽऽएज्जा पूर्ववत् । तस्सेव सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तगस्स पराघाय-पसत्थविहायगईए[4] छूढेहिं सत्तावीसा । एत्थ वि ते चेव अट्ठ भंगा, अपसत्थविहायगती विउव्वियंतस्स नत्थि त्ति किच्चा । तस्सेव आणापाणुपज्जत्तीए पज्जत्तगस्स ऊसासे छूढे अट्ठावीसा । [एत्थ अट्ठ भंगा ।] अहवा सरीरपज्जत्तगस्स ऊसासे अणुदिण्णे उज्जोए वा उदिण्णे अट्ठावीसा । एत्थ वि अट्ठ भंगा । सव्वसमुदओ सोलसभंगा, ऊसासेण पुव्वत्ता अट्ठ, उज्जोवेणं अट्ठ त्ति । ऊसासअट्ठावीसाए भासापज्जत्तीए पज्जत्तगस्स सूसरे छूढे एगूणतीसा भवइ । अहवा तम्मि चेव ऊसासअट्ठावीसे सरे अणुदिण्णे उज्जोए वा उइण्णे एगूणतीसा । एत्थ[5] वि पुव्वत्ता सोलस भंगा । सुस्सरेण अट्ठ, उज्जोवेण अट्ठ, दुस्सरं वेउव्वियस्स नत्थि त्ति । सुस्सरसहिए एगूणतीसे उज्जोवे छूढे तीसा भवइ । एत्थ उज्जोवसहिया अट्ठ भंगा । सव्वे वेउव्वियस्स छप्पण्णं भंगा ५६ । पंचिंदियतिरिक्खस्स सव्वोदयविगप्पाणं एगूणपण्णं[6] सयाणि चोवट्ठाणि[7] ४९६२ । पंचिंदियतिरिक्खोदया समत्ता[8] ।

इदाणिं मणुस्साणं सामण्णेण एक्कारस उदयट्ठाणाणि चउवीसरहियाणि सव्वोदयट्ठाणाणि, तं जहा—२० । २१ । २५ ।

---

१ °णि—२५ स ॥ २ ३० । तत्थ का१ का२ ॥ ३ °विविर° का१ का२ ॥ ४ °हायगई वि° का१ ॥ ५ °त्थ पु° स ॥ ६ °णवन्नस° का१ ॥ °ण पंच स° का२ ॥ ७ चाविट्ठा° का१ ॥ ८ °दयो सम्मत्तो । का२ ॥

२६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । ९ । ८ । तत्थ सामण्णमणुस्साण पच उदयट्ठाणाणि—२१ । २६ । २८ । २९ ।
३० । तत्थ एक्कवीसा छवीसा अट्ठावीसा जहा पंचिंदियतिरिक्खाण तहा चेव सविगप्पा । एगूणतीसा तीसा य उज्जोवर
हिया तहा चेव, वेउव्वियसजए मोत्तूण उज्जोवो मणुयाण नत्थि त्ति काउ । एगूणतीसे भगाण पचसयाणि छावत्तराणि ।
तीसोदए एक्कारस सयाणि बावण्णाणि । पागयमणुस्साण सव्वोदयसमुदओ छवीससयाणि दुगाहियाणि २६०२ ।

इयाणि वेउव्वियस्स मणुयस्स पच उदयट्ठाणाणि, त०—२५ । २७ । २८ । २९ । ३० । एत्थ पणुवीसा मणुयगति
पचिंदियजाई वेउव्विय समचउरस वेउव्वियंगोवंग उवघाय तस बायर पज्जत्त पत्तेग सुभग दूमगाणमेगयरं आएज्जा ऽणाएज्जा
णमेगयर जसा ऽजसाणमेगयर, एए तेरस धुवोदयसहिया पणुवीसा भवइ । सामण्णेण एय भणिय । एत्थ अट्ठ भगा सुभग-
दूभग-आएज्जा ऽणाएज्ज-जसा ऽजसेहिं कायव्वा । देसविरयसंजयाण सव्वपसत्थो भगो । सुभगा ऽऽएज्जा पूर्ववत् । तस्सेव सरी
रपज्जत्तीए पज्जत्तयस्स पराघाय पसत्थविहाए छूढे सत्तावीसा । एत्थ वि ते चेव अट्ठ भगा, अपसत्थविहायगती विउव्वयतस्स
नत्थि त्ति किच्चा । आणापाणुपज्जत्तीए पज्जत्तगस्स ऊसासे छूढे अट्ठावीसा । एत्थ वि ते चेव अट्ठ । अहवा संजयस्स उत्तर
विउव्विस्स सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तगस्स ऊसासे अणुदिण्णे उज्जोए वा उदिण्णे अट्ठावीसा एत्थ एक्को भगो । किं कारण ? संज-
याण दूभगा ऽणाएज्ज-अजसकित्तीओ न उदेति त्ति काउ । सव्वे नव । भासापज्जत्तीए पज्जत्तगस्स ऊसासअट्ठावीसे सुसरे छूढे
एगूणतीसा, अहवा सरे अणुदिण्णे संजयस्स उज्जोवे वा उइण्णे एगूणतीसा, एत्थ वि ते चेव नव भङ्गा । सरसहियाए एगू

१ ण्णाणि । एगू स को१ । एकविंशती पड्विंशताष्टाविंशती च क्रमश ९-२८९-५७६ भङ्गा ॥ २ ३० । तत्थ को१ को२ ॥

णतीसाए संजयस्स उज्जोवे छूढे तीसा भवइ । एत्थ एगो भंगो । वेउव्वियस्स मणुसस्स सव्वोदयविगप्पा पंचत्तीसं ३५ ।

इदाणिं आहारगसंजयस्स वि ताणि चेव पंच उदयट्ठाणाणि । जहा वेउव्वियस्स तहा भाणियव्वं । नवरं आहारग-
सरीर आहारगअंगोवंगाणि वत्तव्वाणि, अण्णं च दूभग-अणाएज्ज-अजसकित्तीओ न भाणियव्वाओ । पणुवीस-सत्तावीसे एक्केको
भंगो, अट्ठावीस-एगूणतीसे दो दो भंगा—उज्जोएण विणा उज्जोवेण य, तीसोदए एको उज्जोयसहिओ भंगो । आहारगसंज-
यस्स सव्वोदयविगप्पा सत्त ।

इयाणिं केवलीणं दस उदयट्ठाणाणि, तं जहा—२० । २१ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । ९ । ८[3] । एत्थ
वीसा—मणुयगई पंचिंदियजाइ तस बादर पज्जत्तग सुभग आएज्ज जसकित्ति, एयाणि अट्ठ धुवोदयसहियाणि वीसा । एत्थ
एगो भंगो । एसा अतित्थयरकेवलिस्स समुग्घायगयस्स कम्मतिगकायजोगे वट्टमाणस्स । स चेव वीसा तित्थगरस्स कम्मति-
गकायजोगिस्स तित्थगरनामसहिया एगवीसा । एत्थ एगो भंगो । सा चेव वीसा ओरालियसरीर छण्हं संठाणाणमेगयरं
ओरालियंगोवंगं वज्जरिसभनारायसंघयणं उवघाय पत्तेयसहिया छव्वीसा भवति, ओरालियमिस्सकायजोगे वट्टमाणस्स भवइ ।
एत्थ छब्भंगा लब्भंति छसंठाणविगप्पेहिं । ते सामण्णमणूसोदए अत्थि चेव 卐 पत्तेयं न भणिज्जंति卐 । सा चेव छव्वीसा

---

१ तीसे उद° का१ ॥ २ ° णं उद° स ॥ ३ ८ । तत्थ का१ का२ ॥ ४ °जोग(गि)स्स । सा चेव वीसा तित्थगरणामसहि° का२ ॥ ५ °गो । सा सं ॥ ६ °गो । स चेव का१ का२ ॥ ७ °भंगा व° का१ ॥ ८ स्वस्तिकद्विकान्तर्गत पाठ सप्रतौ नास्ति ॥ ९° ति । स चेव का१ का२ ॥

तित्थगरसहिया सत्तावीसा भवइ। एत्थ एगो भगो, सबे पसत्थ त्ति काउ। अट्ठावीसा–अतित्थगरकेवलिस्स तीसोदए वट्टमाणस्स तओ सरे निरुद्धे एगूणतीसा भवइ, तओ ऊसासे निरुद्धे अट्ठावीसा भवइ। एत्थ च्छ भगा सठाणेहिं। ते सामण्णोदयगहणेहिं गहिया। एगूणतीसोदओ भणिओ। अहवा तित्थगरकेवलिस्स एक्कत्तीसोदए वट्टमाणस्स तओ सरे निरुद्धे तीसा भवइ, तओ ऊसासे निरुद्धे एगूणतीसा भवति। एत्थ अतित्थगरस्स छब्भगा सठाणेहिं चेव। ते सामण्णगहणेण गहिया। तित्थगरस्स एगो। तीसोदए छसठाण पसत्था ऽपसत्थविहागइ-सुस्सर दूसरेहिं चउवीस भगा लब्भति। ते वि सामण्णगहणेण गहिया। तित्थगरस्स सररहियस्स एको। एक्कत्तीसोदओ तित्थगरस्स, सामण्णमणुयस्स तीसोदए तित्थगरनामे छूढे एकतीसा भवइ। एत्थ एको भगो, सबे पसत्थ त्ति काउ। तत्थ नवोदओ मणुगइ पचिंदियजाइ तस बादर पज्जत्त सुभग आएज्ज जसकित्ती तित्थगरमिति। एत्थ अजोगिस्स तित्थगरस्स एएसिं कम्माण समुदओ एक्क उदयट्ठाण, भेओ नत्थि त्ति। तित्थगरनामरहिया ते चेव अट्ठ अतित्थगरस्स अजोगिस्स भवति। एत्थ वि नत्थि भेओ। एव केवलीण दस उदया भणिया। एत्थ वीसाइ २०। २१। २७। २९। ३०। ३१। ९। ८। अट्ठसुदएसु एकेको विसेसभगो वि लब्भइ त्ति अट्ठ लद्धा। एत्थ पत्तेय तित्थगरस्स छब्भगा, अतित्थगरस्स दो भगा। सबमणुओदयविगप्पाण छवीस सयाणि बावण्णाणि। मणुओदया समत्ता।

१ णेण ग कां२ ॥ २ क्कतीसो का१ का२ एवमन्यत्रापि ॥ ३ गो, पढमसठाणे(ण) ति काउ। ती कां२ ॥ ४ °णुस्सग° का१ कां२ ॥ ५ त्थि। तित्थ कां१ का२ ॥ ६ सा २०। कां१विना ॥

इयाणिं देवाणं छ उदयट्ठाणाणि, तं जहा—२१ । २५ । २७ । २८ । २९ । ३० । एत्थ एक्कवीसा देवगइ पंचिंदिय० देवाणुपुव्वि तस बादर पज्जत्तग सुभग-दूभगाणमेगयरं आएज्जा-ऽणाएज्जाणमेगयरं जसा-ऽजसाणमेगयरं एए नव धुवोदयसहिया एक्कवीसा । तत्थ अट्ठ भंगा सुभग-दूभग-आएज्जा-ऽणाएज्ज-जसा-ऽजसेहिं कायव्वा, दूभग-अणाएज्ज-अजसा पिसायाईणं संभवंति । सरीरत्थस्स आणुपुव्विमवणेऊणं वेउव्वियं समचउरंसं विउव्वियंगोवंग उवघाय पत्तेगे छूढे पणुवीसा । एत्थ वि ते चेव अट्ठ । सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तगस्स पराघाय पसत्थविहागइ छूढे सत्तावीसा । एत्थ वि ते चेव अट्ठ, देवाणं अपसत्थविहागई नत्थि । तस्सेव आणापाणुपज्जत्तीए पज्जत्तकडस्स ऊसासे छूढे अट्ठावीसा । एत्थ वि अट्ठ । अहवा सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयस्स ऊसासे अणुदिण्णे उज्जोवे उदिण्णे अट्ठावीसा । तत्थ वि अट्ठ । सव्वे अट्ठावीसे सोलस । ऊसासपज्जत्तीए पज्जत्तगस्स सुस्सरे छूढे एगूणतीसा भवइ, दूसरं देवाणं नत्थि । अहवा सरे अणुदिण्णे अट्ठावीसे भासापज्जत्तीए पज्जत्तगस्स सुस्सरे छूढे एगूणतीसा भवइ, दूसरं देवाणं नत्थि । उत्तरवेउव्वियं करेंतस्स देवस्स उज्जोए वा उइण्णे एगूणतीसा भवइ । एत्थ सरेण अट्ठ, उज्जोवेण अट्ठ, सव्वे सोलस भंगा । उत्तरवेउव्वियं करेंतस्स देवस्स उज्जोवो लब्भइ । सुस्सरसहिए एगूणतीसे उज्जोवे छूढे तीसा भवइ । एत्थ अट्ठ भंगा । सव्वोदयविगप्पे पडुच्च देवाणं चउसट्ठि उदयविगप्पा ६४ ।

इयाणिं नेरइयस्स पंच उदयट्ठाणाणि—२१ । २५ । २७ । २८ । २९ । जहा देवाणं तहा नेरइयाणं पि भाणियव्वं । नवरिं दूभगं अणाएज्जं अजसं अपसत्थविहा० दूसरं च अप्पप्पणो उदयट्ठाणे[2] भाणियव्वाणि, उज्जोवो नेरइयाणं नत्थि त्ति ।

१ °सरो नत्थि । का२ ॥ २ °णेसु भा° का१ का२ ॥

सव्वोदया अपसत्थ त्ति एक्केको विगप्पो, पच भगा ॥ २५ ॥ इयाणिं विसाइगेसु उदयट्ठाणेसु एक्केकम्मि उदयविगप्पा केत्तिया पिंडिया होज ? त्ति, तन्निरूवणत्थं भण्णति—

ऍगबियॆरेक्कारस तेत्तीसा छस्सयाणि तेत्तीसा। बारससत्तरससयाणऽहिगाणि बि पचसीईहिं ॥२६॥

१ । ४२ । ११ । ३३ । ६०० । ३३ । १२०२ । १७८५ ॥ २६ ॥

अॅउणत्तीसेक्कारससयऽहिगसत्तरस-पचसट्ठीहिं । २९१७ । ११६५ । १ । १ ।

एक्केक्कग च वीसादऽट्ठुदयतेसु उदयविही ॥ २७ ॥

तेसिं विगप्पनिरूवणा—

"पण नव नव नवगेयऽट्ठगव उदयविहि एक्कवीसम्मि । इगि-विगल सगल-माणुसतित्थगर[6]-ऽमराणनिरयाण ४२ ॥
छ चत्तारि य एक वामर सुहुमे य पवणवेउव्वे । एगिंदियाण भगा एक्कारस होंति चउवीसे ११ ॥
तिण्हऽट्ठ सत्त एक्ककमेन उदया कमेण पणुवीसे । देव-नर तिरियवेउव्विएगिंदिआहार-नेरइए ३३ ॥
एगूणछयसयाणि दोण्ह तरस नव च छव्वीसे । नर तिरियाणं इगि विगलिंदियउदया कमेणेए ६०० ॥
अड ऽट्ठ-ऽट्ठग छक्क एगेगेग कमेण सगवीसे । सुर नर [7]तिरि-एगिंदिय तित्थयराऽऽहार-नेरइए ३३ ॥

---

१ णिं वीसाइ का१ ॥ २ गाथेय चूर्णाक्षरशोऽवतारिता ॥ ३ थालेका° सविनाऽन्यत्र ॥ ४ गाथेय चूर्णाक्षरशोऽवतारिता ॥ ५ विसत्तुदसे एको भङ्ग" ॥ ६ र-सुराण का२ ॥ ७ वेक्रियतिर्य ॥

[1]छावत्तरपंचसया, सोलस दुसु दुसु नवेग छक्क दुग । तिरिय-नरा-ऽमर-तिरि-नरविउव्वि-निर-विगलगा-ऽऽहारे १२०२ ॥
बावण्णेक्कारसया, बारस छावत्तरा य पंचसया । दुसु सोलस नवगेगं, दुगेगमिति उगुणतीसाए ॥
सगलतिरि-विगल-नर-देव-तिरिय-मणुयाविउव्वि-तित्थयरे । आहारग-नेरइए, कमेण भंगा मुणेयव्वा १७८५ ॥
बावण्णेक्कारसया, सत्तरससयाणि अट्ठवीसाणि । दुसु अट्ठेगऽट्ठारस, एक्केक्कं चेव तीसाए ॥
नर-तिरिय-देव-तिरि-नरविउव्वि-विगलाण तित्थ आहारे २९१७ । कमसो इगितीसाए, बारस एक्को य भंगा उ ॥
बावण्णेक्कारसया, विगलाणं तित्थ सगलतिरियाणं ११६५ । कमसो नव-ऽट्ठुदए, एक्केक्को चेवऽजोगिम्मि ॥

इयाणिं विगलाईणं उदयपिंडं भण्णइ—

छावट्ठी चोवट्ठी, बायाला विगल-देव-इगिउदया । मणुयाण विप्पण्णहिया, छव्वीससया उ सव्वुदया ॥
तिरियाणुगुणपण्णसया, अहिया बावट्ठि पंच निरयाणं । सत्तत्तरिमेव सया, एक्काणउया उ सव्वुदया ७७९१ ॥

इदाणिं तिरियाण पंचसंतिगोदयनिरूवणं—

[2]इगि विगल सगलपंचसिगा उ चत्तारिआइओ उदया । उगुवीसऽट्ठारस विसयअट्ठनउई य न य सेसा ॥

एगिंदियसुहुमअपज्जत्तगस्स तिण्णि भंगा, एगिंदियबायरअपज्जत्तगस्स तिण्णि, सुहुमपज्जत्तगस्स ५, बायरपज्जत्तगस्स ८; सव्वे १९ । एए पंचसंतिगोदया एगिंदियाणं । सेसा चउसंतिगोदया । विगलिंदियाणं एक्कवीस-छव्वीसोदएसु नव नव भंगा; सव्वे अट्ठारस १८ । पंचिंदियाण एक्कवीसे नव ९, छव्वीसे दो सया एगूणनउया, सव्वे दो सया अट्ठाणउया । एएसु सव्वेसु

१ इमे भङ्गा अष्टाविंशत्युदये ॥ २ गाथेयं खं१प्रतावस्ति ॥

तेउ-वाऊओ अणतरागए पडुच्च अट्ठवरी लब्भइ । सेसोदएसु न संभवइ, पज्जत्तगो नियमा मणुयगइ बंधइ त्ति काउ । सवप चसतियपिंडो तिण्णि सयाणि पणुतीसाणि ३३५ । उदट्ठाणाणि भणियाणि । इयाणिं संतट्ठाणनिरूवणा—

तिदुनउई उगुनउई, अट्ठच्छलसी यऽसीई उगुसीती ।
अट्ठ च्छ प्पण्णत्तरि, नव अट्ठ य णामसताणि ॥ २८ ॥

९३ । ९२ । ८९ । ८८ । ८६ । ८० । ७९ । ७८ । ७६ । ७५ । ९ । ८ । एयाणि बारस नामम्मि सतट्ठाणाणि । तत्थ तेणउई—गति ४ जाति ५ सरीरं ५ सरीरसंघाय ५ बंधण ५ सरीरसंठाण ६ सरीरअंगोवंग ३ सरीरसंघयण ६ वण्ण ५ गंध २ रस ५ फास ८ आणुपुव्वि ४ अगरुलहुं सरीरउवघाय पराघाय ऊसास आयव उज्जोव विहायगइ २ तस थावराइवीस निमेण तित्थगरमिति सव्वसमुदओ तेणवती । तओ तित्थगरनामेण विणा बाणउई । तेणउईओ आहारगसरीर संघाय आहारगसरीरबंधण आहारगअंगोवंगेण विणा ८९ । तओ तित्थगरनामे फेडिए अट्ठासीई भवइ । तओ देवगइ देवगइपाउग्गाणुपुव्वी उव्वलिए छासीई भवइ । अहवा असीइसतकम्मिगस्स निरयगइपाउग्गं बंधतस्स निरयगइ निरयाणुपुव्वि वेउव्वियचउक्कं च बंधमाणस्सं छासीई, असीइसतकम्मिगस्स देवगइपाउग्गं बंधतस्स देवगइ देवाणुपुव्वि विउव्वियचउक्कं च बंधमाणस्स वा छासीई भवइ । तओ नरयगइ नरयाणुपुव्वि वेउव्वियसरीर-संघाय बंधण अंगोवंगे उव्वलिए असीई भवइ । तओ मणुयगइ मणुयाणुपुव्वीए

१ गाथेयं चूर्णाक्षरतोऽवतारिता ॥ २ °दु य छल खे१ खे२ खे३ ॥ ३ °इ इगु खे१ खे२ । ६ गुणसीई । खे३ ॥ ४ °दु य छप्प खे२ ॥ ५ २९ संघा कां२ ॥ ६ दु उय कां१ कां२ ॥ ७ °सीई म° कां१ ॥ ८ स्स वा छा सं ॥

उव्वलियाए अट्ठत्तरी भवइ । एए अक्खवगाणं संता । इयाणिं खवगाणं भण्णंति—तेणउईओ निरयगयि तिरियगइ एगिंदियजाइ बेइंदियजाइ तेइंदियजाइ चउरिंदियजाइ निरयाणुपुवि तिरियाणुपुव्वी आयाव उज्जोव थावर सुहम साहारण, एएहिं एगंतनिरय-तिरियपाउग्गेहिं तेरसहिं नामेहिं खविएहिं असीती भवइ। बाणउईओ एयम्मि चेव तेरसनामे खविए एगूणासीई भवति। एगूणनउतीओ तेरसनामे खविए छावत्तरी भवइ । अट्ठासीओ तेरसनामे खविए पंचसत्तरी भवइ । तित्थगरकेवलिस्स अजोगिस्स चरमसमए वट्टमाणस्स वेइज्जंतीओ मोत्तूण सेसाओ दुचरिमसमए खयं गच्छंति । ताओ य इमाओ वेदिज्जंति, तं०—मणुस्सगइ पंचिंदियजाइ तस बादर पज्जत्त सुभग आदेज्ज जसकित्ति तित्थगरमिति । एयाओ नव चरमसमए धरंति । एयं एकं संतट्ठाणं । तित्थगरनामरहियं अतित्थगरस्स तमेव अट्ठ भवंति । एवं संतट्ठाणपरूवणा कया ।

एत्थ अंण्णे[1] अण्णारिसाणि संतट्ठाणाणि विगप्पयंति, ताणि आगमे जुत्तीहिं य न घडंति । कहं ? भण्णइ—सरीरनामसंबद्धाणि बंधण-संघायनामाणि ताणि सरीरनामेहिं समं बज्झंति वा उव्वलिज्जंति वा खविज्जंति वा वेइज्जंति वा उईरिज्जंति वा, तम्हा सरीरनामे फेडिज्जंते ते वि नियमा फिट्टंति त्ति काउं । तम्हा न घडंति त्ति काउं परिहरियाणि ॥ २८ ॥

अट्ठ य बारस बारस, बंधोदय-संतपयडिठाणाइं। ओहेणाऽऽएसेण य, जत्थ जहासंभवं विभजे ॥२९॥

अट्ठ य बारस० गाहा । अट्ठ य बारस बारस जहकमेण बंधोदय-संतट्ठाणाणि । एए ओघेणं आएसेण य जे जत्थ जहा

---

१ 'अन्ये' श्रीशिवशर्मसूरिप्रमुखा । तथा च कर्मप्रकृतौ सत्ताधिकारे नाम्न सत्तास्थानससूचक गाथासूत्रम्—" ति-दुगसय छप्पनग-तिगनउई नउइ इगुणनउई य । चउ-तिग-दुगाऽहिगाऽसी, नव अट्ठ य नामठाणाइ ॥ १४ ॥ "

तेउ वाऊओ अणतरागए पडुच्च अडुचरी लब्भइ । सेसोदएसु न सभवइ, पजत्तगो नियमा मणुयगइ बधइ त्ति काउ । सबप चसतियर्पिडो तिण्णि सयाणि पणुवीसाणि ३२५ । उदट्ठाणाणि भणियाणि । इयाणिं सतट्ठाणनिरूवणा—

तिदुनउई उगुनउई, अट्ठच्छलसी यऽसीई उगुसीती ।

अट्ठ च्छ प्पण्णत्तरि, नव अट्ठ य णामसताणि ॥ २८ ॥

९३ । ९२ । ८९ । ८८ । ८६ । ८० । ७९ । ७८ । ७६ । ७५ । ९ । ८ । एयाणि बारस नामम्मि सतट्ठाणाणि । तत्थ तेणउई—गति ४ जाति ५ सरीरं ५ सरीरसघाय ५ बधण ५ सरीरसठाण ६ सरीरअगोवग ३ सरीरसघयण ६ वण्ण ५ गध २ रस ५ फास ८ आणुपुवि ४ अगरुलहु सरीरउवघाय पराघाय ऊसास आयव ऊज्जोव विहायगइ २ तस थावराइवीस निमेण तित्थगरमिति सबसमुदओ तेणवती । तओ तित्थगरनामेण विणा बाणउई । तेणउईओ आहारगसरीर सघाय आहारगसरीरबधण आहारगअगोवगेण विणा ८९ । तओ तित्थगरनामे फेडिए अट्ठासीई भवइ । तओ देवगइ देवगइपाउग्गाणुपुवी उवलिए छासी भवइ । अहवा असीइसतकम्मिगस्स निरयगइपाउग्ग बधतस्स निरयगइ निरयाणुपुवि वेउविपचउक च बधमाणस्सं छासीई, असीइसतकम्मिगस्स देवगइपाउग्ग बधतस्स देवगइ देवाणुपुवि विउविचउक च बधमाणस्स वा छासीई भवइ । तओ नरयगइ नरयाणुपुवि वेउवियसरीर-सघाय बधण अंगोवगे उवलिए असीई भवइ । तओ मणुयगइ मणुयाणुपुवीए

१ गाथय चूर्णिक्षरशोऽवतारिता ॥ २ टु य छल खे१ खे२ खे३ ॥ ३ इ इगु खे१ खे२ । इ गुणसीई । खे३ ॥ ४ टु य छप्प खे२ ॥ ५ २५ सघा को२ ॥ ६ टु उच को१ को२ ॥ ७ °सीई म° को१ ॥ ८ स्स वा छा सं ॥

उवलियाए अट्ठत्तरी भवइ । एए अक्खवगाणं संता । इयाणिं खवगाणं भण्णंति—तेणउईओ निरयगयि तिरियगइ एगिंदियजाइ बेइंदियजाइ तेइंदियजाइ चउरिंदियजाइ निरयाणुपुवि तिरियाणुपुवी आयाव उज्जोव थावर सुहम साहारण, एएहिं एगंतनिरय-तिरियपाउग्गेहिं तेरसहिं नामेहिं खविएहिं असीती भवइ। बाणउईओ एयम्मि चेव तेरसनामे खविए एगूणासीई भवति। एगूणनउतीओ तेरसनामे खविए छावत्तरी भवइ । अट्ठासीओ तेरसनामे खविए पंचसत्तरी भवइ । तित्थगरकेवलिस्स अजोगिस्स चरमसमए वट्टमाणस्स वेइज्जंतीओ मोत्तूण सेसाओ दुचरिमसमए खयं गच्छंति । ताओ य इमाओ वेदिज्जंति, तं०—मणुस्सगइ पंचिंदियजाइ तस बादर पज्जत्त सुभग आदेज्ज जसकित्ति तित्थगरमिति । एयाओ नव चरमसमए धरंति । एयं एक्कं संतट्ठाणं । तित्थगरनामरहियं अतित्थगरस्स तमेव अट्ठ भवंति । एवं संतट्ठाणपरूवणा कया ।

एत्थ अण्णे[1] अण्णारिसाणि संतट्ठाणाणि विगप्पयंति, ताणि आगमे जुत्तीहिं य न घडंति । कहं ? भण्णइ—सरीरनामसंबद्धाणि बंधण-संघायनामाणि ताणि सरीरनामेहिं समं बज्झंति वा उव्वलिज्जंति वा खविज्जंति वा वेइज्जंति वा उईरिज्जंति वा, तम्हा सरीरनामे फेडिज्जंते ते वि नियमा फिट्टंति त्ति काउं । तम्हा न घडंति त्ति काउं परिहरियाणि ॥ २८ ॥

अट्ठ य बारस बारस, बंधोदय-संतपयडिठाणाइं। ओहेणाऽऽएसेण य, जत्थ जहासंभवं विभजे ॥२९॥

अट्ठ य बारस० गाहा । अट्ठ य बारस बारस जहक्कमेण बंधोदय-संतट्ठाणाणि । एए ओघेणं आएसेण य जे जत्थ जहा

[1] 'अन्ये' श्रीशिवशर्मसूरिप्रमुखा । तथा च कर्मप्रकृतौ सत्ताधिकारे नाम्न सत्तास्थानमसूचक गाथासूत्रम्—" ति-दुगसयं छप्पचग-तिगनउईं नउइ इगुणनउईं य । चउ-तिग-दुगाऽहिगाऽसी, नव अट्ठ य नामठाणाइ ॥ १४ ॥ "

संभवति ते तत्थ तहा भाणियव्वा । 'ओघेणे'त्ति सामण्णेण, अमुग बधमाणस्स एत्तियाणि उदयट्ठाणाणि, एत्तियाणि सतट्ठाणाणि संभवति त्ति एसो निद्देसो ओघो । आएसो—मिच्छादिट्ठियाईण गइयाईण य पत्तेय पत्तेय बधोदय सतट्ठाणाण संवेहो भण्णइ सो आएसो[1] भण्णइ ॥ २९ ॥

इयाणिं कइ बधतो वेएइ कइ ? त्ति, कइ वा पगइट्ठाणकम्मसे ? त्ति, एयस्स अवसरो । त भण्णइ—

नव-पचोदय-सन्ता, तेवीसे पन्नवीस छवीसे । अट्ठ चउरऽट्ठवीसे, नव सत्त गुतीस तीसम्मि ॥३०॥

एगेगमेगतीसे, एगे एगुदय अट्ठ सन्तम्मि । उवरयबधे दस दस, वेयगसंतम्मि ठाणाइ ॥ ३१ ॥

नव पचोदय० गाहा । एगेग० गाहा । ' नवपचोदयसंता तेवीसे पण्णवीसे छवीसे 'त्ति तेवीस पणुवीस छवीसबधगाण पत्तेय पत्तेय नव नव उदयट्ठाणाणि, पच पच सतट्ठाणाणि । तत्थ तेवीसबधगाण नव उदयट्ठाणाणि—२१ । २४ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । एकवीसोदओ अतरगईए वट्टमाणाण एगिंदिय-बे० ते०-च० पचिंदियतिरिक्ख मणुस्साण तेवीसबधयाण लब्भइ । कह ? भण्णइ—एगिंदियऽपज्जत्तगेसु तेसिं उववाओ अत्थि त्ति । चउवीसोदओ एगिंदियपज्जत्ता ऽपज्जत्तगे अहिकिच्च । पणुवीसोदओ एगिंदियपज्जत्तगे तिरिय-मणुयवेउव्वियमिच्छदिट्ठिणो य अहिकिच्च । छवीसोदओ एगिंदियपज्जत्तग बे०-ते०-च० पचिंदियतिरिय-मणुयपज्जत्ता ऽपज्जत्तए पडुच्च । सत्तावीसोदओ एगिंदियपज्जत्तगे तिरिय मणुयवेउव्विये

१ सो ठुच्चइ । कां१ कां२ ॥ २ °गेग इगती खे१ ॥

अहिकिच्च । अट्ठावीस-एगूणतीस-तीसोदया बेइंदिय-ते०-च०-पंचिंदियतिरिय-मणुयपज्जत्तगे य अहिकिच्च । एक्कतीसोदओ बे०-ते०-च०-पंचिंदियतिरिक्खे य अहिकिच्च । सेसा सव्वे तेवीसं ण बंधंति । इयाणिं तेसिं चेव तेवीसबंधगाणं पंच संतट्ठाणाणि[1]—९२ । ८८ । ८६ । ८० । ७८ । एत्थ एक्कवीसोदए पंच वि संभवंति मणुस्सवज्जे सव्वे अहिगिच्च, मणुस्सेसु अट्ठत्तरी न संभवइ त्ति । कहं ? अट्ठत्तरीए मणुस्सगई[2] उव्वलिय त्ति काउं । चउवीसोदए पंच वि संभवंति, वेउव्विओदए वट्टमाणे एगिंदिए मोत्तूण सेसाणं एगिंदियाणं । वेउव्वियस्स असीइ-अट्ठत्तरिवज्जाणि तिण्णि । वेउव्विए मणुयदुगं नियमा अत्थि । कहं? भण्णइ—वेउव्वियछक्कं उव्वलेउं पच्छा मणुयदुगं उव्वलेइ त्ति काउं । पणुवीसे वि पंच वि । अट्ठत्तरी तेऊ वाऊपज्जत्तगे अवेउव्विगे पडुच्च लब्भइ । सेसपज्जत्तगेसु अट्ठत्तरी न लब्भइ, तेऊ-वाऊवज्जो पज्जत्तगो मणुयगई[2] नियमा बंधइ त्ति काउं । वेउव्विए असी वि न लब्भइ । छव्वीसे वि पंच वि । अट्ठत्तरी तेउ-वाउपज्जत्तगे अवेउव्विए बे०-ते०-च०-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ताऽपज्जत्तगे य अहिकिच्च । ते तेऊ-वाऊओ अणंतरागया विगले-सगलतिरिक्खा जाव मणुयगइं न बंधंति त्ति[3] ताव अट्ठत्तरी लब्भइ । सेसेसु अट्ठत्तरी नत्थि । सत्तावीसे अट्ठत्तरिवज्जाणि चत्तारि संतट्ठाणाणि बायरएगिंदिय नर-तिरियवेउव्विगे य अहिकिच्च । कहं ? सत्तावीसोदओ तेऊ-वाऊणं नत्थि, तेसु आयावुज्जोया णत्थि त्ति काउं । अट्ठावीस एगूणतीस-तीस-२८ । २९ । ३० । ३१ एगतीसोदएसु नियमा अट्ठत्तरिवज्जाणि चत्तारि संतट्ठाणाणि विगलिंदिय-तिरिय-मणुए य अहिकिच्च । नवरं एक्कतीसोदओ मणुयाणं तेवीसबंधगाणं नत्थि । एवं तेवीसबंधगस्स नव वि उदयट्ठाणे पडुच्च चत्तालीसं संतट्ठाणाणि । पणुवीस-

1 °णि तं०—९२ । का१ कां२ ॥ 2 °लतिरि° त ॥ 3 °त्ति अट्ठ° स ॥

छव्वीसबंधगाण पि एवं चेव, नवरं देवे वि पडुच्च २१ । २५ । २७ । २८ । २९ । ३०, एएसु उदयट्ठाणेसु बाणउई अट्ठासीई य दो सतट्ठाणा लब्भंति । दोण्ह वि बंधाण' नवविहउदए पडुच्च चत्तालीसं चत्तालीसं सतट्ठाणाणि ।

' अट्ठ चउरऽट्ठवीसे 'त्ति अट्ठावीसबंधगस्स अट्ठ उदयट्ठाणाणि, चत्तारि सताणि। तत्थ उदयट्ठाणाणि, तं०—२१। २५। २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । एत्थ एक्कवीसा तिरिय-मणुए खइग वेयगसम्मद्दिट्ठिणो पडुच्च लब्भइ । पणुवीसा आहारगसजए तिरिक्ख मणुए य वेउव्विगे सम्मद्दिट्ठिणो मिच्छादिट्ठिणो य अहिगिच्च लब्भइ। छव्वीसा जहा एक्कवीसा, तिरिक्ख मणुए पडुच्च । सत्तावीसा आहारगसजए तिरिक्ख मणुयवेउव्विए य पडुच्च । एवं अट्ठावीसा एगूणतीसा वि । तीसा तिरिय मणुयेसम्मद्दिट्ठि-सम्मामिच्छद्दिट्ठि [मिच्छद्दिट्ठि]णो आहारग-वेउव्वियसजए य पडुच्च । एकतीसा तिरिक्खसम्मद्दिट्ठि सम्मामिच्छद्दिट्ठि मिच्छद्दिट्ठिणो पडुच्च । इयाणिं सतट्ठाणाणि, तं०—९२ । ८९ । ८८ । ८६ । एक्कवीसोदए अट्ठावीसबंधगस्स वे सतट्ठाणाणि—९२ । ८८ । पणुवीसोदए ते चेव दोण्णि । किं कारण ? आहारसजओ नियमा आहारसतकम्मिओ तस्स बाणउई चेव, सेसा तिरियमणुया वेउव्विया आहारसतकम्मिगा वि, विणा वि, एएण दोण्णि । छव्वीस सत्तावीस-अट्ठावीस एगूणतीसे वि ताइ चेव दोण्णि सतट्ठाणाणि । तीसोदए चत्तारि वि सतट्ठाणाणि—९२ । ८९ । ८८ । ८६ । बाणउई अट्ठासीती य सिद्धा चेव, एगूणणउई कह ? भण्णइ—मणुस्सो तित्थगरनामसतकम्मिगो वेयगसम्मद्दिट्ठी पुव्वबद्धनिरयाउगो निरयाभिमुहो मिच्छत्त गओ तस्स तित्थगरनामबंधाभावाओ निरयपाउग्गं अट्ठावीस बधमाणस्स एगूणनउई भवइ । छासी-

---

१ ण सामण्णेण णय वि उदय पडुच्च तीस सत्त का० २ ॥ २ यमिच्छद्दिट्ठिणो सम्मामिच्छद्दिट्ठिणो सम्मद्दिट्ठिणो आहा का० २ ॥

तीसंतकम्मिओ कहं ? भण्णइ—तित्थगरा-ऽऽहारचउक्क-देवदुग-निरयदुग-वेउव्वियचउक्करहिया तेणउई असी भवति, तस्संतक-
म्मिगो तिरिक्खो मणुस्सो वा सव्वपज्जत्तीहिं पज्जत्तगो जइ विसुद्धो तो देवपाउग्गं बंधइ, तस्स देवदुगे वेउव्वियचउक्के य छूढे
छासीती भवइ; जइ संकिलिट्ठो तो निरयगइपाउग्गं बंधइ, तस्स निरयदुग वेउव्वियचउक्के य छूढे वा छासीती। एक्कतीसोदए
तिण्णि संतट्ठाणाणि—९२। ८८। ८६। एगूणनउई तिरिक्खेसु नत्थि, तिरिक्खेसु तित्थगरसंतऽभावाओ। छासीइभावणा
पूर्ववत्। अट्ठ वि उदयट्ठाणा देवगइपाउग्गं बंधमाणस्स, तस्स एगूणनवुईवज्जाणि सामण्णेण तिण्णि संतट्ठाणाणि लब्भंति।
तीसेक्कतीसोद्या दोण्णि निरयगइपाउग्गं बंधमाणस्स, तस्स चत्तारि वि संतट्ठाणाणि लब्भंति। एवं अट्ठावीसबंधगस्स अट्ठ
वि उदयट्ठाणे पडुच्च एगूणवीसं संतट्ठाणा।

'नव सत्तुगुतीस तीसम्मि 'त्ति एगूणतीस-तीसबंधगाणं नव नव उदयट्ठाणाणि, सत्त सत्त संतट्ठाणाणि। तत्थ उदयट्ठा-
णाणि एक्कवीसाईणि एक्कतीसंताणि नव। तत्थ एक्कवीसोदओ एगूणतीसं तिरिय-मणुयपाउग्गं बंधमाणाणं एगिंदिय-विगलि-
दिय-तिरिय-मणुयपज्जत्ताऽपज्जत्तग देव-नेरइये य अहिगिच्च। चउवीसोदओ एगिंदियपज्जत्ता-ऽपज्जत्तगे य अहिगिच्च। पणुवी-
सोदओ एगिंदियपज्जत्तग-देव-नेरइय-वेउव्वियतिरिय-मणुयमिच्छाद्दिट्ठिणो अहिगिच्च। छव्वीसा एगिंदियपज्जत्तग-विगलिंदिय-
पंचिंदितिरिय-मणुयपज्जत्ता-ऽपज्जत्तगे अहिगिच्च। सत्तावीसोदओ एगिंदिय-देव-नेरइय-तिरिय-मणुयवेउव्विय-मिच्छद्दिट्ठिणो
अहिगिच्च। अट्ठावीसा अउणतीसा य विगलिंदिय-तिरिय-मणुय-देव-नेरइय-वेउव्वियतिरिय-मणुए य पडुच्च। तीसा विगलिंदिय-
पंचिंदियतिरिक्ख-मणुयपज्जत्तगे देवे य उज्जोयवेयगे पडुच्च। एकतीसा विगलिंदिय-पंचिंदियतिरिए य पडुच्च। इयाणिं देवग-

इयाउग्ग तित्थगरसहिय एगूणतीस बधमाणस्स मणुसस्स असजयसम्माद्दिट्ठिस्स २१ । २६ । २८ । २९ । ३० उदया लब्भति । २५ । २७ । २८ । २९ । ३० उदया आहारगसजए वेउव्वियसंजए असजए सजयाऽसंजए य अहिगिच । नवर तीसो दओ असजय सजयाऽसजयाण नत्थि, किं कारण ? वेउव्विए उज्जोवस्स तेसिं उदओ नत्थि त्ति काउ । इदाणिं सतट्ठाणाणि, त०—९३ । ९२ । ८९ । ८८ । ८६ । ८० । ७८ । तत्थ विगलिंदिय पचिंदियतिरिक्खपाउग्ग एगूणतीस बधमाणाण एगिंदिय-विगलिंदिय-पचिंदियतिरिक्खपज्जत्ता-ऽपज्जत्ताण एक्कवीसोदए पच सतट्ठाणाणि ९२ । ८८ । ८६ । ८० । ७८ । एव जाव एगतीसोदओ ताव नेयव्व जहा तेवीसबधगस्स नीय । मणुस्सगइपाउग्ग एगूणतीस बधमाणाण एगिंदिय-विगलिंदिय-पचिंदियतिरियाण तिरियगइ मणुयगइपाउग्ग बधमाणाण मणुयाण च अट्ठत्तरिवज्जाणि ताणि चेव चत्तारि सतट्ठाणाणि अप्प-प्पणो उदयट्ठाणेसु जहासभव भाणियव्वाणि । देव-नेरइयाण पचिंदियतिरिय मणुयगइपाउग्ग एगूणतीस बधमाणाण अप्प-प्पणो उदयट्ठाणेसु दो दो सतट्ठाणाणि—९२ । ८८ । नवर नेरइयस्स मिच्छदिट्ठिस्स तित्थगरसंतकम्मगस्स मणुस्सगइपा-उग्ग बधमाणस्स अप्पप्पणो पचसु उदयट्ठाणेसु एगूणनउई लब्भइ ८९ । इदाणिं एगूणतीस तित्थगरसहिय देवगइपाउग्ग बध-माणस्स असंजयसम्मद्दिट्ठिस्स एक्कवीसोदये दो सताणि—९३ । ८९ । एव पचवीस छव्वीस सत्तावीस-अट्ठावीस एगूणतीस तीसोदएसु वि । नवरि २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० तीसोदएसु असंजय सजयाऽसजय सजए वा वेउव्विए पडुच्च दो दो संताणि ताणि चेव तेणउइ-एगूणनउयाणिं, नवरि असजय-देसविरयाण तीसोदओ नत्थि । आहारगसजय पडुच्च एएसु चेव

१ णि, अस स ॥

उदएसु एक्केक्कं संतट्ठाणं तेणउई, तित्थगरा-ऽऽहारगसंतसहिय त्ति काउं। सव्वेसिं सामण्णेण उदयट्ठाणेसु जहक्कमेण संतट्ठाणाणि
७ । ५ । ७ । ७ । ६ । ६ । ६ । ६ । ४ । एगूणतीसबंधगस्स सव्वसमुदओ चउप्पण्णं संताणि ।

इदाणिं तीसबंधगस्स नव उदयट्ठाणाणि, सत्त संतट्ठाणाणि जहा एगूणतीसं तिरियगइपाउग्गं बंधमाणाणं एगिंदिय-विग-लिंदिय-पंचिंदियतिरिय-मणुय-देव-नेरइयाणं विही भणिओ तह चेव उज्जोवसहियं तिरियगइपाउग्गं तीसं बंधमाणाणं एगिं-दियाईणं उदय-संतट्ठाणाणि । नवरं मणुयगइपाउग्गं तित्थगरसहियं तीसं बंधमाणाणं देव-नेरइयाणं विसेसो भण्णइ—देवस्स एक्कवीसोदए वट्टमाणस्स बे संतट्ठाणाणि—९३।८९। तम्मि चेव उदए नेरइयस्स एगूणणउई एगा। किं कारणं ? भण्णइ—जस्स तित्थगरा-ऽऽहारगाणि जुगवं संताणि सो नेरइएसु न उववज्जइ त्ति काउं । एवं २५ । २७ । २८ । २९ । ३० तीसोद-एसु भाणियव्वाणि, नवरि तीसोदओ नेरइयस्स नत्थि। कहं ? उज्जोवस्स उदयाभावाओ । जो आहारगसहियं तीसं बंधइ तस्स तीसोदए चेव एक्कं संतं बाणउई, तित्थगरबंधाभावात् । एवं सामण्णेण तीसबंधगाणं नवसु उदयट्ठाणेसु जहक्कमं संताणि—७।
५ । ७ । ५ । ६ । ६ । ६ । ६ । ४ । सव्वसमुदओ तीसबंधगस्स बावण्णं ॥ ३० ॥

‘ एगेगमेगतीसे ’त्ति एगतीसबंधगस्स एगं उदयट्ठाणं तीसा । किं कारणं ? देवगइपाउग्ग आहारगतित्थगरसहियं एक्क-तीसं बंधमाणो अप्पमत्तसंजओ अपुव्वकरणो वा, ते वेउव्वियं न करें-ति त्ति। एगं संतट्ठाणं तेणउई । कहं ? तित्थगरा-ऽऽहारस-हियं बंधइ त्ति काउं । ‘ एगे एगुदये अट्ठसंतम्मि ’त्ति एगविहबंधगस्स एगं उदयट्ठाणं तीसा । कारणं इमं—अपुव्वादओ वेउ-

१ °क्कमेणं सं° का१ ॥

बिय न करेंति, विशुद्धत्वात् । अट्ठ सतट्ठाणाणि—९३ । ९२ । ८९ । ८८ । ८० । ७९ । ७६ । ७५ । मूलिल्ला चत्तारि वि उवसमसेढीए खवगसेढीए वा अणियट्टिम्मि जाव तेरस णामाणि न खीयंति ताव लब्भंति । तेरस नामे खविए अणियट्टि-सुहुमसपराएसु उवरिल्ला चत्तारि वि लब्भंति ।

'उवरयबंधे दस दस वेदग सतम्मि ठाणाणि 'त्ति अबंधगाण दस उदयट्ठाणाणि—२० । २१ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । ९ । ८ । वीस-एक्कवीसा समुग्घायगयाण अतित्थगर तित्थगराण कम्मतिगकायजोगीण । छवीस सत्तावीसा तेसिं चेव ओरालियमिस्सकायजोगे वट्टमाणाण । अट्ठावीसा अतित्थगरस्स ऊसासे निरुद्धे । एगूणतीसा तस्सेव सरे निरुद्धे । अहवा अउणतीसा तित्थगरस्स ऊसासे निरुद्धे । तीसा अतित्थगरस्स सभावत्थस्स । अहवा तित्थगरस्स सरे निरुद्धे वा ३० । सभावत्थस्स तित्थगरस्स एक्कतीसा । तित्थगरस्स अजोगिस्स चरिमसमए वट्टमाणस्स नवोदओ । अतित्थगरस्स अजोगिस्स चरिमसमए वट्टमाणस्स अट्ठुदओ । दस सतट्ठाणाणि अणतरुत्ताणि अट्ठ नव अट्ठ य, एते दस । तत्थ वीसोदए बे सतट्ठाणाणि—एगूणासीती पण्णत्तरी य । एव छवीस अट्ठवीसोदएसु वि । एक्कवीसोदए दो सतट्ठाणाणि—असीती छावत्तरी य । एव सत्तावीसे वि । एगूणतीसे चत्तारि—८० । ७९ । ७६ । ७५, तित्थगर अतित्थगर पडुच्च । तीसोदए अट्ठ, त०—९३ । ९२ । ८९ । ८८ । ८० । ७९ । ७६ । ७५ । मूलिल्ला चत्तारि उवसतकसाय पडुच्च । उवरिल्ला चत्तारि वि खीणकसाय-तित्थगराऽतित्थगरकेवलिणो पडुच्च । एक्कतीसोदए बे सतट्ठाणाणि—असीई छावत्तरी य, तित्थगरकेवलिं पडुच्च । नवोदए

१ °णि, त°—२० । का१ । णि, त जहा—२० का२ ॥ २ स्स नवो का१ का२ ॥ ३ °स्स अट्ठु° का१ का२ ॥

अजोगिस्स तिण्णि संताणि—८० । ७६ । ९ । मूलिल्ला दो जाव दुचरिमसमओ ताव, अंतिमो चरिमसमए भवइ । अट्ठो-
दए अतित्थगरस्स अजोगिस्स तिण्णि संतट्ठाणाणि—७९ । ७५ । ८ । भावना पूर्ववत् । एवमबंधगस्स दससु वि उदयट्ठा-
णेसु । सव्वाणि तीसं संतट्ठाणाणि ॥ ३१ ॥

उत्तरपगईणं बंधोदय-संतभेया संवेहो य भणियाणि । इदाणिं जहा भणियं तहा परिवाडीए जीवट्ठाण-गुणट्ठाणेसु
सामित्तं भण्णइ—

तिविगप्पपगइठाणेहिँ जीवगुणसन्निएसु ठाणेसु। भंगा पउंजियव्वा, जत्थ जहासंभवो[1] भवइ ॥३२॥

तिविगप्पपगइठाणेहिं० गाहा । तिण्णि विगप्पा बंधोदय-संत त्ति, ते जेसिं णाणावरणाइपगइट्ठाणाणं ते तिविगप्पपगइ-
ट्ठाणा, तेहिं तिविगप्पपगइट्ठाणेहिं ' जीवगुणसन्निएसु ठाणेसु 'त्ति जीवट्ठाण-गुणट्ठाणनामगेसु ठाणेसु ' भंगा पउंजियव्व 'त्ति
पूर्वाभिहिता विकल्पाः प्रयोक्तव्याः, ' जत्थ जहा संभवो भवइ 'त्ति जत्थ त्ति—जीवट्ठाण-गुणट्ठाणेसु जहासंभवं ति—जत्थ
जो विगप्पो जहा संभवइ तहा भणइ ॥ ३२ ॥

पुव्वं ताव जीवट्ठाणं पडुच्च सामित्तं भण्णइ—

तेरससु जीवसंखेवएसु नाणंतराय तिविगप्पो। एक्कम्मि ति-दुविगप्पो, करणं पइ एत्थ अविगप्पो ॥३३॥

तेरससु जीवसंखेवएसु० गाहा । ' तेरससु 'त्ति सन्निपंचिंदियपज्जत्तगं मोत्तूण सेसेसु तेरससु जीवट्ठाणेसु ' नाणंतराय

---

१ °वो होइ ॥ खे१ खे२ ॥

विय न करेंति, विशुद्धत्वात् । अट्ठ सतट्ठाणाणि—९३ । ९२ । ८९ । ८८ । ८० । ७९ । ७६ । ७५ । मूलिल्ला चत्तारि वि उवसमसेढीए खवगसेढीए वा अणियट्टिम्मि जाव तेरस णामाणि न खीयंति ताव लब्भंति । तेरस नामे खविए अणियट्टि-सुहुमसपराएसु उवरिल्ला चत्तारि वि लब्भंति ।

'उवरयबंधे दस दस वेदग सतम्मि ठाणाणि 'त्ति अबंधगाण दस उदयट्ठाणाणि[1]—२० । २१ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । ९ । ८ । वीस-एक्कवीसा समुग्घायगयाण अतित्थगर तित्थगराण कम्मतिगकायजोगीण । छवीस सत्तावीसा तेसिं चेव ओरालियमिस्सकायजोगे वट्टमाणाण । अट्ठावीसा अतित्थगरस्स ऊसासे निरुद्धे । एगूणतीसा तस्सेव सरे निरुद्धे । अहवा अउणत्तीसा तित्थगरस्स ऊसासे निरुद्धे । तीसा अतित्थगरस्स सभावत्थस्स । अहवा तित्थगरस्स सरे निरुद्धे वा ३० । सभावत्थस्स तित्थगरस्स एकतीसा । तित्थगरस्स अजोगिस्स चरिमसमए वट्टमाणस्स नवोदओ[2] । अतित्थगरस्स अजोगिस्स चरिमसमए वट्टमाणस्स अट्ठुदओ[3] । दस सतट्ठाणाणि अणंतरुत्ताणि अट्ठ नव अट्ठ य, एते दस । तत्थ वीसोदए वे सतट्ठाणाणि—एगूणासीती पण्णत्तरी य । एवं छवीस अट्ठावीसोदएसु वि । एक्कवीसोदए दो सतट्ठाणाणि—असीती छावत्तरी य । एवं सत्तावीसे वि । एगूणतीसे चत्तारि—८० । ७९ । ७६ । ७५, तित्थगर अतित्थगर पडुच्च । तीसोदए अट्ठ, तं०—९३ । ९२ । ८९ । ८८ । ८० । ७९ । ७६ । ७५ । मूलिल्ला चत्तारि उवसंतकसाय पडुच्च । उवरिल्ला चत्तारि वि खीणकसाय-तित्थगरा-ऽतित्थगरकेवलिणो पडुच्च । एकतीसोदए वे सतट्ठाणाणि—असीइं छावत्तरी य, तित्थगरकेवलिं पडुच्च । नवोदए

---

१ णि, तं°—२० । कां१ । णि, त जहा—२० कां२ ॥ २ °स्स नवो कां१ कां२ ॥ ३ °स्स अट्ठु° कां१ कां२ ॥

अजोगिस्स तिण्णि संताणि—८० । ७६ । ९ । मूलिल्ला दो जाव दुचरिमसमओ ताव, अंतिमो चरिमसमए भवइ । अट्ठो-दए अतित्थगरस्स अजोगिस्स तिण्णि संतट्ठाणाणि—७९ । ७५ । ८ । भावना पूर्ववत् । एवमबंधगस्स दससु वि उदयट्ठा-णेसु । सव्वाणि तीसं संतट्ठाणाणि ॥ २१ ॥

उत्तरपगईणं बंधोदय-संतभेया संवेहो य भणियाणि । इदाणिं जहा भणियं तहा परिवाडीए जीवट्ठाण-गुणट्ठाणेसु सामित्तं भण्णइ—

तिविगप्पपगइठाणेहिँ जीवगुणसन्निएसु ठाणेसु। भंगा पउंजियव्वा, जत्थ जहासंभवो[1] भवइ ॥२२॥

तिविगप्पपगइठाणेहिं० गाहा । तिण्णि विगप्पा बंधोदय-संत त्ति, ते जेसिं णाणावरणाइपगइट्ठाणाणं ते तिविगप्पपगइ-ट्ठाणा, तेहिं तिविगप्पपगइट्ठाणेहिं ' जीवगुणसन्निएसु ठाणेसु 'त्ति जीवट्ठाण-गुणट्ठाणनामगेसु ठाणेसु ' भंगा पउंजियव्व 'त्ति पूर्वाभिहिता विकल्पाः प्रयोक्तव्याः, ' जत्थ जहा संभवो भवइ 'त्ति जत्थ त्ति—जीवट्ठाण-गुणट्ठाणेसु जहासंभवं ति—जत्थ जो विगप्पो जहा संभवइ तहा भणइ ॥ २२ ॥

पुव्वं ताव जीवट्ठाणं पडुच्च सामित्तं भण्णइ—

तेरससु जीवसंखेवएसु नाणंतराय तिविगप्पो। एक्कम्मि ति-दुविगप्पो, करणं पइ एत्थ अविगप्पो ॥२३॥

तेरससु जीवसंखेवएसु० गाहा । ' तेरससु 'त्ति सन्निपंचिंदियपज्जत्तगं मोत्तूण सेसेसु तेरससु जीवट्ठाणेसु ' नाणंतराय

[1] °वो होइ ॥ खे१ खे२ ॥

तिविगप्पो 'त्ति णाणावरणंतराइयाणं बंधाई तिण्णि विगप्पा भवंति, तं०—पंचविहो बंधो पंचविहो उदओ पंचविहं संतं ति ध्रुवत्वात् त्रयाणामपि । 'एक्कम्मि तिदुविगप्पो 'त्ति एक्कम्मि सन्निपंचिंदियपज्जत्तगम्मि तिविगप्पो वा दुविगप्पो वा । तिविगप्पो भणिओ । दुविगप्पो सुहुमसंपराइयचरिमसमयम्मि बंधे वोच्छिण्णे पंचविहो उदओ पंचविहं संतं ति, उवसंत खीणकसाएसु भवइ । एवं दुविगप्पं । अण्णो विगप्पो नत्थि, उदय संताणि जुगवं खिज्जंति त्ति काउं । 'करणं पडुच्च एत्थ अविगप्पो 'त्ति मणकरणं केवलिणो वि अत्थि तेण सण्णिणो, मणोविण्णाणं पडुच्च ते सन्निणो न भवंति । एवमिंदियं पि पडुच्चं सन्निणो न भवंति । जे करणं पडुच्च सन्निणो तेसु 'अविगप्पो 'त्ति विगप्पा तिण्णि वि नत्थि ॥ २३ ॥

इयाणिं दंसणावरणं भण्णइ—

तेरे नव चउ पणगं, नव सन्तेगम्मि भंगमेक्कारा । वेयणिया ऽऽउय-गोए, विभज्ज मोहं परं वोच्छं ॥२४॥

तेरे णव चउ पणग० गाहा । 'तेरे णव चउ पणग नव संत 'ति सन्निपज्जत्तगं मोत्तूण तेरससु जीवठाणेसु नवविहो बंधो, चउ पणगं उदओ, णव संतं ति, एए दोण्णि विगप्पा संभवंति । 'एक्कम्मि भंगमेक्कार 'त्ति सन्निपज्जत्तगम्मि दंसणावरणस्स जे एक्कारस भंगा भणिया ते सव्वे संभवंति, मिच्छद्दिट्ठिप्पभिई जाव खीणकसाओ ते सव्वे सन्निणो त्ति काउं । 'वेयणियाउयगोए विभज्ज ' इति एएसिं तिण्हं कम्माणं भंगा जीवट्ठाणेसु विगप्पेयव्वा, जहासंभवं ति भणियं भवइ । तत्थ वेयणिय गोत्ताणं भंगनिरूवणत्थमन्नभाष्यगाथा—

१ वा । जे करं° सं१ सं२ ॥ २ भज्य इति स । भज्ज त्ति ए° सं१ ॥

[1]पज्जत्तगसन्नियरे, अट्ठ चउक्कं च वेयणियभंगा । सत्तग तिगं च गोए, पत्तेग जीवठाणेसु ॥ १ ॥

वेयणियस्स[2] पुव्वभणिया अट्ठ भंगा । सन्निपज्जत्तगस्स ते सव्वे संभवंति । कहं ? केवलिणो वि करणं पडुच्च सन्निणो त्ति । ' इयर 'त्ति सन्निपज्जत्तगं मोत्तूण सेसा तेरस तेसु पत्तेगं पत्तेगं मूलिल्ला चत्तारि भंगा भवंति। कहं ? सव्वे वेयणियस्स बंधग त्ति। ' सत्तग तिगं च गोए 'त्ति जे गोयस्स सत्त भंगा भणिया ते सव्वे सन्निपज्जत्तगम्मि संभवंति । पढमभंगो तेउ-वाऊओ अणंतरं उवट्टित्तु सन्निम्मि उववन्नमेत्तस्स लब्भइ । एवं सेसेसु वि। सन्निपज्जत्तयं मोत्तूण सेसेसु तेरससु तिण्णि तिण्णि भंगा—पढम-बिइय-चउत्था, सेसा न संभवंति, उच्चागोओदओ तिरिएसु नत्थि त्ति काउं ॥ १ ॥

इयाणिं आउगभंगनिरूवणत्थं अन्तर्भाष्यगाथा—

पज्जत्ताऽपज्जत्तग, समणो पज्जत्त अमण सेसेसुं । अट्ठावीसं दसगं, नवगं पणगं च आउस्स ॥ २ ॥

सन्निपज्जत्तगस्स आउगस्स पुव्वुत्ता अट्ठावीसं भंगा ते सव्वे संभवंति, चउगतिगा सन्निणो त्ति काउं । सन्निअपज्जत्तगस्स दस । कहं ? जे तिरिक्खस्स देवगति-निरयगतिसहिया भंगा ते मोत्तूण सेसा पंच, एवं मणुसस्स वि पंच, ते दो वि सन्नि-अपज्जत्तगा लभंति, तम्हा सन्निअपज्जत्तगस्स ते सव्वे दस । असन्निपज्जत्तगस्स नव, जे तिरियाउगेण नव भंगा ते सव्वे संभवंति[3], सो तिरिक्खो त्ति काउं । सेसेसु एक्कारससु पत्तेयं पत्तेयं पंच पंच संभवंति, सन्निअपज्जत्तगस्स तिरिक्खस्स जे पंच

१ इत आरभ्याग्रेतना दशाऽपि चूर्णिगता अन्तर्भाष्यगाथाः सर्वेष्वपि मूलसूत्रादर्शेषु केनचिन्मनीषिणा विशेषप्रतिपत्त्यर्थं न्यस्ता दृश्यन्ते ॥
२ °स्स पुव्वभणियस्स पुव्व° स ॥ ३ °ति एते तिरिक्ख त्ति का२ ॥

भगा ते सव्वे संभवंति, सेसा न संभवंति, एए तिरिक्ख त्ति काउ ॥ २ ॥ इदाणिं मोहणिज्ज भण्णइ ॥ ३४ ॥—

अट्ठसु पंचसु एगे, एग दुग दस य मोहबंधगए।

तिग चउ णव उदयगए, तिग तिग पन्नरस सन्तम्मि ॥ ३५ ॥

अट्ठसु पंचसु० गाहा। अट्ठसु पंचसु एक्कम्मि य जीवट्ठाणेसु जहक्कमेण 'एग दुग दस य मोहबंधगय'त्ति सत्त अपज्जत्तगा सुहुमपज्जत्तगो य एए अट्ठ, एए नियमा मिच्छद्दिट्ठिणो त्ति काउ एएसु अट्ठसु एक्को बंधविगप्पो बावीसा। तस्स छब्भेया पुव्वभणिया। बादरएगिंदिय बे० ते० चउरिंदिय असन्निपज्जत्तगो य एते पंच, एतेसु पंचसु वि दो दो बंधट्ठाणाणि—बावीसा एक्कवीसा य, जहा पुव्व सभेदा दो वि भणिया, मिच्छत्त सासणत्त च अत्थि त्ति काउ। 'एगे'त्ति सन्निपज्जत्तगम्मि दस बंधट्ठाणाणि बावीसादि-एक्कंताणि सभेदाणि पुव्वभणियाणि।

'तिग चउ नव उदयगय'त्ति एएसु जहक्कमेण अट्ठसु तिण्णि तिण्णि उदयट्ठाणाणि—दस नव अट्ठ त्ति। अणंताणुबंधिसहिया मिच्छद्दिट्ठिस्स उदया। अणंताणुबंधिरहिया नत्थि। कह? मिच्छत्तं गतूण अंतोमुहुत्तस्स आरतो तेसु न उववज्जइ त्ति काउ। एक्केक्कम्मि उदयम्मि नपुंसगवेदेणं चेव अट्ठ अट्ठ भगा। सेसा न संभवंति। बायरएगिंदियपज्जत्तगादिसु पंचसु चत्तारि चत्तारि उदया, तं जहा—दस नव अट्ठ सत्त त्ति, अणंताणुबंधिसहिया एव। बायरएगिंदिय विगलिंदियाण नपुंसगवेदे णेव अट्ठऽट्ठ भगा उट्ठावेयव्वा। असन्निपज्जत्तगस्स तिहिं वि वेदेहिं उट्ठावेयव्वा। 'नव'त्ति एक्कम्मि सन्निपज्जत्तगम्मि नव

१ श्रीमलयगिरिपादास्तु बादरैकेन्द्रिय द्वि त्रि-चतुरिन्द्रिया ऽसंज्ञिपञ्चेन्द्रियाणां पञ्चानामपि पर्याप्तानां नपुंसकवेदस्यैवोदयमिच्छन्ति पश्यन्तु कर्म

समेदाणि ।

उदयट्ठाणाणि, तंजहा—दसाइ-एगोदयपज्जवसाणाणि तिगरहियाणि पुव्वक्खाणियाणि समेदाणि, तं जहा—२८ । २७ । २६ ।

' तिग तिग पण्णरस संतम्मि 'त्ति अट्ठसु पंचसु य जीवट्ठाणेसु तिण्णि तिण्णि संतट्ठाणाणि, तं जहा—२८ । २७ । २६ ।

पुव्वक्खाणियाणि । एगम्मि पण्णरस वि संतट्ठाणाणि, तं जहा—अट्ठावीसाइ-एगपज्जवसाणाणि समेदाणि पुव्वभणियाणि ।

इयाणिं ' कति बंधंतो वेदेइ 'त्ति संवेहो भण्णइ—अट्ठसु जीवट्ठाणेसु बावीसं बंधमाणेसु तिण्णि उदयट्ठाणाणि, तं०—

दस नव अट्ठ त्ति । एक्केक्के तिण्णि तिण्णि संतट्ठाणाणि, तं०—२८ । २७ । २६ । एवं सव्वोदए पडुच्च नव संतट्ठाणाणि ।

पंचसु वि जे बावीसबंधगा तेसिं पि एवं चेव । एकवीसबंधगस्स तिण्णि उदयट्ठाणाणि, तं०—नव अट्ठ सत्त त्ति । एक्केक-

म्मि एक्केक्कं चेव संतं अट्ठावीसा । कारणं पुव्वुत्तं । एवं एकवीसबंधगस्स तिण्णि संताणि बावीसबंधगसंतसहियाणि सव्वाणि

बारस । सन्निपज्जत्तगम्मि बावीसादिबंधगाणं अबंधगाणं च ओघुद्देसविहिणा भावेत्तु भाणियव्वं ॥ ३५ ॥

मोहो भणिओ । इयाणिं नामं भण्णइ—

पण दुग पणगं पण चउ, पणगं पणगा हवंति तिन्नेव ।

पण छ [1]प्पणगं छच्छ, प्पणगं अट्ठऽट्ठ दसगं ति ॥ ३६ ॥

सत्तेव अपज्जत्ता, सामी तह सुहुम बायरा चेव । विगलिंदिया य तिन्नि उ, तह य असन्नी य सन्नी य ॥३७॥

ग्रन्थद्वितीयविभागपृ० १९९–२०० ॥

१ °मी सुहुमा य वा° खे२ खे३ ॥

पण दुग पणग० गाहा । सत्तेव अपज्जत्ता० गाहा । एयाओ दो वि गाहाओ जुगवं वक्खाणिज्जंति । 'पण दुग पणग' त्ति सत्तण्ह अपज्जत्तगाण पंच पंच बंधट्ठाणाणि, वे वे उदयट्ठाणाणि, पंच पंच संतट्ठाणाणि । तत्थ बंधट्ठाणाणि, त०—२३ । २५ । २६ । २९ । ३० । एयाइं तिरिय मणुयपाउग्गाइं सविगप्पाइं पुव्वभणियाइं । उदयट्ठाणाइं एगिंदियबायर-सुहुम अपज्जत्तगाण दोण्णि—एक्कवीसा चउवीसा य । एक्कवीसे सुहुमअपज्जत्तगस्स एगो भंगो, बादरअपज्जत्तगस्स एक्को । चउवीसोदए सुहुमएगिंदियअपज्जत्तगस्स पत्तेय-साहारणेहिं दो भंगा । एवं बादरअपज्जत्तगस्स वि । सव्वसमुदओ छ ६ । पत्तेय पत्तेयं तिण्णि तिण्णि—२१ २४ सु०१ सु०२, बा०१ बा०२ । विगलिंदिय असण्णि सण्णिअपज्जत्तगाण पत्तेय पत्तेय दोण्णि दोण्णि उदयट्ठाणाणि—२१ । २६ । एक्कवीसोदए एक्को भंगो, छव्वीसे एक्को, सव्वे दो पत्तेय पत्तेय, नवरि सण्णिअपज्जत्तगस्स तिरियस्स दो, मणुयस्स दो, सव्वे चत्तारि । पत्तेय पत्तेय पंच पंच संतट्ठाणाणि, त०—९२ । ८८ । ८६ । ८० । ७८ । एतेसिं विवरणं पूर्ववत् । सत्तण्ह अपज्जत्तगाण णामस्स भणियं ।

'पण चउ पणगं' ति सुहुमपज्जत्तगस्स पंच बंधट्ठाणाणि, चत्तारि उदयट्ठाणाणि, पंच संतट्ठाणाणि । बंधट्ठाणाणि जहा अपज्जत्तगाणं । उदयट्ठाणाणि त०—२१ । २४ । २५ । २६ । सुहुमस्स पज्जत्तगस्स एक्कवीसोदए एगो भंगो, चउवीसोदए वे पत्तेय साहारणेहिं, पणुवीसोदए दो, छव्वीसोदए दोण्णि; सव्वे सत्त । पणुवीस छव्वीसोदये जे साहारणेण सह दो भंगा ते अट्ठत्तरिवज्जा चउसंतकम्मिया, सेसा पंच वि भंगा पंचसंतकम्मसिओदया । संताणि अपज्जत्तगसंतवत् ।

'पणगा हवंति तिण्णेव' त्ति बादरएगिंदियपज्जत्तगस्स पंच बंधट्ठाणाणि, पंच उदयट्ठाणाणि, पंच संतट्ठाणाणि । बंध

संतट्ठाणाणि पूर्ववत् । उदयट्ठाणाणि तं०—२१ । २४ । २५ । २६ । २७ । तत्थ एकवीसोदए दो भंगा जसा-ऽजसेहिं । चउवीसोदए पंच भंगा, तं०—पत्तेय-साहारण-जसा-ऽजसेहिं चत्तारि, वेउव्वियस्स एक्को । पणुवीसे वि ते चेव पंच । छव्वीसे वि ऊसासेण ते चेव पंच, ऊसासे अणुदिण्णे आयावुज्जोयाणं एगयरे उदिण्णे आयावे जसा-ऽजसेहि दोण्णि, उज्जोवे पत्तेग-साहारण-जसा-ऽजसेहिं चत्तारि, सव्वे एकारस । सत्तावीसे छब्भंगा । सव्वे एगूणतीसं । पणुवीस-छव्विसोदएसु पत्तेग-अजसकित्तिसहिओ एक्केक्को भंगो, एक्कवीस-चउवीसोदए सव्वे उदयभेदा, णवरि चउवीसोदए वेउव्वियोदयं मोत्तूणं; सव्वे सहिया अट्ठ, एए पंचसंतंसिकोदया । सेसा चउसंतंसिगोदया एकवीसं ।

'पण छ प्पणगं' ति बेइंदियपज्जत्तस्स पंच बंध० छ उदय० पंच संताणि । बंधसंताणि पूर्ववत् । उदयट्ठाणाणि तं०—२१ । २६ । २८ । २९ । ३० । ३१ । अपज्जत्तगोदयरहिया सव्वुदयभेदा वीसं । तेसु पुव्वभणिया एकवीस-छव्वीसोदयविगप्पा चत्तारि एए पंचसंतकम्मिया । सेसा सोलस चउसंतकम्मिया । एवं तेइंदिय-चउरिंदियाण वि ।

'छ च्छ पणगं' त्ति असन्निपज्जत्तगस्स छ बंधट्ठाणाणि छ उदयट्ठाणाणि पंच संतट्ठाणाणि । बंधट्ठाण-संतट्ठाणाणि जहा बेइंदियपज्जत्तगस्स । नवरं अट्ठावीसा निरयगइ-देवगतिपाउग्गं पि बंधंति त्ति अट्ठावीसा छूढा, तम्हा छब्बंधट्ठाणाणि । उदयट्ठाणा जे सन्नितिरिक्खस्स पज्जत्तगस्स भणिया वेउव्वियरहिया ते चेव, असण्णीसु वेउव्वियं नत्थि । अपज्जत्तगोदयदुगरहिय-सव्वुदयाणं पिंडो एगूणपण्णसयाणि चउरऽहिगाणि । एएसिं मज्झे एकवीस-छव्वीसोदयविगप्पा २९६ पंचसंतकम्मिया । सेसा सव्वे वि चउसंतकम्मिया ।

' अट्ठट्ठ दसक ' त्ति सण्णिपंचिंदियपज्जत्तस्स संताणि बंधट्ठाणाणि । वीस चउवीसोदय-नवोदय अट्ठोदयरहियाणि सव्वु दयट्ठाणाणि अट्ठ । एगिंदिय विगलिंदिय केवलिउदयवज्जा [1]अपज्जत्तोदयदुगट्ठिपभगचउक्करहिया[1] सव्वुदयविगप्पा सण्णि-पज्जत्तगस्स उदयविगप्पा भवंति । एत्थ पंचसतिगोदयाणि असण्णिपज्जत्तगसरिसाणि । नव अट्ठरहियाणि संतसताणि । पुव्व भणियाणि ताणि सण्णिपज्जत्तगस्स सव्वाणि सताणि ।

बंधुदय-सताणि भणियाणि । इयाणिं 'कइ बंधतो वेयइ कइ ?' त्ति एयस्स अवसरो, तं भण्णइ——सुहुमएगिंदियअपज्जत्तगाणं तेवीसबंधगाणं एक्कवीसोदए पंच सताणि——९२ । ८८ । ८६ । ८० । ७८ । एवं चउवीसोदए त्ति, सव्वे वि दस । एवं पणुवीस-छव्वीस-अउणतीस-तीसबंधगाण पि । सव्वे वि पण्णास । एवं सत्तन्ह पि अपज्जत्तगाणं, नवरि अप्पप्पणो उदयट्ठाणेसु भाणियव्वं । सुहुमपज्जत्तगाणं तेवीसबंधगाणं एक्कवीसोदए पंच सताणि पुव्वुत्ताणि । एवं २४ । २५ । २६ उदएसु । सव्वे वीस । एवं २५ । २६ । २९ । ३० बंधगाण पि । सव्वसमुदओ सयं । बायरएगिंदियपज्जत्तगाणं तेवीसबंधगाणं २१ । २४ । २५ । २६ उद-एसु पंच पंच सताणि, सत्तावीसोदए चत्तारि, सव्वे वि चउवीसं । एवं २५ । २६ । २९ । ३० बंधगाण पि । सव्वुदएसु सयं वीसुत्तरं । बेइंदियपज्जत्तगाणं तेवीसबंधगाणं एक्कवीस-छव्वीसोदएसु पंच पंच सतट्ठाणाणि पुव्वुत्ताणि । २८ । २९ । ३० । ३१ उदयेसु चत्तारि चत्तारि सताणि । सव्वे वि छव्वीसं । एवं २५ । २६ । २९ । ३० बंधगाण पि । सव्वसमुदओ तीसुत्तरं सयं । एवं तेइंदिय-चउरिंदियाण पि । असण्णिपज्जत्तगाण पि एवं चेव, नवरि अट्ठावीसबंधगाणं तीस एक्कतीसोदएसु तिण्णि

---

१ स्वस्तिकद्विकान्तवर्ती पाठ को१प्रतावेव ॥ २ °णि । एयं २८ । को१ । णि । २८ । को२ ॥ ३ एयं चे को१ को२ ॥

तिण्णि संताणि ९२ । ८८ । ८६ । सव्वसमुदओ छत्तीसुत्तरं सयं । सन्निपज्जत्तगाणं तेवीसबंधगाणं जहा बेइंदिय-पज्जत्तगाणं, सव्वे छव्वीसं । एवमेव पणुवीसबंधगाणं पि, नवरि देवाणं पणुवीसबंधगाणं पणुवीस-सत्तावीसोदएसु दो दो संताणि[1]—९२ । ८८ । सव्वे वि पणुवीसबंधगाणं तीसं । एवं छव्वीसबंधगाणं पि तीसं । अट्ठावीसबंधगाणं जहा ओघे तहा भाणियव्वं, सव्वे एगूणवीसं । एगूणतीसबंधगाणं जहा पणुवीसबंधगाणं, सव्वे तीसं । नवरि विसेसो भण्णइ—अविरयसम्मद्दिट्ठिं पडुच्च २१ । २६ । २८ । २९ । ३० उदएसु दो दो संताणि ९३ । ८९ । एवं संजय-संजयासंजय-असंजयाणं वेउव्वीणं २५ । २७ उदयेसु ते चेव दो दो लब्भंति । अहवा आहारगसंजए पडुच्च तेणउती, नेरइए तित्थगर-संतगमिच्छदिट्ठिं पडुच्च एगूणनवुती लब्भइ । सव्वे चोद्दस । एगूणतीसबंधगस्स सव्वसमुदओ चोयालीसं भवंति । तीसबंधगाणं जहा पणुवीसबंधगाणं, नवरि देवाणं मणुयगइपाउग्गं तित्थगरसहियं बंधमाणाणं २१ । २५ । २७ । २८ । २९ । ३० उदएसु दो दो संताणि ९३ । ८९ एते बारस, सव्वे बायालीसं । एकतीसबंधयाणं[2] तीसोदए तेणवुती एक्कं । एगविहबंधगाणं अट्ठ । अबंधगाणं अट्ठ । सव्वसमुदओ सन्निपज्जत्तगस्स २०८ । करणं पइ सन्नीणं केवलीणं २० । २१ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । ९ । ८ उदएसु सव्वाणि छव्वीसं संताणि ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

जीवट्ठाणेसु सामित्तं भणियं । इदाणिं गुणट्ठाणेसु सामित्तं भण्णइ—

नाणंतराय तिविहमवि दससु दो होंति दोसु ठाणेसुं। मिच्छा-साणे बीए, णव चउ पण णव य संतंसा॥३८

---

१ °णि ताणि—९२ । स ॥ २ °णं तेणवु° सं का२ ॥

णाणतराय तिविहमवि० गाहा । णाणावरणतरायिगाण 'तिविहमवि 'त्ति बधोदय-सताणि 'दमसु 'त्ति मिच्छाइ जाव सुहुमरागो ताव पचविहो बधो, पचविहो उदओ, पचविह सत ति । एत तिप्पगार पि अत्थि, कसायाणुदए बद्धति त्ति काउं । 'दो होंति दोसु ठाणेसु ' त्ति उदय-सताणि दोण्णि, एयाणि उवसत खीणकसाएसु दोसुं भवति, सुहुमरागचरिमसमए बधो वोच्छिण्णो, छउमत्थचाओ उदय सता अत्थि । ते य खीणकसायस्स चरिमसमए दो वि खिज्जति ।

'मिच्छासाणे बितिए नव चउ पण नव य सतम' त्ति बितिय ति—दसणावरण तस्स मिच्छदिट्ठि-सासणसम्मदिट्ठीसु दो भगा भवति, त०—नवविहो बधो चउ पणग उदओ नवविह सत ति । सेसा भगा न सभवति, थीणगिद्धितिगस्स नियमा ते बधग त्ति काउ ॥ ३८ ॥

मीसाइ[2] नियट्टीओ, छ चउ पण णव य सतकम्मसा[1] ।

चउबध तिगे चउ पण, णवस दुसु जुयल छस्सता[3] ॥ ३९ ॥

मिस्सादिनियट्टीओ छ चउ पण नव य सतकम्मस०त्ति । मिस्सो त्ति—सम्मामिच्छदिट्ठी, नियट्टि त्ति—अपुव्वकरणो, सम्मामिच्छदिट्ठीपभिती जाव अपुव्वकरणद्धाए सखेज्जतिमो भागो ताव छविहो बधो, थीणगिद्धितिगस्स बधाभावाओ, चउ पणग वा उदओ, नव सताणि; एए दो वि भगा सव्वेसु सभवति । 'चउबध तिगे चउ पण णवस' त्ति अपुव्वकरणद्धाए सखेज्जइमे भागे गए निद्दापयलाण बधो वोच्छिज्जइ त्ति, तओ पभिइ चउबधगो वुच्चइ । अपुव्वकरणो अणियट्टी सुहुमरागो

१ सु सभव का० ॥ २ मिस्साइ खे० ॥ ३ °ट्टीए, च्छ य खे० ॥

य चत्तारि [1]बंधंति त्ति चउबंधगा वुच्चंति । एएसु तिसु वि चउ पणगं वा उदओ, नव संताणि; उवसमसेढिं पडुच्च । अपुव्वकरण-अणियट्टिं पइ खवगस्स वि लब्भंति, नवरि चत्तारि चेव उदओ, निद्दादुगोदओ नत्थि । ' दुसु जुगुल छस्सन्त ' त्ति दुसु त्ति—अणियट्टि-सुहुमरागखवगेसु अणियट्टिअद्धाए संखेज्जेसु भागेसु गएसु थीणगिद्धितिगे खविए ततो पभिइ छस्संतकम्मिगो वुच्चइ । अणियट्टी सुहुमरागो य एएसु दुसु चउव्विहो बंधो, चत्तारि उद[2]या, छ संताणि । जुगलं ति—बंधोदया चत्तारि चत्तारि । निद्दादुगस्स खवगा अच्चंतविसुद्ध त्ति काउं उदयाभावाओ एगो चेव भंगो ॥ ३९ ॥

उवसंते चउ पण णव, खीणे चउरुदय छच्च चउ [3]संतं ।
वेयणि[4]याऽऽउय गोए, विभज्ज मोहं परं वोच्छं ॥ ४० ॥

उवसंते चउ पण णव० त्ति । उवसंतकसायम्मि कसाओदयाभावाओ नत्थि बंधो, चउ पणगं वा उदओ, नव संतं। एए दो भंगा भवंति, अच्चंतविसुद्धो न भवति त्ति काउं । 'खीणे चउरुदय छ च चउ संतं' ति खीणकसायम्मि चत्तारि उदओ, अत्यन्तविशुद्धत्वात् निद्दा-पयलाणं उदओ नत्थि, छ संतं ताव जाव दुचरिमसमओ, चरिमसमए चत्तारि उदओ, चत्तारि संतं । कहं ? भण्णइ—निद्दा-पयलाओ दुचरिमसमए खीयंति त्ति काउं । ' वेयणिया-ऽऽउय-गोएसु विभज्ज ' त्ति वेयणिया-ऽऽउ-गोत्ताण भंगा गुणट्ठाणेसु भाणियव्व त्ति भणियं भवइ । वेयणियस्स विवरणानिमित्तं अन्तर्भाष्यगाथा—

चउ छस्सु दोन्नि सत्तसु, एगे चउ गुणिसु वेयणियभंग । त्ति

---

१ वंधइ त्ति स का१ ॥ २ °दओ, छ का१ ॥ ३ संता खे२ खे३ ॥ ४ °णिय-आउगो° खे१ ॥

मिच्छद्दिट्ठिप्पभिइ जाव पमत्तसजउ त्ति एएसु छसु ठाणेसु वेयणियस्स आदिल्ला चत्तारि भगा पत्तेय पत्तेय भवति, सवे वि साया ऽसाय बधति त्ति । 'दोण्णि सत्तसु' त्ति अप्पमत्तपभिति जाव सजोगिकेवली एएसु सत्तसु गुणट्ठाणेसु वेयणियस्स तइय चउत्था भगा लब्भति, एए सवे साय चेव बधति त्ति । 'एगे चउ' त्ति अजोगिकेवलिम्मि अतिल्ला चत्तारि भगा, साया-ऽसाय सवे ससारत्था वेदेंति त्ति । पचम छट्ठा भगा जाव दुचरिमसमओ ताव भवति । तम्मि समए अवेदिज्जमाणअण्णयरवेयणीए खीणे चरिमसमए सत्तम अट्ठमा भगा भवति । 'गुणिसु' त्ति गुणट्ठाणेसु वेयणिपभगा भणिया । गोयमियाणि भण्णइ—

गोए पण चउ दो तिसु, एगऽट्ठसु दोण्णि एक्कम्मि ॥ २ ॥ त्ति

'गोए पण चउ' त्ति गोयस्स आइमा पच वि भगा मिच्छद्दिट्ठिस्स, एए चेव पढमवज्जा चत्तारि भगा सासणस्स, दो वि उच्चा नीय बधति त्ति । पढमभगो सासणस्स नत्थि, कह ? तेउ-वाउसु सासणो नत्थि, तओ अणतरागओ वि सासणो नत्थि त्ति । 'दो तिसु' त्ति सम्मामिच्छद्दिट्ठि अविरय देसविरयाण चउत्थ पचमा दो वि भगा, एए नीयागोय न बधति त्ति। अण्णे आयरिया भणति—देसविरयस्स एको भगो पचमो सभवइ, कह ? भण्णइ—'[2]पच्चगहेण वय जाइए उच्चागोयस्स उदओ होइ' (   ) त्ति वयणाओ । 'एगऽट्ठसु' त्ति गोयस्स पचमो भगोप मत्तसजयपभिइ जाव सुहुमरागो ताव हवइ । कह ? भण्णइ—बधोदय पडुच्च तेसिं उच्च चेव त्ति । छट्ठो भगो उवसतकसाय खीणकसाय-सजोगिकेवलीण, कम्मोदयअभावाओ

१ साणो त° ध ॥ २ पच्चाहेण इत्येतत्स्थाने टीकाया सामण्णेण इति पाठ ॥

गोयस्स अबंधग त्ति काउं । एवं अट्ठसु वि एक्केको चेव भंगो । 'दोण्णि एकम्मि' त्ति अजोगिकेवलिम्मि अंतिमा दो भंगा भवंति । जाव दुचरिमसमओ ताव छट्ठो भंगो । दुचरिमसमए नीयागोए खविए चरिमसमए सत्तमो भंगो ॥ ३ ॥

इदाणिं आउगभंगनिरूवणत्थं अन्तर्भाष्यगाथा—

अट्ठ-च्छाहिगवीसा, सोलस वीसं च बार छ दोसु । दो चउसु तीसु एक्कं, मिच्छाइसु आउगे भंगा ॥ ४ ॥

मिच्छद्दिट्ठिस्स आउगस्स अट्ठावीसं पि भंगा संभवंति, चउगइए पडुच्च । सासणसम्मद्दिट्ठिस्स छव्वीसं भंगा, कहं ? भण्णइ—तिरिय-मणुएसु जे निरयाउगबंधभंगा ते सासणस्स नत्थि, जेण निरयाउगं न बंधइ त्ति चउगइए पडुच्च तेण सेसा छव्वीसा भवइ । सम्मामिच्छद्दिट्ठिस्स सोलस, कहं ? नेरइय-तिरिय-मणुय-देवाणं आउयबंधकाले जे भंगा ते बारस वि न संभवंति, सम्मामिच्छभावे वट्टमाणो आउगं न बंधइ त्ति । सेसा चउगइए पडुच्च सोलस संभवंति । असंजयसम्मद्दिट्ठिस्स वीसं भंगा, कहं ? भण्णइ—तिरिय-मणुएसु निरयगइ-तिरिय-मणुयपाउग्गा बंधकाले जे छब्भंगा, देव-नेरइएसु तिरियपाउग्गा बंधकाले भंगा दो, सव्वे अट्ठ, एए असंजयसम्मद्दिट्ठिस्स न संभवंति, कहं ? भण्णइ—तिरिय-मणुया जे असंजयसम्मद्दिट्ठी ते देवाउगं मोत्तूणं सेसाउगाणि न बंधंति त्ति, देव-नेरइया मणुस्साउयं बंधंति त्ति, सेसा भंगा चउगईए पडुच्च अविरयसम्मद्दिट्ठी सव्वहिं उववज्जइ त्ति काउं लब्भंति । देसविरयम्मि बारस भंगा, कहं ? भण्णइ—तिरिय-मणुयाणं बंधपुव्वकाले दोण्णि, बंधकाले देवाउगं बंधइ त्ति दोण्णि, बंधुत्तरकाले अट्ठ वि भंगा लब्भंति, कहं ? भण्णइ—चत्तारि वि आउगाणि बंधित्तु देसविरइं पडिवज्जइ, परिणामपच्चएणं ति काउं । 'छद्दोसु' त्ति पमत्ता-ऽपमत्तेसु छ छ भंगा, कहं ? भण्णइ—मणुयाणं बंधपुव्व-

कालभंगो, देवाउगस्स बंधकालभंगो, बंधुत्तरकालभंगा य चत्तारि वि लब्भंति सव्वे छ, परिणामपच्चएण संजमं लभइ त्ति काउं। निरय तिरिय-मणुयाउसंतकम्मिगो नियमा संजमाओ परिवडइ। 'दो चउसु' त्ति मणुयाणं बंधपुव्वभंगो देवाउयबंधुत्तरभंगो य एए दो वि अपुव्वकरणाइ जाव उवसंतकसाओ ताव लब्भंति, कह? भण्णइ—एए देवाउगं न बंधंति त्ति, देवाउगं बंधित्ता वि उवसमसेढिं पडिवज्जंति त्ति काउं। बद्धाउगो खवगसेढिं न पडिवज्जइ। 'तीसु एक्कं' ति मणुयाणं बंधपुव्वभंगा खीणकसाय सजोगिकेवलि-अजोगिकेवलीण य एक्को चेव सेसा नत्थि ॥ ४ ॥

वेयणिया ऽऽउग-गोयाणि भणियाणि। 'मोहं परं वोच्छं' इयाणिं मोहणीयं भण्णइ ॥ ४० ॥—

गुणठाणगेसु अट्ठसु, एगेगं मोहबंधठाणं तु। पंचाऽनियट्टिठाणे, बंधोवरमो परं तत्तो ॥ ४१ ॥

गुणठाणगेसु० गाहा। 'गुणट्ठाणगेसु अट्ठसु' त्ति मिच्छाइ अपुव्वकरणंतेसु अट्ठसु गुणट्ठाणेसु एक्केक्कं मोहणिज्जस्स बंधट्ठाणं। मिच्छद्दिट्ठिस्स बावीसा, सासणस्स एक्कवीसा, सम्मामिच्छद्दिट्ठि अविरयसम्मद्दिट्ठिस्स य सत्तरस, देसविरयस्स तेरस, पमत्त अपमत्त अपुव्वाणं नव। एए सव्वे बंधट्ठाणा जहा हेट्ठा समेया सविगप्पा चेव एत्थ वि तहा चेव, नवरि अपमत्त अपुव्वाणं एक्केक्को चेव भंगो, अरतिशोकरहितत्वात्। 'पंचानियट्टिठाणे' त्ति अनियट्टिठाणे पंच बंधट्ठाणाणि, तं०—५। ४। ३। २। १। अविगप्पा चेव। 'बंधोवरमो परं तत्तो' त्ति तओ परं बंधो नत्थि, अनियट्टीओ उवरिं मोहणिज्जस्स बंधो नत्थि, बायरकसाओदयाभावाओ सुहुमराग-उवसंतेसु ॥ ४१ ॥

भणियाणि बंधट्ठाणाणि। इयाणिं उदओ भण्णइ—

सत्ताइ दस उ मिच्छे, सासायण-मीसए णवुक्कोसा । छाई णव उ अविरए, देसे पंचाइ अट्ठेव ॥४२॥
विरए खओवसमिए, चउराई सत्त छ च्चऽपुव्वम्मि । अणियट्टिबायरे पुण, एक्को व दुवे व उदयंसा ॥४३॥
एगं सुहुमसरागो, वेएइ अवेयगा भवे सेसा । भंगाणं च पमाणं, पुव्वुद्दिट्ठेण नायव्वं ॥ ४४ ॥

सत्ताइ दस उ मिच्छे०तिण्णि गाहाओ । मिच्छद्दिट्ठिस्स सत्ताइ-दसंताणि चत्तारि उदयट्ठाणाणि, जहा बावीसबंधगस्स तहा चेव । 'सासायणमीसए नवुक्कोस' त्ति सासायण-सम्मामिच्छद्दिट्ठीणं पत्तेयं पत्तेयं सत्ताइ-नवंताणि तिण्णि तिण्णि उदयट्ठाणाणि, सासणस्स जहा एक्कवीसबंधगस्स, जाणि हेट्ठओ सत्तरसबंधगस्स सम्मामिच्छत्तेण सत्ताइ-नवंताणि ताणि चेव सम्मामिच्छद्दिट्ठिस्स सभेयाणि । 'छाई नव उ अविरए' त्ति असंजयसम्मद्दिट्ठिस्स छाई नवंताणि चत्तारि उदयट्ठाणाणि, जहा हेट्ठा वेयग-उवसम-खइगसम्मत्तेण समं सत्तरसबंधगस्स भणियाणि ताणि चेव असंजयसम्मद्दिट्ठिस्स सभेयाणि भाणियव्वाणि । 'देसे पंचाइ अट्ठेव' त्ति देसविरयस्स पंचाइ-अट्ठंताणि चत्तारि उदयट्ठाणाणि, जहा हेट्ठा तेरसबंधगस्स उदयट्ठाणाणि ताणि चेव ॥ ४२ ॥

'विरए खओवसमिए चउराई सत्त' त्ति जे सभावसंजया सेढीए हेट्ठओ वट्टमाणा ते खओवसमियविरया वुच्चंति । के ते ? भणइ—पमत्ताऽपमत्ता य । तेसिं दोण्हं चउराइ-सत्तगंताणि चत्तारि उदयट्ठाणाणि । ते जहा सामण्णेणं नवविहबंधगस्स भणिया ते चेव दोण्ह वि सरिसा । 'छच्चऽपुव्वम्मि' त्ति अपुव्वकरणस्स चउराइ-छक्कंताणि तिण्णि उदयट्ठाणाणि, तं०—४ ।

५ । ६ । तत्थ चत्तारि चउण्ह संजलणाणमेगयरं, तिण्ह वेयाणमेगयरं, दोण्ह जुयलाणमेगयरं ति । एत्थ एक्का चउवीसा । ते चेव भयेण वा दुगुच्छाए वा सह पंच भवंति । एत्थ दो चेव चउवीसाओ । तम्मि चेव दोण्ह वि छूढे छलोदओ । एत्थ वि एक्का चउवीसा । ' अणियट्टि बायरे पुण एक्को व दुवे व उदयंस 'त्ति अणियट्टिस्स दुगोदओ एक्कोदओ य त्ति दो उदयट्ठाणाणि । तत्थ दुगोदओ जहा हेट्ठा पंचविहबंधगं पडुच्च भणिओ तहा चेव । एत्थ बारस भंगा । एत्थ एक्कोदयभेया जे चउव्विह तिविह-दुविह एगविहबंधगे पडुच्च भणिया एत्थ वि ते चेव, नवरि एक्कोदओ त्ति काउ मामण्णेण चत्तारि भंगा ॥४३॥

' एगं सुहुमसरागो वेदेइ 'त्ति एकं लोभस्स सुहुमकिट्टिं सुहुमसंपराओ वेदेति, तेणेव सुहुमसंपराओ वुच्चइ । एत्थ एक्को चेव भंगो । एवं एक्कोदयविगप्पा सव्वे पंच । 'अवेयगा भवे[3] सेसं' त्ति उवरिल्ला सव्वे मोहणिज्जस्स अवेयगा । 'भंगाणं च पमाणं पुव्वुद्दिट्ठेण नायव्व 'त्ति जे भंगविगप्पा तेसिं पमाणं हेट्ठओ भणियविहिणा भाणियव्वं ॥ ४४ ॥

इदाणिं सामण्णेण दसोदयाइसु मिच्छाइगे पडुच्च सव्वचउवीसमभेयनिरूवणत्था इमा गाहा—

एक्क छडेक्कारेक्कारसेव एक्कारसेव णव तिन्नि । एए चउवीसगया, बार दुगे पंच एक्कम्मि ॥ ४५ ॥

एक्क छडेकारे० गाहा । दसोदए मिच्छद्दिट्ठिं पडुच्च एक्का चउवीसा, भंगुट्ठावणं जहा हेट्ठा । णवोदए मिच्छद्दिट्ठिस्स चउवीसाओ तिण्णि, सासण-सम्मामिच्छ-असंजयसम्मद्दिट्ठिं पडुच्च एक्केक्का । सव्वाओ वि नवोदए छ । अट्ठोदए मिच्छद्दिट्ठिस्स तिण्णि, सासण सम्ममिच्छद्दिट्ठीण दो दो, असंजयस्स तिण्णि, संजयासंजयं पडुच्च एक्का चउवीसा । एवमट्ठोदए सव्वाओ वि

१ °र । ए स ॥ २ ऋत्ति । तत्थ ए कां२ ॥ ३ बे सद्दे' त्ति स ॥ ४ ट्ठाण म कां२ ॥

एकारस । सत्तोदए मिच्छदिट्ठि-सासण-सम्मामिच्छदिट्ठीणं पत्तेयं पत्तेयं एकेका, असंजय-संजयासंजयं पडुच्च तिण्णि तिण्णि, पमत्ता-ऽपमत्तसंजयाणं एकेका । सवाओ वि सत्तोदए एकारस । छलोदए असंजयसम्मदिट्ठिस्स एका, संजयासंजय-पमत्ता-ऽपमत्तसंजयाणं पत्तेयं पत्तेयं तिण्णि तिण्णि, अपुवकरणं पडुच्च एका । 卐[1] सवाओ वि छलोदए एकारस । पंचोदए संजयासंजयस्स एका, पमत्ता[-ऽपमत्ता]ण पत्तेयं पत्तेयं तिण्णि तिण्णि, अपुवकरणं पडुच्च 卐 दो । सवाओ वि पंचोदए नव । चउरोदए पमत्ता-ऽपमत्त-अपुवकरणं पडुच्च पत्तेयं पत्तेयं एकेका । सवाओ वि चउरोदए तिण्णि । 'बार दुगे' त्ति अणियट्टिं पडुच्च दुगोदए बारस भंगा वेयतिग-संजलचउकेहिं उट्ठेति । 'पंच एकम्मि' त्ति एकोदए अनियट्टिं पडुच्च चत्तारि विगप्पा, सुहुमरागं पडुच्च एको, सो य सुहुमकिट्टिं वेएइ ॥ ४५ ॥

एएसिं उदयविगप्पपयवदनिरूवणत्थं अन्तर्भाष्यगाथा—

बारसपणसट्ठसया १२६५, उदयविगप्पेहिं मोहिया जीवा । चुलसीतीसत्तत्तरि ८४७७ पयवंदसएहिं विण्णेया ॥ ५ ॥

एएसिं उप्पायणा—सवाओ चउवीसाओ एगत्थ मेलयित्तु[3] एकेकम्मि चउवीसं भंगा अत्थि त्ति चउवीसेहिं गुणिज्जंति; दुगोदयविगप्पा बारस, एगोदयविगप्पा पंच, एए वि सवे छुब्भति । छूढे उदयविगप्पा भवंति । उदयविगप्पो नाम जावइयाओ पगडीओ जुगवं उइज्जंति तासिं समुदओ उदयविगप्पो भण्णइ । दसोदयातिविगप्पा जाव चउरोदओ ते अप्पप्पणो विगप्पेहिं गुणेत्तु मेलवित्तु एकेकम्मि उ चउवीसं भंगा संति त्ति चयुवीसेहिं गुणिज्जंति, दुगोदयविगप्पा दोहिं गुणिज्जंति, एको-

---

१ स्वस्तिकयुगलमध्यग पाठ का२प्रतावेव ॥ २ ° यचिद ° खे२ से३ ॥ ३ लवित्तु का२ ॥

५ । ६ । तत्थ चत्तारि चउण्ह सजलणाणमेगयर, तिण्ह वेयाणमेगयर, दोण्ह जुयलाणमेगयर ति । एत्थ एक्का चउवीसा । ते चेव भयेण वा दुगुञ्छाए वा सह पच भवति । एत्थ दो चेव चउवीसाओ । तम्मि चेव दोण्ह वि छूढे छलोदओ । एत्थ वि एक्का चउवीसा । ' अणियट्ठि बायरे पुण एक्को च दुवे व उदयस 'त्ति अणियट्ठिस्स दुगोदओ एकोदओ य त्ति दो उदयट्ठाणाणि । तत्थ दुगोदओ जहा हेट्ठा पचविहबधग पडुच्च भणिओ तहा चेव । एत्थ बारस भगा । एत्थ एक्केकोदयभेया जे चउविह तिविह दुविह एगविहबधगे पडुच्च भणिया एत्थ वि ते चेव, नवरि एकोदओ त्ति काउ सामण्णेण चत्तारि भगा ॥४३॥

' एग सुहुमसरागो वेदेइ 'त्ति एक लोभस्स सुहुमकिट्टिं सुहुमसपराओ वेदेति, तेणेव सुहुमसपराओ वुच्चइ । एत्थ एक्को चेव भगो । एव एकोदयविगप्पा सव्वे पच । 'अवेयगा भवे सेस' त्ति उवरिल्ला सव्वे मोहणिजस्स अवेयगा । 'भगाण च पमाण पुव्वुद्दिट्ठेण नायव्व 'ति जे भगविगप्पा तेसिं पमाण हेट्ठओ भणियविहिणा भाणियव्व ॥ ४४ ॥

इदाणिं सामण्णेण दसोदयाइसु मिच्छाइगे पडुच्च सव्वचउवीसभेयनिरूवणत्था इमा गाहा—

एक्क छडेक्कारेक्कारसेव एक्कारसेव णव तिन्नि । एए चउवीसगया, बार दुगे पच एक्कम्मि ॥ ४५ ॥

एक्क छडेक्कारे० गाहा । दसोदए मिच्छदिट्ठिं पडुच्च एक्का चउवीसा, भगुद्दिट्ठेण जहा हेट्ठा । णवोदए मिच्छदिट्ठिस्स चउवीसाओ तिण्णि, सासण-सम्मामिच्छ असजयसम्मदिट्ठिं पडुच्च एक्केका । सव्वाओ वि नवोदए छ । अट्ठोदए मिच्छदिट्ठिस्स तिण्णि, सासण सम्ममिच्छदिट्ठीण दो दो, असजयस्स तिण्णि, सजयासजय पडुच्च एक्का चउवीसा । एवमट्ठोदए सव्वाओ नि

१ °र । प स ॥ २ °त्थि । तत्थ प का२ ॥ ३ वे सवे' त्ति प ॥ ४ °ट्ठाण स का२ ॥

एकारस । सत्तोदए मिच्छदिट्ठि-सासण-सम्मामिच्छदिट्ठीणं पत्तेयं पत्तेयं एक्केका, असंजय-संजयासंजयं पडुच्च तिण्णि तिण्णि, पमत्ता-ऽपमत्तसंजयाणं एक्केका । सव्वाओ वि सत्तोदए एकारस । छलोदए असंजयसम्मदिट्ठिस्स एका, संजयासंजय-पमत्ता-ऽपमत्तसंजयाणं पत्तेयं पत्तेयं तिण्णि तिण्णि, अपुव्वकरणं पडुच्च एका । 卐[1] सव्वाओ वि छलोदए एकारस । पंचोदए संजयासंजयस्स एका, पमत्ता[-ऽपमत्ता]ण पत्तेयं पत्तेयं तिण्णि तिण्णि, अपुव्वकरणं पडुच्च 卐 दो । सव्वाओ वि पंचोदए नव । चउरोदए पमत्ता-ऽपमत्त-अपुव्वकरणं पडुच्च पत्तेयं पत्तेयं एक्केका । सव्वाओ वि चउरोदए तिण्णि । 'बार दुगे' त्ति अणियट्टिं पडुच्च दुगोदए बारस भंगा वेयतिग-संजलचउक्केहिं उट्ठेंति । 'पंच एकम्मि' त्ति एकोदए अनियट्टि पडुच्च चत्तारि विगप्पा, सुहुमरागं पडुच्च एको, सो य सुहुमकिट्टि वेएइ ॥ ४५ ॥

एएसिं उदयविगप्पपयवदनिरूवणत्थं अन्तर्भाष्यगाथा—

वारसपणसट्ठसया १२६५, उदयविगप्पेहिं मोहिया जीवा । चुलसीतीसत्तत्तरि ८४७७ पयवंदसएहिं विण्णेया ॥ [2] ॥

एएसिं उप्पायणा—सव्वाओ चउवीसाओ एगत्थ मेलेयित्तु[3] एक्केकम्मि चउवीसं भंगा अत्थि त्ति चउवीसेहिं गुणिज्जंति; दुगोदयविगप्पा बारस, एगोदयविगप्पा पंच, एए वि सव्वे छुब्भति । छूढे उदयविगप्पा भवंति । उदयविगप्पो नाम जावइयाओ पगडीओ जुगवं उइज्जंति तासिं समुदओ उदयविगप्पो भण्णइ । दसोदयातिविगप्पा जाव चउरोदओ ते अप्पप्पणो विगप्पेहिं गुणेत्तु मेलवित्तु एक्केकम्मि उ चउवीसं भंगा संति त्ति चयुवीसेहिं गुणिज्जंति, दुगोदयविगप्पा दोहि गुणिज्जंति, एको-

---

१ स्वस्तिकयुगलमध्यग पाठ का०प्रतावेव ॥ २ ° यविंद' सं०२ से०३ ॥ ३ लवित्तु का० ॥

दयविगप्पा एक्केण गुणेसु सव्वे मेलिया पयवदविगप्पा भवति । पयवदविगप्पो नाम उदयमज्झगयाण पगईण पत्तेयपगइगणणा पयवदविगप्पो । एव मिच्छदिट्ठियादीण सामण्णेण भणिय ॥ ५ ॥

इयाणिं मिच्छदिट्ठियाइयाण पत्तेय पत्तेय उदयविगप्पनिरूवणत्थ अन्तभाष्यगाथा—

अट्ठग चउ चउ चउरऽट्ठगा य चउरो य होंति चउवीसा । मिच्छाइ अपुव्वता, बारस पणग च अणियट्टे ॥ १ ॥

मिच्छस्स अणताणुबधिणा सह दसाइ-अट्ठगतेसु उदएसु चत्तारि चउवीसाओ लब्भति, अणताणुबधिणा विणा णवाइ-सत्तगतेसु उदएसु चत्तारि चउवीसाओ । सव्वे अट्ठ । सासणस्स चत्तारि । सम्मामिच्छदिट्ठिस्स चत्तारि । असजयसम्मदिट्ठिस्स वेयगसम्मत्तेण नवाइ-सत्तगंतेसु चत्तारि चउवीसाओ, वेयगसम्मत्तेण विणा खइगसम्मदिट्ठिस्स वा उवसमसम्मदिट्ठिस्स वा अट्ठाइ छलंतेसु उदएसु चत्तारि चउवीसाओ । सव्वाओ वि अट्ठ । एव सजयासजयस्स वि अट्ठाइ-पचगतेसु उदएसु भावे-दव्व । एव सव्वाओ वि अट्ठ । पमत्ता ऽपमत्तसजयाण पि वेयगसम्मत्तेण सह विणा य सत्ताइ-चउरतेसु उदयट्ठाणेसु वि भावे यव्वं । एक्केक्कस्स अट्ठऽट्ठ । अपुव्वकरणस्स वेयगसम्मत्तेण विणा छलाइ-चउरतेसु चत्तारि चउवीसाओ लब्भंति । दुगोदए अणि-यट्टिस्स बारस, एक्कोदए चत्तारि सुहुमरागस्स एक्को ॥ ६ ॥

मिच्छाइ अपुव्वताणं जाओ चउवीसाओ अप्पप्पणो पयपदेहिं गुणिए पत्तेय पत्तेय एयाणि आगयफलाणि हवति—

---

१ "वेयव्व । सं१ ॥ २-३ भगा" सटिप्पनकम् ॥ ४ भगो" सटिप्पनकम् ॥

[1]अट्ठी वत्तीसं, वत्तीसं सट्ठिमेव बावण्णा । चोयाल चोयालं, वीसा वि य [3]मिच्छमाईसु ॥ ७ ॥

सामण्ण-विसेसेण उदयविगप्पा उदयपया य भणिया । इयाणिं जोगाइएहिं ते चेव गुणिज्जंति त्ति—

जोगोवओग-लेसाइएहिं गुणिया हवंति कायवा । जे जत्थ गुणट्ठाणेसु होंति ते तत्थ गुणकारा ॥४६॥

जोगोवओगलेसाइएहिं० गाहा । ' जोगोवओगलेसाइएहिं ' ति मिच्छद्दिट्ठीपभिइसु जे जोगादओ तेहिं तेसिं उदयदंडा उदयपया य गुणेयवा, ' जे जत्थ गुणट्ठाणेसु भवंति ' त्ति जेसु गुणट्ठाणेसु जत्तिया जोगादओ भवंति ' तइ तत्थ गुणकारो ' त्ति तम्मि गुणट्ठाणे तत्तिया गुणकारभेया भवंति त्ति भणियं । मिच्छाइ-अपुवंताणं उदयविगप्पसमासबावण्णं चउवीसाए तिवेयसंभवाए गुणेऊणं, मणजोगा चत्तारि वइजोगा चत्तारि ओरालियकायजोगो एएहिं नवहिं जोएहिं गुणिज्जंति, सवेसिं सामण्णं ति काउं । जे बारस दुगोदया जे य पंच एकोदयविगप्पा एए सवे वि सत्तरस, ते णवहिं गुणितु पुवरासिम्मि पक्खिव । वेउवियकाओगिमिच्छद्दिट्ठिस्स अट्ठ वि उदयविगप्पा । वेउवियमीस-ओरालियमीस कम्मइगकायजोगीणं पत्तेयं पत्तेयं चत्तारि

---

१ गाथेयं चूर्णिकृताऽन्तर्भाष्यगाथात्वेनाऽनिर्दिष्टाऽपि ' तत्रोदयपदप्ररूपणार्थमियमन्तर्भाष्यगाथा—अट्ठी बत्तीस० " इति सप्ततिकाटीकागतश्रीमलयगिरिनिर्देशप्रामाण्यादन्तर्भाष्यगाथातया संस्थापिता ॥ २ °याल दोसु वीसा, मिच्छामाईसु सामन्न ॥ ७ ॥ खे२ खे३ ॥ ३ " मिच्छद्दिट्ठिस्स जाणि सत्ताइ उदयट्ठाणाणि ७ । ८ । ९ । १० तेसु पत्तेयं पत्तेय जाओ चउव्वीसाओ ताओ सव्वाओ पत्तेय पत्तेय उदयठाणेहिं गुणिज्जन्ति । सत्तोदयचउवीसा सत्तहि गुणिया सत्त चेव ता हुंति । एव सेसेसु वि । सव्वे मिच्छद्दिट्ठिस्स ६८ । एव सेसेसु गुणट्ठाणेसु भावेयव्वं ।" सटिप्पनकम् ॥ ४ °णे हवंति खे२ खे३ ॥

चत्तारि । एएसु अणंताणुबंधिणा विणा उदया ण लब्भंति, किं कारणं ? वेदगसम्मद्दिट्ठी अणंताणुबंधिणो विसंजोएत्तु पुणो जइ मिच्छत्तं पडिवज्जइ, जहण्णेण अंतोमुहुत्तावसेसाउओ मिच्छत्तं पडिवज्जइ, मिच्छत्तं पडिवण्णो अणंताणुबंधिणो नियमओ बंधइ, बंधावलियाइयं पवेएइ त्ति, तम्हा उप्पण्णस्स वा अंतरगईए वा वट्टमाणस्स अणंताणुबंधिरहिया उदया न लब्भंति । सासणस्स वेउव्वियकाओगि ओरालियमिस्स-कम्मइयकायजोगीण पत्तेयं पत्तेयं चत्तारि चत्तारि । सम्मामिच्छद्दिट्ठिस्स वेउव्वियकायजोगिस्स चत्तारि । असंजयसम्मद्दिट्ठिस्स वेउव्वियकायजोगिस्स अट्ठ । एए सव्वे चोयाल भवइ त्ति । तिवेयगेसु एए सव्वे लब्भंति त्ति चउवीसाए गुणेत्तु पुव्वरासिम्मि पक्खिव । सासणस्स वेउव्वियमीसस्स चत्तारि । एत्थ नपुंसगवेओ न लब्भइ, कहं ? वेउव्वियमिस्सकाओगिसु नपुंसगवेयगेसु सासणो न उप्पज्जइ त्ति काउं । असंजयस्स वेउव्वियमीसस्स कम्मइगकायजोगिस्स य पत्तेयं पत्तेयं अट्ठऽट्ठ । एत्थ इत्थिवेदो न लब्भइ, कहं ? इत्थिवेयगेसु न उववज्जइ त्ति काउं । सामान्य प्रतीत्येदं, तदाश्रयात् होज इत्थिवेदेसु । वेयगसम्मत्तेण विणा नपुंसगवेदेण जे उदया चत्तारि ते णेरइगे पडुच्च लब्भंति । ते य खइयसम्मद्दिट्ठिणो वेयगस्स वा दिट्ठिदुगखविएस्स आहारकाओगि आहारमिस्सकायजोगिस्स पत्तेयं पत्तेयं अट्ठऽट्ठ । एएसु दो वेदा लब्भंति । कहं ? इत्थी पुव्वधरी वेउव्वियलद्धिसहिया नत्थि त्ति काउं । एए चउप्पगारा वि मेलिया छत्तीसं भवंति । ते दुवेयजुय त्ति काउं सोलसेहिं गुणित्तु पुव्वरासिम्मि पक्खिव । असंजयसम्मद्दिट्ठिस्स ओरालियमिस्सकायोगिस्स अट्ठं । एत्थ इत्थि नपुंसगवेया न लब्भंति । कहं ? मणुस्सेसु सम्मद्दिट्ठी इत्थि नपुंसगेसु न उववज्जइ त्ति प्राचुर्यवचनम्, कादाचित्का

१ °ओएत्तु का२ ॥ २ बन्धावलिकातीतानन्तानुबन्धीन् प्रवेदयत इति ॥ ३ पूर्वज्ञानधारिणी ॥ ४ ट्ठ । इत्थि° का१ ॥

ङ्गवति । एगवेयजुय त्ति अट्ठहिं गुणेत्तु पुवरासिम्मि पक्खिव । पक्खित्ते आगयं[1] १३०८१ ।

ईयाणिं[2] जोगपयट्ठाणाणि—मिच्छाइ-अपुव्वंताणं उदयपयविगप्पा "अट्ठट्ठीवत्तीस" (अन्तर्भाष्यगाथा ७)त्ति गाहाए भणिया । मिच्छाइ-अपुव्वंताणं उदयपयविगप्पाणं ३५२ चउवीसाए गुणित्तु, नवहिं जोगेहिं गुणित्तु; बारस दोहिं पएहिं गुणेऊण, एक्कोदया पंच तेहिं सहिया २९ नवहिं जोएहिं गुणेऊणं पुवरासिम्मि पक्खिव । वेउव्वियकायजोगिस्स मिच्छदिट्ठिस्स अट्ठट्ठी । वेउव्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मइगकायजोगीणं पत्तेयं पत्तेयं छत्तीसं छत्तीसं अणंताणुबंधिणा सह उदया, कारणं पुव्वुत्तं । सासणस्स वेउव्वियकायजोगि-ओरालियमिस्स-कम्मइगकायजोगीणं पत्तेयं पत्तेयं बत्तीसं बत्तीसं । सम्मामिच्छदिट्ठिस्स वेउव्वियकायजोगिस्स बत्तीसं । असंजयवेउव्वियकायजोगिस्स सट्ठी । एए सव्वे मेलिया ३६४ चउवीसेहिं गुणित्तु पुवरासिम्मि पक्खिव । सासणस्स वेउव्वियमिस्सस्स ३२ । एत्थ नपुंसगवेओ नत्थि, कारणं पुव्वुत्तं । असंजयस्स वेउव्वियमीसस्स कम्मइगकायजोगिस्स य पत्तेयं पत्तेयं सट्ठि सट्ठि । एत्थ इत्थिवेदो नत्थि, कारणं भणियं । आहारगिस्स[3] आहारगमिस्सस्स य पत्तेयं पत्तेयं चोयालं चोयालं, एत्थ इत्थिवेओ नत्थि, कारणं पूर्ववत् । एए तिप्पगारा वि २४० । एए दुवेयजुय त्ति काउं दुवेयसंभवेहिं सोलसहिं गुणित्तु पुवरासिम्मि पक्खिव । असंजयस्स ओरालियकायमीसजोगिस्स सट्ठी । एत्थ इत्थि-

---

१ टीकायां योगगुणकारे विकल्पाना सर्वाग्रम् १४१६९ अस्ति, दृश्यता कर्मग्रन्थद्वितीयविभागपृ० २१७ । श्रीजीवविजयैस्तु त्तवुकार्थे १४२९७ भङ्गा आद्दता, अवलोकयन्तु कर्मग्रन्थसार्थद्वितीयविभागपृ० २७२ ॥ २ इयाणिं इति पाठ सप्रतौ नास्ति ॥ ३ °रगकायजोगिस्स का१ का२ ॥

नपुसगवेया नत्थि, कारणं पूर्ववत्। एए एगवेयजुय त्ति काउ पुरिमवेयसमवेहिं अट्ठहिं गुणेत्तु पुवरासिम्मि पक्खित्ते आगयं ८९३४९ जोगपय।

इदाणिं उवओगं पइ उवओगट्ठया उवओगपया य भण्णति—मिच्छद्दिट्ठी सासायणाण पत्तेय पत्तेय पच पच उवओगा। सम्मामिच्छद्दिट्ठीयाइयाण तिण्ह छ छ उवओगा। पमत्ताइ सुहुमवाण पचन्ह सत्त सत्त उवओगा। मिच्छाइ-अपुव्वताण सगसगउदयट्ठाणविगप्पा सगसगउवओगेहिं गुणेऊण, मवपिंड ३२० चउवीसेहिं तिवेयसमवेहिं गुणेत्तु, दुगोदय एगोदयविगप्पा सत्तरस सत्तुवओगेहिं गुणेऊण तेसु चेव पक्खित्तेसु आगयं ७७९९।

ईयाणिं उवओगपय—तेसिं चेव मिच्छाइ अपुव्वताण सगसगउदयट्ठाणविगप्पा सगसगउदयपएहिं गुणेऊण सगसगउवओगेहिं गुणेत्तु सव्व सपिंडेत्तु २१२० चउवीसेहिं तिवेयसमवेहिं गुणेज्जा। दुगोदय एगोदयविगप्पा एगूणतीसा सत्तुवओगेहिं गुणेऊण तेसिं चेव पक्खित्ते आगय ५१०८२ उवओगपया।

---

१ ज पुव्वुत्त। एप कां१ ॥ २ टीकाया योगपदगुणनाग्रम् ९५७१७ अस्ति इत्यतः कर्मग्रन्थद्वितीयविभागपृ० २१९। श्रीजीयविज यकृतस्तबुकार्थे ९६६७७ योगपदानि, निरीक्ष्यतां कर्मग्रन्थसार्थद्वितीयविभागपृ० २७४ ॥ ३ अट्ठाइ चउरता जे उदयविगप्पा ते मिच्छाइगुणट्ठाणेसु पत्तय पत्तेय जे उवओगा भणिया तेहिं अट्ठाइ-चउरता सव्वे वि गुणिज्जन्ति। " मटिप्पनकम् ॥ ४ मतान्तरेण सप्तसप्ततिशतानि न्युत्तराणि। उक्त च—उदयाणुवओगेसुं सगसयरिसया तिउत्तरा हाति ७७ ३। ( ) इतिश्रीमलयगिरिपादाः। एतद्भङ्गविधानज्ञानार्थं द्रष्टव्यो कर्मग्रन्थद्वितीयविभागपृ० २१९ ॥ ५ इयाणिं इति पाठ सप्रतौ नास्ति ॥ ६ मतान्तरेण पुन पञ्चाशत् सहस्राणि त्रीणि शतानि पञ्चदशोत्तराणि

इयाणिं लेसं पइ—मिच्छाइ जाव असंजयसम्मद्दिट्ठि त्ति ताव छ ६ लेसाउ। उवरिमतिगाणं तिण्णि लेसाओ। एत्तो परं तु एक्का चेव सुक्कलेसा। मिच्छाइ-अपुव्वंताणं सगसगउदयट्ठाणविगप्पा सगसगलेसाहिं गुणेऊणं सव्वं पिंडियं काउं २२० चउवीसेहिं तिवेयसंभवेहिं गुणेऊण, दुगोदय-एगोदय० सत्तरस एक्काए लेसाए गुणेत्तु तेसु चेव पक्खित्तेसु आगयं ५२९७ लेसादंडं। तेसिं चेव मिच्छाइ-अपुव्वंताणं सगसगउदयट्ठाणविगप्पा सगसगउदयपयविगप्पेहिं गुणेऊण सगसगलेसाहिं य गुणेऊणं संपिंडिए १५९२ चउवीसेहिं तिवेयसंभवेहिं गुणेऊण, उवरिमएगूणतीसं एक्काए सुक्कलेसाए गुणेत्तु पुव्वरासिम्मि पक्खित्ते आगयं ३८२३७ लेसापयं ॥ ४६ ॥

सामण्णेणुदया भणिया। इदाणिं संतं भण्णइ—

तिन्नेगे एगेगं, तिग मीसे पंच चउसु नियट्टिए तिन्नि[2]।
एक्कार बायरम्मी[3], सुहुमे चउ तिन्नि उवसंते ॥ ४७ ॥

तिण्णेगे एगेगं० गाहा। मिच्छद्दिट्ठिस्स तिण्णि संतट्ठाणाणि, [4]तं०—२८। २७। २६। एएसिं भावणा जहा बावीस-

पन्नारा ५०३१५ ॥ (   ) " इति श्रीमलयगिरिमहर्षय । एतद्गत-

५०३१५। उक्तं च—पन्नास च सहस्सा, तिन्नि सया चेव पन्नारा ५०३१५ ॥ (   ) " इति श्रीमलयगिरिमहर्षय । एतद्गत-संख्याविधिजिज्ञासुभिर्द्रष्टव्यं कर्मग्रन्थद्वितीयविभागे २२० तमं पृष्ठम् ॥ १ लेसाउ इति पाठ. संप्रतौ नास्ति ॥ २ °सु तिगऽपुव्वे। प° खे२। अयमेव पाठ शोभन, पर चूर्णिकारैः टीकाकृद्भिश्च नियट्टीए तिन्नि इति पाठो विवृत इति नादृतोऽयं समीचीनोऽपि पाठो मूले ॥ ३ °रम्मि अ, सु° खे२ ॥ ४ तं जहा—२८। का२ ॥

पयगस्स । ' इक्केक ' ति सासणस्स एक सत अट्ठावीसा । एयस्स भावणा जहा एक्कवीसबंधगस्स । ' तिग मिस्से 'त्ति सम्मा-
मिच्छद्दिट्ठिस्स तिण्णि सतट्ठाणाणि २८ । २७ । २४ । भावणा जहा सम्मामिच्छद्दिट्ठिस्स सत्तरसबंधगस्स । ' पंच चउसु 'त्ति
असंजयसम्मद्दिट्ठि-संजयासंजय पमत्ता-ऽपमत्तेसु एएसु चउसु पंच पंच सतट्ठाणाणि, तं०—२८ । २४ । २३ । २२ । २१ ।
एएसिं भावणा जहा सत्तरस तेरस-नवविहबंधगाण । ' नियट्टिए तिण्णि ' त्ति अपुव्वकरणम्मि तिण्णि सतट्ठाणाणि, तं०—
२८ । २४ । २१ । अट्ठावीस चउवीसा उवसमसम्मद्दिट्ठिं पडुच्च उवसमसेढीए लब्भइ । एक्कवीसा दोसु वि सेढीसु, बद्धाउगो
खइगसम्मद्दिट्ठी उवसमसेढीए लब्भइ त्ति काउं । ' एक्कारस बायरम्मि 'त्ति बायरो–अणियट्टी तम्मि एक्कारस सतट्ठाणाणि,
तं जहा—२८ । २४ । २१ । १३ । १२ । ११ । ५ । ४ । ३ । २ । १ । अट्ठवीसा चउवीसा य उवसमसेढीए । एक्कवीसा
दोसु वि सेढीसु, खवगसेढीए जाव अट्ठ कसाया ण खीणा ताव लब्भइ । खीणेसु तेरस भवति । तओ नपुंसगवेए खीणे
बारस । तओ इत्थिवेए खीणे एक्कारस । छण्णोकसाए खीणे पंच । पुरिसवेए खीणे चत्तारि । कोहसंजलणाए खीणाए तिण्णि
माणसंजलणाएँ खीणाए दो । मायासंजलणाए खीणाए एक्क । कहं ? भण्णइ—मायासंजलणाए खवियाए तओ अंतोमुहु-
त्तेण लोहस्स किट्टीओ काऊण पच्छा विणासिज्जंति त्ति काऊण । ' सुहुमे चउ 'त्ति सुहुमसंपराइयम्मि चत्तारि सतट्ठाणाणि,
तं०—२८ । २४ । २१ । १ । अट्ठावीस-चउवीस एक्कवीसाओ उवसमसेढीए उवसम खइगसम्मद्दिट्ठीण । एक्कं खवगसेढीए

१ ' पगग ' त्ति का१ का२ ॥ २ स जहा—२८ । खं१ खं२ ॥ ३ मद्दिट्ठि स ॥ ४-५ य खवियाए खं२ ॥ ६ ' चत्तारि ' त्ति स का२ ॥

भवइ लोभसंजलणाए । ' तिण्णि उवसंते 'त्ति उवसंतकसायम्मि तिण्णि संतट्ठाणाणि, तं जहा—२८ । २४ । २१ । उवसमसम्मद्दिट्ठि-खइगसम्मद्दिट्ठिणो पडुच्च । सामण्णेणं संताणि भणियाणि । इयाणिं कइ बंधंतो वेएइ कइ कइ वा पगइसंतट्ठाणाणि ? मिच्छद्दिट्ठिस्स बावीसं बंधमाणस्स दसाइ-अट्ठंतेसु उदएसु तिण्णि तिण्णि संतट्ठाणाणि । सत्तोदए एकं । जत्थ जत्थ अणंताणुबंधिणा विणा उदओ तत्थ तत्थ एकं संतं अट्ठावीसा, कारणं पुव्वुत्तं । सव्वे संता दस । सासणस्स जहा एकवीसबंधगस्स तहा । सव्वाणि तिण्णि संताणि । सम्मामिच्छद्दिट्ठिस्स जहा सत्तरसबंधगस्स सम्मामिच्छद्दिट्ठिस्स भावणा तहा । सव्वाणि नव संताणि । असंजयसम्मद्दिट्ठि-संजयासंजय-पमत्ता-ऽपमत्तसंजयाणं पत्तेयं पत्तेयं सत्तरस सत्तरस संताणि । जहा सत्तरसबंधगस्स असंजयसम्मद्दिट्ठिस्स भावणा तहा भाणियव्वं । अपुव्वकरणस्स तिसु वि उदयट्ठाणेसु पत्तेयं पत्तेयं तिण्णि तिण्णि संतट्ठाणाणि । सव्वाणि नव । अणियट्टिस्स दुगोदए पंचविहबंधगस्स छ संतट्ठाणाणि, तं०—२८ । २४ । २१ । १३ । १२ । ११ । चउविहबंधगस्स एकोदए छ संतट्ठाणाणि, तं०—२८ । २४ । २१ । ११ । ५ । ४ । एएसिं भावणा जहा चउविहबंधे । सव्वाणि वि छ संतट्ठाणाणि । तिविह-दुविह-एगविहबंधगाणं पत्तेयं पत्तेयं पंच पंच संतट्ठाणाणि । जहा हेट्ठा ओघबंधे भणियं तहा चेव । सव्वसमुदओ सत्तावीसं । ' सुहुमे चउ तिण्णि उवसंते ' त्ति अबंधगस्स सुहुमसंपरागस्स एकोदए वट्टमाणस्स ताणि चेव चत्तारि संतट्ठाणाणि । उवसंतकसायस्स अबंधगस्स अवेयगस्स तिण्णि संतट्ठाणाणि—२८ । २४ । २१ । एवं मोहणिज्जस्स संवेहो समत्तो ॥ ४७ ॥

---

१ °कं । तं जत्थ का१ ॥

इयाणिं गुणट्ठाणेसु नामस्स संवेहो बंधाईण भण्णइ—

छ न्नव छक्क तिग सत्त दुग दुग तिग दुग ति अट्ठ चउ ।
दुग छक्क चऊ दुग पण, चउ चउ दुग चउ पैणेग चऊ ॥ ४८ ॥

एगेगमट्ठ एगेगमट्ठ छउमत्थ-केवलिजिणाण । ऐग चऊ एग चऊ, अट्ठ चउ दु छक्कमुदयसा ॥४९॥

छण्णव छ त्ति गाहा । [एगेगमट्ठ० गाहा] मिच्छदिट्ठिस्स सामण्णेण छब्बंधट्ठाणाणि, त०—२३ । २५ । २६ । २८ । २९ । ३० । तेवीसा एगिंदियअपज्जत्तगपाउग्ग चउविगप्प [बंधमाणस्स] जहा हेट्ठओ भणिय तहा चेव । पणुवीस जहा एगिंदियपज्जत्तग-बे० ते०-च० पंचिंदियतिरिय मणुयअपज्जत्तगाण पाउग्ग बंधमाणस्स तहा चेव । छव्वीसा जहा एगिं दियपज्जत्तगपाउग्ग आयावुज्जोवेएगयरसहिय बंधमाणस्स । अट्ठावीसा देव-नेरइगपाओग्ग बंधमाणस्स । एए सव्वे सविगप्पा तहा चेव । एगूणतीसा तित्थगरसहिय देवगइपाओग्ग बंध मोत्तूण सेसा सव्वे, तित्थगरबंधो सम्मत्तपच्चइओ त्ति नत्थि । सेसा सव्वविगप्पा ९२४० । तीसा वि तित्थगरसहिय मणुयगइपाओग्ग बंध, आहारगसहिय देवगइपाओग्ग बंध मोत्तूण, कह ? जहक्कम सम्मत्त संजमपच्चइआओ नत्थि । सेसा सविगप्पा सव्वे ४६३२ ॥

---

१ छ च चऊ खे२ ॥ २ पण एग च खे१ । पणगेग च खे२ ॥ ३ एग चउ एग चउ, अ० खे२ । एग चउ ए० खे१ ॥ ४ वसहि स । कां१ प्रतिस्तु खण्डिता ॥ ५ छबे विग स । कां१ प्रति खण्डिता ॥

[1]चउ पणुवीसा सोलस, नव चत्ताला सया य बाणउई[2] । बत्तीसुत्तरछायालसया मिच्छस्स बंधविही[3] ॥ ८ ॥

मिच्छद्दिट्ठिस्स नव उदयट्ठाणाणि—२१ । २४ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । एत्थ एकत्तीसाई सव्वोदयविगप्पा आहारगसंजय७ वेउव्वियसंजय२ केवलि८ उदए मोत्तूण मिच्छद्दिट्ठिस्स सेसा सव्वे घेत्तव्वा जहा हेट्ठओ । जाया मिच्छद्दिट्ठिस्स सव्वुदया ७७७३ ॥

इयाणिं मिच्छद्दिट्ठिस्स छ संतठाणाणि, तं०—९२ । ८९ । ८८ । ८६ । ८० । ७८ । तत्थ बाणउई चउगइगमिच्छद्दिट्ठिगे पडुच्च । एगूणनउई वेयगसम्मद्दिट्ठी तित्थगरनामबंधगो मिच्छत्तं गओ नरएसु उववँज्जिउकामो तं पडुच्च; नेरइएसु उववण्णस्स अंतोमुहुत्तं लब्भइ । अण्णेसु नत्थि । अट्ठासीई चउगइगे मिच्छद्दिट्ठिणो पडुच्च । छासीई असीई य एगिंदिएसु देवगइ-निरयगइपाउग्गे य उव्वलिए लब्भइ । तओ उव्वट्टियाणं विगलिंदिएसु उववण्णाणं पि लब्भइ[4] । पंचेंदियतिरिय-मणुएसु वि उववण्णाणं जाव सव्वपज्जत्तीभावं न गच्छंति ताव लब्भंति । पज्जत्तिभावे गए वि अंतोमुहुत्तं जाव निरय-देवगइपाउग्गं न बंधंति ताव लब्भंति । अट्ठसत्तरी तेउ-वाउजीवेहिं मणुयगइउव्वलिए पडुच्च लब्भइ । तओ उव्वट्टियाणं विगलिंदिय-पंचिंदियतिरिक्खेसु उववण्णाणं अंतोमुहुत्तकालं जाव मणुयगई न बंधइ ताव लब्भंति ।

---

१ चूर्णिकृताऽन्तर्भाष्यगाथात्वेन नोल्लिखितापीय गाथा " त्रयोविंशत्यादिषु च बन्धस्थानेषु यथासङ्ख्यं भङ्गसङ्ख्यानिरूपणार्थमियमन्तर्भाष्यगाथा—चउ° " इति श्रीमन्मलयगिरीयटीकावचनप्रमाणेन प्रतिष्ठितात्रान्तर्भाष्यगाथातयेति ॥ २ °उया । य° खे१ गे३ ॥ ३ ' सव्वमसुदओ १३९२६ " संटिप्पणी ॥ ४ °वण्णिउका° का२ ॥ ५ °इ । तिरि° स । का१ प्रतिस्तु खण्डिता ॥

एव सामण्णेण बधोदय सताणि भणियाणि । इयाणिं कइ बधतो वेएइ कइ वा से सताइं ? ति एय भण्णइ—मिच्छ दिट्ठिस्स तेवीस बधमाणस्स नव वि उदयट्ठाणाणि सविगप्पाणि समवति, नवरि २१ । २५ । २७ । २८ । २९ । ३० उदएसु जे देव-नेरइये पडुच्च भगा ते सवे न समवति । कह ? एगिंदियअपज्जत्तगजाइ देवा न बधति, एगिंदियजाइ च नेरइया न बधति त्ति काउ । पच सतट्ठाणाणि—९२ । ८८ । ८६ । ८० । ७८ । एत्थ मूलिल्लेसु चउसु उदयट्ठाणेसु पच पच संतट्ठाणाणि । पणुवीस-छब्बीसोदयेसु तेउ-वाउकाइए पडुच्च अट्ठसत्तरी लब्भइ, छब्बीसे विगलिंदिय पचिंदियतिरिक्खे वा तेउ वाऊओ अणतरागए पडुच्च । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ एएसु पचसु चत्तारि चत्तारि सतट्ठाणाणि अट्ठत्तरिवज्जाणि । कह ? पज्जत्तगकाले तेउ वाउजीवे मोत्तूण सेसेसु न भवति त्ति सवोदए पडुच्च तेवीसबधगस्स सतट्ठाणाणि चत्तालीस । एव पणु वीस छब्बीसबधगाण वि । नवरि देवो वि अप्पणो सवोदएसु वट्टमाणो एगिंदियपज्जत्तगपाउग्ग बधइ । तत्थ बायर पज्जत्तय पत्तेय थिरा ऽथिरसुभा ऽसुभ-दूभग अणाएज्ज-जसा ऽजसेहिं अट्ठ भगा लब्भति, सेसा न समवति कम्हा ? सुहुम साहारण अपज्जत्तगेसु देवो न उववज्जइ त्ति । सतभावणा तहेव; सवे चत्तालीस । छब्बीसे बधे सवबधविगप्पे देवो बधइ, सतभावणा तहेव, सवे ४० । अट्ठावीसबधगस्स मिच्छदिट्ठिस्स दोण्णि उदया—३० । ३१ । तीसा पचिंदियतिरिय मणुए पडुच्च, एकत्तीसा पचिंदियति रिए पडुच्च । अट्ठावीसबधगस्स चत्तारि सतट्ठाणाणि—९२ । ८९ । ८८ । ८६ । तत्थ तीसोदए चत्तारि वि । तत्थ एगूण-णउती तित्थगरनामबधगो वेयगसम्मद्दिट्ठी मिच्छत्त पडिवण्णो निरयाभिमुहो निरयपाउग्ग अट्ठावीस बधइ, त पडुच्च ।

१ 'इ । एय स । कां१ अतो पत्राभाव ॥ २ न समव कां२ । का१ प्रति खण्डिता ॥ ३ व्वीस ब स कां१ ॥

सेसाणि संताणि तिरिय-मणुयाणं सामण्णाणि । एकतीसोदए एगूणनवुतीवज्जाणि तिण्णि संताणि । कहं ? तित्थगरसंतं तिरिएसु नत्थि त्ति । सवाणि सत्त । एगूणतीसं विगलिंदिय-तिरिय-मणुयपाउग्गं बंधमाणस्स नव वि उदयट्ठाणाणि, छ संतट्ठाणाणि जहा छवीसबंधगस्स तहा भाणियवं । नवरि नेरइगस्स मणुयगइपाउग्गं एगूणतीसं बंधमाणस्स अप्पणएसु पंचसु उदयट्ठाणेसु एगूणनवुती लब्भइ, अण्णत्थ न । देव-नेरइगोदएसु ९२ । ८८ । मणुओदएसु ९२ । ८८ । ८६ । ८० । विगलिंदिय-पंचिंदिओदएसु अप्पप्पणो मूलिल्लेसु दुसुं पंच पंच, उवरिल्लेसु अट्ठत्तरिवज्जाणि चत्तारि । एगिंदिओदएसु य अप्पप्पणो मूलिल्लेसु चउसु पंच, सत्तावीसोदए अट्ठत्तरिवज्जाणि चत्तारि । सामण्णेणं एक्कवीसाइसु उदएसु संताणि ६ । ५ । ६ । ५ । ५ । ५ । ५ । ४ । ४ । सवाणि वि मिच्छद्दिट्ठिस्स संताणि पणयाला । तीसं विगलिंदिय-पंचिंदियतिरियपाउग्गं बंधमाणस्स एवं चेव, नवरि एगूणणवुती नत्थि । कहं ? एगूणनउइसंतकम्मिगो तिरियगइपाओग्गं न बंधइ त्ति । सेसाणं भावणा जहा एगूणतीसबंधे । सामण्णेणं तीसबंधगस्स उदएसु जहक्कमेण संताणि ५ । ५ । ५ । ५ । ४ । ४ । ४ । ४ । ४ । सवाणि चत्तालीसं ।

एवं मिच्छद्दिट्ठिस्स बंधोदय-संताणं संवेहो भणिओ । इदाणिं सासणस्स बंधोदय-संताणि भण्णंति—' तिग सत्तग दुगं' ति तत्थ तिण्णि बंधट्ठाणाणि—२८ । २९ । ३० । अट्ठावीसा पंचिंदियतिरिय-मणुयाणं देवगइपाउग्गं बंधमाणाणं । एत्थ बंधविगप्पा अट्ठ थिरा-ऽथिर-सुभा-ऽसुभ-जसा-ऽजसेहिं कायवा । एगूणतीसा एगिंदिय-विगलिंदिय-पंचिंदियतिरिय-मणुय-देव-

१ °सु दुसु पं° का१ ॥

नेरइयाण सासणाण पंचिंदियतिरिय मणुयपाउग्ग एगूणतीस बंधमाणाण । एत्थ बंधविगप्पाण ६४०० । कह ? छुडसठाण छेवट्ठवज्जाणि पंच संठाण-संघयणाणि पसत्था-ऽपसत्थविहायगइ थिरा२ सुभा२ सुभग२ सुस्सर२ आएज्ज२ जसा ऽजसेहिं कायवा ३२०० तिरियगइपाउग्गेण । एयाणि एत्तियाणि चेव मणुयगइपाउग्गेण त्ति । बिगुणिए सव्वपिंडो भवइ ६४०० । तीसा तेसिं चेव एगिंदियाईण पंचिंदियतिरियपाओग्ग उज्जोवसहिय तीस बंधमाणाण । एत्थ बंधविगप्पा ३२०० । कह ? विगलिंदियपाउग्ग सासणो न बंधइ त्ति ।

[1]अट्ठ य सय चोवट्ठिं, बत्तीस सया य सासणे भेया । अट्ठावीसाईसु, सव्वाणऽट्ठहिगछण्णउइ ९६०८ ॥ ० ॥

सासणस्स सत्त उदयट्ठाणाणि, तं०—२१ । २४ । २५ । २६ । २९ । ३० । ३१ । तत्थ एक्कवीसा एगिंदिय विगलिंदिय पंचिंदियतिरिय-मणुय-देवे पडुच्च । नेरइगेसु सासणो न उववज्जइ त्ति न गहिओ । एत्थ विगप्पा एगिंदियबायरपज्जत्तगेण जे भवंति ते य दोण्णि । सुहुमेसु अपज्जत्तेसु य सासणो न उववज्जइ त्ति तेण ण गहिया । विगलिंदिय पंचिंदियतिरिय मणुएसु य पज्जत्तगेण जे विगप्पा ते सव्वे संभवंति । ते य एगिंदिय विगलाण पत्तेय पत्तेय दो दो, सेसाण अट्ठऽट्ठ भंगा । देवाण वि अट्ठ । सव्वे वि बत्तीस । चउवीसोदए एगिंदिएसु उववण्णमेत्तस्स एत्थ विगप्पा बायर पज्जत्त-पत्तेग जसाऽजसेहिं दोण्णि, सेसा णव ण संभवंति, सासणो साहारण-सुहुम-तेउ-वाउसु न उववज्जइ त्ति । पणुवीसोदओ सासणस्स देवेसु

१ अट्ठसय चो खे२ । चूर्णिकृद्भिर् तर्भाष्यगाथात्वेनानिर्दिष्टाऽपीयं गाथा ' उक्तार्थसङ्ख्यानिरूपणार्थमियमन्तर्भाष्यगाथा—अट्ठ य० " इति श्रीमलयगिरीयटीकानिर्देशानुसारेण संस्थापिताऽत्रान्तर्भाष्यगाथात्वेनेति । तथा चेयं गाथा खे१ प्रतौ नास्ति ॥

उववण्णमेत्तस्स । एत्थ भंगा अट्ठ । छवीसोदओ विगलिंदिय-पंचिंदियतिरिय-मणुएसु उववण्णमेत्तस्स आईए लब्भइ सासणो। एत्थ विगप्पा अपज्जत्तगोदयं मोत्तूण सेसा सवे संभवंति । सवसमुदओ ५८२ । सत्तावीस-अट्ठावीसोदया ण संभवंति। कम्हा? अंतमुहुत्ते गए एए दो वि उदया लब्भंति, सासणभावो आईए छडावलियमेत्ते किंचूणे लब्भइ त्ति । एगूणतीसोदओ देव-नेरइयाण सट्ठाणगयाणं सम्मत्ताओ परिवडमाणाणं । एत्थ नव भंगा—नेरइगस्स एको, देवस्स अट्ठ, सवे वि नव । तीसोदओ तिरिय-मणुयाणं पढमसम्मत्तं उप्पाडेत्तु परिवडमाणाणं, देवस्स वा उत्तरवेउवियस्स । एत्थ विगप्पा तिरिय-मणुयाणं पत्तेयं पत्तेयं ११५२, देवस्स अट्ठ । सवाणि २३१२ । एकतीसोदओ पंचिंदियतिरियाणं सम्मत्ताओ परिवडमाणाणं एत्थ विगप्पा पंचिंदियतिरियाणं जे ते सवे संभवंति ११५२ ।

[2]बत्तीस दोण्णि अट्ठ य, बासीयसया य पंच णव उयया । बारऽहिगा तेवीसं, बावण्णेक्कारससया य ॥१०॥ सव्वसमुदओ ४०९७ ॥

सासणस्स दो संतट्ठाणाणि—९२ । ८८ । कहं ? आहारगसरीरनामं बंधित्तु उवसमसेढीओ परिवडमाणो सासणभावं कोई गच्छइ त्ति तस्स बाणउई । अट्ठासीती चउगइयाणं सम्मत्ताओ परिवडमाणाणं लब्भइ । अण्णे भणंति—सासणस्स एकं संतं ति अट्ठासीई चेव । जे एवं भणंति ते उवसमसेढीओ परिवडमाणं अयाणंता भणंति ।

सामण्णेण बंधुदय संताणि भणियाणि । इदाणिं संवेहो—अट्ठावीसबंधगस्स सासणस्स दो उदया—तीसा य एकतीसा।

---

१ किञ्चिदूने ॥ २ चूर्णिकारैरन्तर्भाष्यगाथात्वेनानुल्लिखिताऽपीयं गाथा " उक्तरूपाया एव भङ्गसङ्ख्याया निरूपणार्थमियमन्तर्भाष्यगाथा—बत्तीस० " इत्याचार्यश्रीमलयगिरीयटीकावचनप्रामाण्यादुपस्थापिताऽत्रान्तर्भाष्यगाथात्वेनेति ॥

य । अपज्जत्तगकाले सासणो देवगइपाउग्गं न बंधइ त्ति सेसोदया न संभवंति । तीसोदए दो संताणि—९२ । ८८ । मणुए पडुच्च । तिरिए पडुच्च अट्ठासीती चेव । एक्कतीसोदए एक्कं संत अट्ठासीई, उवसमसेढी तिरिक्खस्स नत्थि त्ति काउं । एगूणतीस तिरिय मणुयपाओग्गं बंधमाणस्स सत्त वि उदयट्ठाणाणि । एगिंदिय विगलिंदिय पंचिंदियतिरिय मणुय देव नेरइयाणं अप्पप्पणो भणिओदएसु एक्कं चेव संतं अट्ठासीती, नवरि मणुस्सस्स तीसोदए दो संताणि । एवं तीसबंधगस्स वि भाणेयव्वं । एक्कवीसोदयाइसु सामण्णेण संताणि १ । १ । १ । १ । १ । २ । १ । सव्वाणि अट्ठ ।

इयाणिं सम्मामिच्छद्दिट्ठिस्स बंधाइट्ठाणा भण्णंति—' दुग तिग दुग 'त्ति । तत्थ दोण्णि बंधट्ठाणाणि—२८ । २९ । अट्ठावीसा तिरिय मणुयाणं सम्मामिच्छद्दिट्ठीणं देवगइपाउग्गं बंधमाणाणं । सेसगइपाउग्गाणि मणुय तिरिया सम्मामिच्छद्दिट्ठिणो न बंधंति त्ति न संभवंति । एत्थ बंधविगप्पा अट्ठ । एगूणतीसा देव नेरइयाणं मणुयगइपाउग्गं बंधमाणाणं, एत्थ वि ते चेव थिरा ऽथिर सुभा ऽसुभ जसा ऽजसेहिं अट्ठ भंगा, सेसाणि जुगलाणि पसत्थाणि त्ति ।

सम्मामिच्छद्दिट्ठिस्स तिण्णि उदयट्ठाणाणि—२९ । ३० । ३१ । एत्थ एगूणतीसा देव नेरइगे पडुच्च, नव भंगा । तीसा पंचिंदियतिरिय मणुये पडुच्च सव्वविगप्पा संभवंति । एक्कतीसा पंचिन्दियतिरियाणं सव्वविगप्पा संभवंति । सम्मामिच्छद्दिट्ठिस्स सव्वोदयविगप्पाणं ३४६५ ।

दो संतट्ठाणाणि—९२ । ८८ ।

---

१ 'भवति । सर्वेष्वाद्येषु । त्रिशदुदये भङ्गा २३०४ ॥ २ भवति । सर्वासु प्रतिषु । एकत्रिंशदुदये विकल्पा ११५२ ॥

इदाणिं ' कइ बंधंतो वेएई 'त्ति'—सम्मामिच्छद्दिट्ठिस्स अट्ठवीसबंधगस्स दो उदयट्ठाणाणि ३० । ३१ । एकेकम्मि दो दो संताणि । एगूणतीसबंधगस्स एक उदयट्ठाणं एगूणतीसा । तम्मि दो वि संतट्ठाणाणि । सामण्णेणं एगूणतीसादिसु वि उदएसु संताणि जहक्कमेण २ । २ । २ । सव्वाणि छ ।

सम्मामिच्छद्दिट्ठिस्स बंधाईणि भणियाणि । इदाणिं असंजयसम्मदिट्ठिस्स बंधाइट्ठाणा भण्णंति—' तिगऽट्ठ चउ 'त्ति । तत्थ बंधट्ठाणाणि तिण्णि, तं०—२८ । २९ । ३० । अट्ठावीसा जहा सम्मामिच्छद्दिट्ठिस्स तहा[2] । एगूणतीसा वि मणुयगइ-पाओग्गा तहेव[3] । तित्थगरसहिया देवगइपाउग्गा एगूणतीसा मणुयाणं भवइ । विगप्पा ते चेव अट्ठ । तिरिएसु तित्थगर-बंधो नत्थि त्ति न संभवइ। तीसा तित्थगरसहिया मणुयगइपाउग्गं बंधमाणाणं देव-नेरइयाणं लब्भइ। विगप्पा ते चेव अट्ठ।

अट्ठ उदयट्ठाणाणि—२१ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । तत्थ एकवीसा नेरइय-तिरिय-मणुय-देवे पडुच्च । बद्धाउओ खइग-वेयगसम्मदिट्ठी सव्वहिं उववज्जइ त्ति नेरइय-तिरिएसु वि लब्भइ । एत्थ विगप्पा अपज्जत्तोदयविग-प्पविवज्जिया सव्वे संभवंति । अपज्जत्तगेसु न उववज्जइ त्ति अपज्जत्तोदया न संभवंति । पणुवीस-सत्तावीसोदया देव-नेरइए वेउ-व्वियतिरिय-मणुए य पडुच्च, नेरइगो खइग-वेयगसम्मदिट्ठी देवो तिविहसम्मदिट्ठी वि । उदयविगप्पा सव्वे वि । छव्वीसोदओ तिरिय-मणुयाणं। तिरियाणं[4] वेयग-खइगसम्मद्दिट्ठीणं बावीससंतकम्मिगं पडुच्च । एवं मणुयाण वि । उवसमसम्मद्दिट्ठी मणुएसु न उववज्जइ त्ति न गहिओ[5] । अट्ठावीस-एगूणतीसा नेरइगाईणं सव्वेसिं पि । भावना पूर्ववत् । तीसा तिरिय-मणुय-देवाणं ।

---

१ °इ कइ' त्ति का२ ॥ २ अत्राष्टविंशतिबन्धे विकल्पा अष्टौ ॥ ३ अत्राप्यष्टौ भङ्गा ॥ ४ °णं खइग-वेयगस° का१ ॥ ५ °ओ । उदय

एक्कतीसा तिरियाण। उदयविगप्पा सव्वेसिं पि सव्वे समवति।

चत्तारि संतट्ठाणाणि—९३। ९२। ८९। ८८। तत्थ तेणउती अप्पमत्तो अपुव्वो वा तित्थगराऽऽहारगसजुत्त एक्कतीस बधित्तु पच्छा असजओ जाओ देवो वा जाओ त पडुच्च। बाणवुती आहारग बधित्तु मिच्छत्त गतूण चउगइगेसु उववण्णो तत्थ तत्थ सम्मत्त पडिवण्णस्स; देव मणुगेसु मिच्छत्त अपडिवण्णस्स वि लब्भइ। एगूणणवुती देव-नेरइग मणुयाण असजयसम्मदिट्ठीण, ते तिण्णि वि तित्थगरनाम बधति त्ति काउ। तिरिएसु तित्थगरसतकम्मिओ न उववज्जइ त्ति तिरिओ न गहिओ। अट्ठासीती चउगइगाण सम्मदिट्ठीण लब्भइ।

इदाणिं 'कइ बधंतो वेएइ' त्ति—असजयसम्मदिट्ठिस्स अट्ठावीसबधगस्स अट्ठ उदयट्ठाणाणि, त—२१। २५। २६। २७। २८। २९। ३०। ३१। तिरिय मणुए पडुच्च। २५। २७ उदया वेउव्विय चेव पडुच्चं, वेयग खइगसम्मदिट्ठिणो पडुच्च। एक्केक्कम्मि उदए दो दो सताणि—९२। ८८। एगूणतीस बधमाणस्स सामण्णेण सत्त उदयट्ठाणाणि एक्कतीसवज्जाणि। कह? एगूणतीसबधो दुविहो—मणुयगइपाउग्गो देवगइपाउग्गो य। तत्थ देवगइपाउग्ग तित्थगरसहिय एगूणतीस बधमाणस्स मणुयस्स सत्त वि उदया सभवति। एक्केक्कम्मि दो दो सताणि—९३। ८९। भावना पूर्ववत्। एगूणतीस मणुयगइ-पाउग्ग बधमाणाण देव नेरइयाण पच उदया, त जहा—२१। २५। २७। २८। २९। एक्केक्कम्मि दो दो सताणि, त०—९२। ८८। नवर देवस्स—उज्जोयवेयगस्स तीसोदयाहियाणि छ, तम्मि वि दो सताणि। तीसा तित्थगरसहिय मणुयगइपाउग्ग

विगप्पा ५७६। अट्ठा क०१ ॥ १ च। एक्के° को१। २ वेउव्वियचेय को२ ॥ २ या छ। को२ ॥

तीसं बंधमाणाणं देव-नेरइयाणं ताणि चेव अणंतरुत्ताणि पंच छ च उदयट्ठाणाणि। तेसु एक्केक्कम्मि उदये दो दो संताणि, सामण्णेणं तं०—९३। ८९। देवस्स नेरइयस्स एगूणणउती चेव तित्थगरा-ऽऽहारसंतकम्मिगो नेरइगेसु न उववज्जइ त्ति। सव्वोदएसु संताणि—४। ४। ४। ४। ४। ४। ४। २। सव्वाणि तीसं।

इदाणिं देसविरयस्स बंधट्ठाणाइं भण्णंति—' दुग छक्क चउ 'त्ति दो बंधा, छ उदया, चत्तारि संताणि। तत्थ बंधट्ठाणाणि दोण्णि, तं०—२८। २९। तत्थ अट्ठावीसा मणुस्सस्स वा कम्मभूमितिरियस्स वा तप्पडिभागेतिरियस्स वा। देवगइपाओग्गं अट्ठावीसं बंधमाणस्स एत्थ अट्ठ बंधविगप्पा पूर्ववत्। एगूणतीसा तित्थगरसहियं देवगइपाओग्गं बंधमाणस्स मणुस्सस्स। तिरिक्खेसु न संभवइ तित्थगरनामं। तत्थ वि अट्ठ भंगा॥

छ उदयट्ठाणाणि, तं०—२५। २७। २८। २९। ३०। ३१। मूलिल्ला चत्तारि वि वेउव्वियस्स; एक्केक्कम्मि उदए एक्केक्को भंगो, सव्वे पसत्थ त्ति काउं। तीसा तिरिय-मणुयाणं। एकतीसा तिरियाणं। तिरिय-मणुयाणं देसविरयाणं केसिंचि वेउव्वियलद्धी संभवइ। एत्थ तीसोदए तिरिय-मणुओदयविगप्पाणं एक्केक्कस्स चोयालीसं सयं। कहं? छ संठाण-संघयणा सरदुग-विहाइदुगेण गुणिया चोयालं सयं भवइ। दूभग-अणाएज्ज-अजसकित्तीओ गुणपच्चयओ न उदेंति तम्हा ताणि जुगलाणि ण संभवंति। एकतीसे तिरियाणं एत्तिया चेव विगप्पा।

चत्तारि संतट्ठाणाणि, तं०—९३। ९२। ८९। ८८। तत्थ तेणउई तित्थगरा-ऽऽहारगदुगं अपमत्ता-ऽपुव्वेण वा बद्धं

---

१ °णा भण्णं° का१ का२॥ २ °गस्स अर्द्धतृतीयद्वीपबहिर्वर्तिन इति। देव° का२॥ ३ °मत्तेणाऽपु° का२। का१ प्रति खण्डिता॥

पुणो देसविरओ जाओ त पडुच्च । सेसाण भावणा जहा असजयसम्मद्दिट्ठिस्स ।

सामण्णेण बधुदय सताणि भणियाणि । इदाणिं सवेहो—मणुसस्स अट्ठावीसबधगस्स पच उदया एकतीसवज्जा । तत्थ एकेकम्मि दो दो सताणि—९२ । ८८ । एव तिरिक्खस्स वि, नवरि एक्कतीसोदए वि दोण्णि—९२ । ८८ । एगूणतीसबधगस्स मणुसस्स पच उदया—२५ । २७ । २८ । २९ । ३० । एत्थ एकेकम्मि दो दो सताणि—९३ । ८९ । देसविरयस्स सबोदएसु जहक्कमेण ४ । ४ । ४ । ४ । ४ । २ । सवे बावीस ।

इयाणिं पमत्तसजयस्स भवाई भण्णति—' दुग पण चउ 'त्ति पमत्तसजयस्स दोण्णि बधट्ठाणाणि, पच उदया, चत्तारि सताणि । तत्थ बधट्ठाणाणि २८ । २९ । जहा मणूसस्स देसविरयस्स तहा भाणियव ।

तत्थ पच उदया—२५ । २७ । २८ । २९ । ३० । सवाणि वि आहारगसजयस्स विउवियस्स वा सभवति । तीसा समावत्थसजयस्स वि । विउवा ऽऽहारगाण एकेको भगो, नवरि अट्ठावीस एगूणतीसोदएसु दो दो भगा । तीसोदए जहा देसविरयस्स १४४ । सवे वि १५८ ।

चत्तारि संताणि ताणि चेव जाणि देसविरयस्स ।

इदाणिं सवेहो—अट्ठावीसबधगस्स पच वि उदया । एकेकम्मि दो दो सताणि—९२ । ८८ । आहारगसजयस्स बाणउई चेव । कह ? आहारगसतकम्मिओ आहारगसरीर उप्पाएइ त्ति काउ । पमत्तो तित्थगरसतकम्मिओ अट्ठावीस न बधइ

१ या, त०—२७ । कां१ ॥

त्ति; तेण न तित्थगरसंताणि गहियाणि । एगूणतीसबंधगस्स वि पंच वि उदया । एक्केक्कम्मि दो दो संताणि—९३ । ८९ । आहारगसंजयस्स तिणउई । कहं ? भण्णइ—आहारगसंजओ एगूणतीसबंधगो नियमा आहारग-तित्थगरसंतकम्मिगो त्ति । वेउव्वियस्स वि दो वि । पमत्तसव्वोदएसु जहक्कमेण संताणि—४ । ४ । ४ । ४ । ४ । सव्वे वि वीसं ।

इदाणिं अप्पमत्तस्स बंधाई भण्णंति—' चउ दुग चउ 'त्ति अपमत्तस्स चत्तारि बंधट्ठाणाणि, दो उदया, चत्तारि संताणि। तत्थ बंधट्ठाणाणि, तं०—२८ । २९ । ३० । ३१ । अट्ठावीसा एगूणतीसा य जहा पमत्तसंजयस्स देवगइपाओग्गं अट्ठावीसं बंधमाणस्स । आहारगदुगसहिया तीसा भवइ । एको भंगो । एकतीसा तित्थगरा-ऽऽहारगदुगेहिं[1] य सहियं देवगइपाओग्गं बंधमाणस्स । चउसु वि बंधेसु विगप्पो नत्थि । कहं ? अथिर-असुभ-अजसकित्तीओ पमत्तम्मि वोच्छिण्णाओ त्ति ।

दो उदयट्ठाणाणि—एगूणतीसा तीसा य । एत्थ एगूणतीसा पमत्तसंजओ आहारगं वेउव्वियं वा उप्पाएत्तु तस्स अंते अप्पमत्तभावं गच्छइ त्ति । दो भंगा । एवं तीसाए वि; तीसा सभावत्थस्स[2] वि । सभावतीसोदए विगप्पाणं १४४ । सव्वे वि १४८ ।

चत्तारि संताणि जहा पमत्तस्स ।

इदाणिं संवेहो—अट्ठावीसबंधगस्स दोसु वि उदएसु एकं संतं अट्ठासीती । एगूणतीसबंधगस्स वि दोसु वि एकं संतं एगूणनउई । तीसबंधगस्स दोसु वि एकं संतं बाणउती । एकतीसबंधगस्स दोसु वि एकं संतं तेणउई । तित्थगरं आहारगं वा

१ °हिं सहि° का१ ॥ २ °स्स । सभा° स ॥

पुणो देसविरओ जाओ त पडुच्च । सेसाण भावणा जहा असजयसम्मद्दिट्ठिस्स ।

सामण्णेण बधुदय सताणि भणियाणि । इदाणिं सवेहो—मणुसस्स अट्ठावीसबधगस्स पच उदया एकतीसवज्जा । तत्थ एक्केकम्मि दो दो सताणि—९२ । ८८ । एव तिरिक्खस्स वि, नवरि एकतीसोदए वि दोण्णि—९२ । ८८ । एगूणतीसबधगस्स मणुसस्स पच उदया—२५ । २७ । २८ । २९ । ३० । एत्थ एकेकम्मि दो दो सताणि—९३ । ८९ । देसविरयस्स सबोदएसु जहक्कमेण ४ । ४ । ४ । ४ । ४ । २ । सवे बावीस ।

इयाणिं पमत्तसजयस्स बधाई भण्णति—' दुग पण चउ 'त्ति पमत्तसजयस्स दोण्णि बधट्ठाणाणि, पच उदया, चत्तारि सताणि । तत्थ बधट्ठाणाणि २८ । २९ । जहा मणूसस्स देसविरयस्स तहा भाणियव ।

तत्थ पच उदया—२५ । २७ । २८ । २९ । ३० । सबाणि वि आहारगसजयस्स विउव्वियस्स वा सभवति । तीसा समावत्थसजयस्स वि । विउवा ऽऽहारगाण एक्केको भगो, नवरि अट्ठावीस एगूणतीसोदएसु दो दो भगा । तीसोदए जहा देसविरयस्स १४४ । सवे वि १५८ ।

चत्तारि सताणि ताणि चेव जाणि देसविरयस्स ।

इदाणिं सवेहो—अट्ठावीसबधगस्स पच वि उदया । एक्केकम्मि दो दो सताणि—९२ । ८८ । आहारगसजयस्स बाणउई चेव । कह ? आहारगसतकम्मिओ आहारगसरीर उप्पाएइ त्ति काउ । पमत्तो तित्थगरसतकम्मिओ अट्ठावीस न बधइ

१ या, स०—२५ । का१ ॥

त्ति; तेण न तित्थगरसंताणि गहियाणि। एगूणतीसबंधगस्स वि पंच वि उदया। एक्केक्कम्मि दो दो संताणि—९३। ८९। आहारगसंजयस्स तिणउई। कहं? भण्णइ—आहारगसंजओ एगूणतीसबंधगो नियमा आहारग-तित्थगरसंतकम्मिगो त्ति। वेउव्वियस्स वि दो वि। पमत्तसव्वोदएसु जहक्कमेण संताणि—४। ४। ४। ४। ४। सव्वे वि वीसं।

इदाणिं अप्पमत्तस्स बंधाइं भण्णंति—'चउ दुग चउ' त्ति अपमत्तस्स चत्तारि बंधट्ठाणाणि, दो उदया, चत्तारि संताणि। तत्थ बंधट्ठाणाणि, तं०—२८। २९। ३०। ३१। अट्ठावीसा एगूणतीसा य जहा पमत्तसंजयस्स देवगइपाओग्गं अट्ठावीसं बंधमाणस्स। आहारगदुगसहिया तीसा भवइ। एक्को भंगो। एक्कतीसा तित्थगरा-ऽऽहारगदुगेहिं[1] य सहियं देवगइपाओग्गं बंधमाणस्स। चउसु वि बंधेसु विगप्पो नत्थि। कहं? अथिर-असुभ-अजसकित्तीओ पमत्तम्मि वोच्छिण्णाओ त्ति।

दो उदयट्ठाणाणि—एगूणतीसा तीसा य। एत्थ एगूणतीसा पमत्तसंजओ आहारगं वेउव्वियं वा उप्पाएत्तु तस्स अंते अप्पमत्तभावं गच्छइ त्ति। दो भंगा। एवं तीसाए वि; तीसा सभावत्थस्स[2] वि। सभावतीसोदए विगप्पाणं १४४। सव्वे वि १४८।

चत्तारि संताणि जहा पमत्तस्स।

इदाणिं संवेहो—अट्ठावीसबंधगस्स दोसु वि उदएसु एक्कं संतं अट्ठासीती। एगूणतीसबंधगस्स वि दोसु वि एक्कं संतं एगूणनउई। तीसबंधगस्स दोसु वि एक्कं संतं बाणउती। एक्कतीसबंधगस्स दोसु वि एक्कं संतं तेणउई। तित्थगरं आहारगं वा

१ °हिं सहि° का१ ॥ २ °स्स। सभा° स ॥

जस्स सतकम्म सो नियमा त बधइ त्ति । एक्केकम्मि बधे एक्केक संत । एक्केक्के उदए चत्तारि चत्तारि सताणि । सताणि वि अट्ठ ।

इदाणिं अपुव्वकरणस्स बधाई भण्णति—'पणगेग चउ' त्ति अपुव्वकरणस्स पच बधट्ठाणाणि, एक्को उदओ, चत्तारि [1]सता णि । तत्थ बधट्ठाणाणि—२८ । २९ । ३० । ३१ । १ । मूलिल्ला चत्तारि वि जहा अपमत्तस्स । एक्को—देवगइपाओग्गे बधे वोच्छिण्णे जसकित्ती एक्का बज्झति ।

एगो उदओ तीसा । विगप्पा वज्जरिसभसंघयण छ सठाणा सरदुग-खगइदुगेहिं चउवीसा । अण्णे भणति—मूलिल्ला तिण्णि संघयणा छ सठाणा सरदुग खगइदुगेहिं गुणिया बावत्तरी, तिसघयणो उवसमसेढिं पडिवज्जइ त्ति । एव अणियट्टि सुहुमसपराय-उवसतकसायाण । अपुव्वस्स सता ते चेव जे अप्पमत्तस्स ।

इयाणिं सवेहो—२८ । २९ । ३० । ३१ बधगाण तीसोदए सतभावणा जहा अप्पमत्तसजयस्स तहा चेव । एगविह बधगस्स एक्को उदओ तीसा, सताणि चत्तारि वि । कह ? अट्ठावीस एगूणतीस तीस-एक्कतीसबधगा वि बधवोच्छेय करेतु एक्कविह बधति अपुव्वकरणद्धाए सखेज्जइमे भागे सेसे त्ति; तेण चत्तारि वि सताणि सभवति ॥ ४८ ॥

इदाणिं अणियट्टिस्स बधादी भण्णंति—'एगेगमट्ठ' त्ति अणियट्टिस्स एक्को बधो, एक्को उदओ, अट्ठ सताणि । तत्थ बधट्ठाण जसकित्ती । उदओ तीसा । सताणि, त०—९३ । ९२ । ८९ । ८८ । ८० । ७९ । ७६ । ७५ । मूलिल्ला चत्तारि

1 एक्को का१ ॥ 2 सतट्ठाणाणि का१ ॥ 3 यणिणो कां२ ॥ 4 बज्झति त्ति । छा२ ॥

वि[1] खवगसेढीए ताव जाव तेरस नामाइं अखीणाइं उवसमसेढीए वा । उवरिमाइं चत्तारि वि जहक्कमेणं[2] तेहिंतो तेरसनामे खीणे खवगसेढीए भवंति । इयाणिं संवेहो, भेदाभावाओ न भवइ ।

सुहुमरागस्स बंधाई भण्णंति—'एगेगमट्ठ' त्ति सुहुमस्स एको बंधो, एको उदओ, अट्ठ संताणि । जहा अणियट्टिस्स तहा चेव; नवरि मूलिल्लाणि चत्तारि संताणि उवसमसेढीए चेव ।

'छउमत्थकेवलिजिणाणं एक चऊ एक चऊ अट्ठ चउ दु छक्कमुदयंस' त्ति छउमत्थग्गहणेणं उवसंतो खीणकसाओ य गहिया[3], छउमत्थजिणा एए । केवलिजिणाणं सजोगि-अजोगीणं गहणं । जहक्कमेणं गाहापच्छिमऽद्धभणियाणि उदय-संताणि ।

तत्थ उवसंतकसायस्स 'एक चउ' त्ति एकं उदयट्ठाणं तीसा; चत्तारि संताणि, तं०—९३ । ९२ । ८९ । ८८ । उवसमसेढीए खओ नत्थि त्ति काउं ।

खीणकसायस्स एको उदओ तीसा । एत्थ विगप्पा चउवीसं, वज्जरिसहं संठाणछक्कं सरदुग-खगतिदुगेहिं गुणिया २४ । तत्थ[4] तित्थगरसंतकम्मिगस्स खीणकसायस्स सव्वे पसत्थ त्ति उदयविगप्पो एको चेव । चत्तारि संताणि[5], तं०—८० । ७९ । ७६ । ७५ । तत्थ असीती छावत्तरी य तित्थगरसंतकम्मियस्स, एगूणासीती पण्णतरी य अतित्थगरसंतकम्मियस्स ।

इयाणिं सजोगिकेवलिस्स—'अट्ठ चउ' त्ति अट्ठ उदया, तं०—२० । २१ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । पुव्वविवरीयाणि एयाणि; चत्तारि संताणि—८० । ७९ । ७६ । ७५ । इयाणिं संवेहो—वीस-छव्वीस-अट्ठावीस-एगूणतीस-

---

१ वि ताव स ॥ २ °ण तिहिंतो स ॥ ३ °हिओ, छ° का१ ॥ ४ तत्थ इति पाठ स-का२प्रत्योर्नास्ति ॥ ५ सतट्ठाणाणि का१ ॥

तीसोदया अतित्थगराण । एकेकम्मि दो दो सताणि—७९ । ७५ । सवे दस । एकत्तीस-सत्तावीम एगूणतीस-तीस एकतीसोदया तित्थगराण । एकेकम्मि दो दो सताणि—असीती छावत्तरी य । सवे दस । एगूणतीसा तीसा य तित्थगरा ऽतित्थगराण सामण्ण । सवाणि सजोगिस्स वीस सताणि ।

इयाणिं अजोगिकेवलिस्स—'दो छक्कट्ठुदयस' त्ति दो उदया—८ । ९ । तत्थ अट्ठुदओ अतित्थगरअजोगिस्स, नवोदओ तित्थगरस्स । छ सताणि—८० । ७९ । ७६ । ७५ । ९ । ८ । तत्थ अट्ठुदये तिण्णि सताणि—७९ । ७५ । ८ । तत्थ आदिमा दो ७९ । ७५ जाव दुचरिमसमओ ताव लब्भति । दुचरिमसमए सरीरसहगयाण कम्माण खए कए सेसा अट्ठ सत, त चरिससमए लब्भति । नवोदए तिण्णि, त जहा—८० । ७६ । ९ । आदिमा दो ८० । ७६ जाव दुचरिमसमओ, चरिमे नव लब्भति ॥ ४९ ॥

एव ओघेण गुणट्ठाणेसु बधुदय सताणि भणियाणि । इयाणिं गइयादिएसु निद्देसेण बधुदय-संताणि नामस्स भणाति—

दो छक्कऽट्ठ चउक्क, पण नंव एक्कार छक्कग तुदया ।
नेरइयाइसु सन्ता, ति पच एक्कारस चउक्क ॥ ५० ॥

दो छक्कट्ठचउक्क० गाहा । निरयादिसु बंधति । नेरइय-तिरिय मणुय-देवेसु जहकमेण दोण्णि छ अट्ठ चत्तारिं बधट्ठा-

१ माओ ७९ । सं ॥ २ नवगेक्का खे१ । नवेक्का खे२ ॥ ३ हा । दो छकऽट्ठ चउक्क णिरया का२ ॥ ४ रि त्ति बध स ॥

णाणि त्ति । तत्थ नेरइय० दो बंधट्ठाणाणि—२९ । ३० । तत्थ एगूणतीसा मणुय-पंचिंदियतिरिक्खपाओग्गं बंधमाणस्स, सव्वे विगप्पा संभवंतीति । तीसं पंचिंदियतिरिक्खपाओग्गं उज्जोवसहियं बंधमाणस्स सव्वविगप्पा वीसं । तित्थगरसहियं मणुयगइपाओग्गं तीसं बंधमाणस्स विगप्पा अट्ठ पुव्वुत्ता ।

इयाणिं तिरिक्खस्स छ बंधट्ठाणाणि, तं०—२३ । २५ । २६ । २८ । २९ । ३० । सव्वाणि वि सविगप्पाणि जहा हेट्ठओ भणियाणि तहा भाणियव्वाणि । नवरि एगूणतीस-तीसबंधगेसु तित्थगरा-ऽऽहारबंधविगप्पा ण संभवंति, तित्थगरा-ऽऽहारगं न बंधंति त्ति ।

इदाणिं मणुयस्स अट्ठ बंधट्ठाणाणि—२३ । २५ । २६ । २८ । २९ । ३० । ३१ । १ । सव्वाणि सविगप्पाणि संभवंति । कम्हा ? चउगइपाउग्गं मणुओ बंधइ त्ति ।

इदाणिं देवस्स चत्तारि बंधट्ठाणाणि, तं०—२५ । २६ । २९ । ३० । पणुवीस-छवीसा बायर-पज्जत्तग-पत्तेयसंजुत्तं एगिंदियजाइं बंधमाणस्स । एत्थ भंगा थिरा-ऽथिर-सुभा-ऽसुभ-जसा-ऽजसेहिं कायव्वा अट्ठ, छवीसे आयावुज्जोएहिं य सोलस । एगूणतीसा मणुयगइ-पंचिंदियतिरिक्खपाओग्गं बंधमाणस्स सविगप्पा तहेव । तीसं उज्जोयसहियं पंचिंदियतिरियपाओग्गं बंधमाणस्स सविगप्पा तहेव । बितिया तित्थगरसहियं मणुयगइपाओग्गं तीसं बंधमाणस्स, एत्थ अट्ठ विगप्पा ।

एवं नेरइगादीणं बंधट्ठाणाणि भणियाणि । इदाणिं उदयट्ठाणाणि—'पण नवेक्कारछक्कगं तुदय' त्ति नेरइगादीणं जहक्कमेण उदया भण्णंति । तत्थ नेरइगस्स उदयट्ठाणाणि पंच, तं०—२१ । २५ । २७ । २८ । २९ । जहा हेट्ठा भणियं

तहा चेव।

तिरिक्खस्स नव उदयट्ठाणाणि—२१।२४।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१। एगिंदिय विगलिंदिय-पचिंदियतिरियाण जाणि उदयट्ठाणाणि ताणि सव्वाणि तिरिक्खस्स, सव्वे तिरिक्ख त्ति काउ। तेण सव्वेसि उदयट्ठाणाणि सविगप्पाणि भाणियव्वाणि।

मणुयाण उदयट्ठाणाणि एक्कारस, त०—२०।२१।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१।९।८। समा-वमणुयाण वेउव्वियाण आहारगसजयाण तित्थगर अतित्थकेवलीण सजोगि अजोगीण उदयट्ठाणाणि सव्वाणि मणुओदया वुच्चति तम्हा हेट्ठओ भणियविहिणा भाणियव्वाणि।

देवस्स छ उदयट्ठाणाणि—२१।२५।२७।२८।२९।३०। हेट्ठओ सविगप्पाणि भणियाणि।

'सता वि पच एक्कारस चउक्क' त्ति नेरइगादीण जहक्कमेण सताणि। तत्थ नेरइयस्स तिण्णि सताणि—९२।८९।८८। कह ? तेणउइसतकम्मिगो नेरइएसु न उववज्जति त्ति, दवगइ निरयगइपाउग्गचिराहियाणि वि सताणि न सभवति त्ति।

तिरिक्खस्स पच सताणि, त०—९२।८८।८६।८०।७८। कह ? तित्थगरसताणि तेरसनामखीणाणि य सताणि न सभवति त्ति।

मणुस्साण एक्कारस सताणि, त०—९३।९२।८९।८८।८६।८०।७९।७६।७५।९।८। मणुयगइ

१-२ णि त अहा—२१। चं२ ॥

संतविरहियं संतं मोत्तूण सेसाणि संताणि णाणाजीवे पडुच्च संभवंति ।

देवस्स चत्तारि संताणि—९३ । ९२ । ८९ । ८८ । उवरिल्लाणि न संभवंति, देवगइआइविरहितत्वात् ।

इदाणिं 'कइ बंधंतो वेदेति कति ?' (गा० २) त्ति एयस्स अवसरो—नेरइयस्स तिरियगइपाउग्गं एगूणतीसं बंधमाणस्स पंचं[1] वि उदयट्ठाणाणि, एक्केक्के दो दो संताणि—९२ । ८८ । तित्थगरसंतकम्मिओ तिरियगइं न बंधइ त्ति एगूणणवुती नत्थि । मणुयगइपाउग्गं एगूणतीसं बंधमाणस्स 卐 पंच वि उदयट्ठाणाणि, एक्केकम्मि 卐 तिण्णि संताणि, तं०—९२ । ८९ । ८८ । तित्थगरसंतकम्मिओ मिच्छद्दिट्ठी एगूणतीसं बंधइ जाव ताव सम्मत्तं न पडिवज्जइ । पडिवण्णो तीसबंधगो भवइ । तिरियगइपाओग्गं उज्जोवसहियं तीसं बंधमाणस्स पंच वि उदया, एक्केक्के दो दो संताणि—९२ । ८८ । मणुयगइपाओग्गं तित्थगरसहियं तीसं बंधमाणस्स पंचं[3] वि उदया, एक्केकम्मि एक्केकं[4] संतं एगूणनवुती । एवं सव्वुदएसु सव्वबंधेसु य सव्वग्गेणं तीसं संताणि ।

इदाणिं तिरिक्खस्स—तेवीसबंधगस्स एकवीसातीणि नव उदयट्ठाणाणि । आदिल्लेसु चउसु पंच पंच संताणि, उवरिल्लेसु पंचसु चत्तारि चत्तारि संताणि अट्ठत्तरिवज्जाणि, कारणं पूर्ववत् । एवं पणुवीस-छव्वीस-एगूणतीस-तीसबंधगाणं पि । नवरि एगूणतीसं मणुयगइपाउग्गं बंधमाणस्स अट्ठत्तरिवज्जाणि चत्तारि संताणि सव्वुदएसु भाणियव्वाणि । अट्ठावीसबंधगस्स अट्ठ उदयट्ठाणाणि, तं०—२१ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । तत्थ २१ । २६ । २८ । २९ । ३०

---

१ °च उद° सं का१ ॥ २ स्वस्तिकद्विकमध्यग पाठ संप्रतौ नास्ति ॥ ३ °च उद° सं ॥ ४ एक्कं का१ कार ॥

खइग वेयगसम्मदिट्ठीण पुव्वबद्धाउगाण, वेयगसम्मदिट्ठी जो[1] बावीससतकम्मिओ, अण्णो ण लब्भइ। एक्केकम्मि दो दो सताणि, त०—९२। ८८। पणुवीस-सत्तावीसोदया वेउवियस्स सभवति। सव्वत्थ दो दो सताणि। तीसेकतीसोदया सम्मदिट्ठि मिच्छदिट्ठीण, एक्ककम्मि तिण्णि तिण्णि सताणि—९२। ८८। ८६। छासीई सम्मदिट्ठीण ण सभवति, दवदुगादि विरहिवत्वात्। एव सव्वबधगेसु सव्वुदए सवग्गेण दो सताणि अट्ठारसुत्तराणि सतभेयाण २१८।

इदाणिं मणुसस्स—तेवीसबधगस्स सत्त उदयट्ठाणाणि, त०—२१। २५। २६। २७। २८। २९। ३०। पणुवीस सत्तावीसा वेउविय पडुच्च, सेसा सजओदय त्ति काउ न सभवति। एक्केके चत्तारि चत्तारि सताणि त०—९२। ८८। ८६। ८०। नवरि पणुवीस सत्तावीसोदएसु दो दो सताणि—९२। ८८। सेसाणि तित्थगरसताणि[2], मणुयगइरहिय च न सभवइ। सव्वाणि वि चउव्वीस। एव पणुवीस-छव्वीसबधगाण पि। मणुयगइ तिरियगइपाउग्ग एगूणतीस उज्जोवसहिय तीसबधगाण[3] पि एव चेव जहा तेवीसबधगस्स। अट्ठावीसबधगस्स सत्त उदयट्ठाणाणि, त०—२१। २५। २६। २७। २८। २९। ३०। तत्थ एकवीस छवीसा असजयसम्मदिट्ठि पडुच्च। पणुवीस सत्तावीसा आहारगसजयस्स वेउवियस्स वा। अट्ठावीस-एगूणतीसा असजयसम्मदिट्ठि वेउविया-ऽऽहारगाण सामण्णा। तीसा सम्मदिट्ठीण मिच्छदिट्ठीण च। एक्केकम्मि दो दो सताणि बाणउई अट्ठासीती य। आहारगसजयस्स बाणउई चेव। तीसोदये चत्तारि सताणि—९२। ८९। ८८। ८६। तत्थ एगूणनवुती निरयगइपाउग्गं अट्ठावीसं बधमाणस्स मिच्छदिट्ठिस्स। सेसाण भावणा जहा ओघे। अट्ठावीसबधगस्स सता १६।

१ जो मोहणीयघाती कर ॥ २ णि भेया कां१ ॥ ३ °तीस तीसबध स ॥

एगूणतीसा—देवगइपाउग्गं तित्थगरसहियं एगूणतीसं बंधमाणस्स जे अट्ठावीसबंधगस्स भणिया ते चेव सत्त उदया, उदयभावणा तहेव । नवरि तीसोदओ वि सम्मद्दिट्ठिस्स चेव, जेण एगूणतीसबंधो तित्थगरनामसहिओ त्ति । संताणि उदयेसु जहक्कमेण—२ । २ । २ । २ । २ । २ । २ । तेणउती एगूणणउती य संताणि । आहारगसंजयस्स तेणवुती चेव । आहारगसहियं तीसं बंधमाणस्स दोण्णि उदया—२९ । ३० । एगूणतीसा आहारगसंजओ अंतिमकाले अप्पमत्तो भवति तं पडुच्च । ऐकेकं संतं बाणवुती । एकतीसबंधगस्स एको उदओ तीसा, एकं संतं तेणउइ । एगविहबंधगस्स एको उदओ तीसा, अट्ठ संताणि, तं०—९३ । ९२ । ८९ । ८८ । ८० । ७९ । ७६ । ७५ । अबंधगस्स उदया दस, तं०—२० । २१ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । ९ । ८ । वीस-छवीस-अट्ठावीसोदएसु दो दो संताणि—७९ । ७५ । एकवीस-सत्तावीस-एकतीसोदएसु दो दो संताणि—८० । ७६ । एगूणतीस-तीसोदएसु चत्तारि चत्तारि संताणि—८० । ७९ । ७६ । ७५ । नवोदए तिण्णि—८० । ७६ । ९ । अट्ठोदए तिण्णि—७९ । ७५ । ८ । एवं सव्वबंधोदए पडुच्च संताणिं १८७ ।

मणुसस्स भणियं । इदाणिं देवस्स—पणुवीसबंधगस्स छावि उदयट्ठाणाणि । एकेके दो दो संताणि—९२ । ८८ । एवं छवीस-एगूणतीसबंधगाणं पि एवं चेव । उज्जोवसहियं तीसं बंधगाणं पि एवं चेव । तित्थगररहियं तीसं बंधमाणस्स छावि उदयट्ठाणाणि । एकेके दो दो संताणि—९३ । ८९ । सव्वग्गेण सट्ठि संताणि ६० ॥ ५० ॥

गइं पडुच्च भणियं । इदाणिं इंदियं पडुच्च भण्णइ—

---

२ एकं स ॥ १ अस्मिन् स्थाने श्रीमलयगिरिपादास्तु १५९ सत्तास्थानानि ज्ञापयन्ति । दृश्यतां कर्मग्रन्थद्वितीयविभागपृ० २३८ तमम् ॥

इगि त्रिगलिंदिय सगले, पण पच य अट्ठ बधठाणाणि ।
पण छक्केक्कारुद्या, पण पण वारस य सन्ताणि ॥ ५१ ॥

इगि विगलिंदिय०गाहा । 'इगि विगलिंदिय सगले पण पच य अट्ठ बधठाणाणि । ' 'इगि' त्ति एगिंदिओ । एगिंदिय विगलिंदिय-पर्चिदियाणं जहकमेण बधट्ठाणाणि पच पच अट्ठ त्ति । एत्थ एगिंदियस्स पच बधट्ठाणाणि, त०—२३ । २५ । २६ । २९ । ३० । देवगइपाउग्गे एगूणतीस तीसविगप्पे मोत्तूण सेसाणि सवाणि सविगप्पाणि भवति । त्रिगलिंदियाणं विण्ह पि ते चेव पच ठाणा सविगप्पा । पर्चिदियाणं सवाणि बधट्ठाणाणि सविगप्पाणि भाणियवाणि ।

इदाणिं उदयट्ठाणाणि—'पण छक्केक्कारुदए' त्ति जहकमेण एगिंदियादीण उदयट्ठाणाणि पच छ एक्कारस । तत्थ एगिंदियाण पच उदयट्ठाणाणि, त जहा—२१ । २४ । २५ । २६ । २७ । सविगप्पा जहा हेट्ठओ भणिया तहा चेव । त्रिगलिंदियाण छ उदयट्ठाणाणि, त०—२१ । २६ । २८ । २९ । ३० । ३१ । जहा हेट्ठओ सविगप्पाणि भणियाणि तहा चेव । पर्चिदियाण एक्कारस उदयट्ठाणाणि, त०—२० । २१ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । ९ । ८ । एगिंदिय विगलिंदियाण उदयविगप्पे मोत्तूण सेसा सवे पर्चिदियाण उदयविगप्पा भवति ।

इयाणिं सतट्ठाणाणि—'पण पण बारस य सताणि' त्ति एगिंदिय विगलिंदियाण पच पच सताणि—९२ । ८८ ।

---

२ इय वि क्षे२ ॥

पंचिंदियाणं सव्वाणि वि संताणि ।
८६ । ८० । ७८ । कारणं पुव्वुत्तं । 'कइ बंधंतो वेएइ कति ? कति वा पगइट्ठाणकम्मंस ?' (गा० २)त्ति
सामण्णेणं बंधुदय-संताणि भणियाणि । इयाणिं —२१ । २४ । २५ । २६ । २७ । आइल्लेसु
एयस्स अवसरो—एगिंदियस्स तेवीसं बंधमाणस्स पंच वि उदयट्ठाणाणि
चउसु पंच पंच संताणि, सत्तावीसे अट्ठत्तरिवज्जाणि चत्तारि संताणि । एवं पणुवीस-छव्वीस एगूणतीस-तीसबंधगाणं पि ।
सवग्गं १२० । विगलिंदियाणं तेवीसादिबंधमाणाणं छावि उदयट्ठाणाणि । मूलिल्लेसु दोसु पंच पंच संताणि, उवरिल्लेसु
चउसु अट्ठत्तरिवज्जाणि चत्तारि चत्तारि संताणि । कारणं पुव्वुत्तं । सवग्गं १३० । पंचिंदियाणं तेवीसं बंधमाणाणं छ उदय-
ट्ठाणाणि, तं०—२१ । २६ । २८ । २९ । ३० । ३१ ! पंचिंदियतिरियाणं मणुयाणं उदयविगप्पा भाणियव्वा । मूलिल्लेसु
दोसु पंच पंच संताणि—९२ । ८८ । ८६ । ८० । ७८, उवरिल्लेसु चउसु अट्ठत्तरिवज्जाणि चत्तारि चत्तारि संताणि । पणु-
वीसबंधगस्स अट्ठ उदयट्ठाणाणि—२१ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । एएसु उदएसु जहक्कमेण संताणि—
५ । २ । ५ । २ । ४ । ४ । ४ । ४ । पणुवीस-सत्तावीसा वेउव्विए देवे य पडुच्च । सेसाणि पसिद्धाणि । एवं छव्वीसबंध-
गस्स वि । अट्ठावीसबंधगस्स अट्ठ उदयट्ठाणाणि, तं०—२१ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । एएसु उदएसु
जहक्कमेणं संताणि २ । २ । २ । २ । २ । २ । ४ । ३ । अत्थो हेट्ठओ पुव्वुत्तो । एगूणतीसबंधगस्स ताणि चेवऽट्ठ उदय-
ट्ठाणाणि । एएसु उदएसु संताणि, तं०—७ । ४ । ७ । ४ । ६ । ६ । ६ । ४ । अत्थो हेट्ठओ पुव्वुत्तो । तीसबंधगस्स

१ °णि, तं जहा—२१ । का२ ॥

ताणि चेव अट्ठ उदयट्ठाणाणि । तेसु जहक्कमेण सताणि—७ । ४ । ५ । ४ । ६ । ६ । ६ । ४ । अत्थो पुव्वुत्तो । एग-तीस एगविहबंधगाण च जहा मणुयस्स संवेहो भणिओ तहा भाणियव्व । सव्वग्ग २०० । एव इंदिय पडुच्च संवेहो भणिओ ॥५१॥

इय कम्मपगडिठाणाणि सुट्टु बंधुदय सन्तकम्माण ।

गइयाइएहिं अट्ठसु, चउप्पगारेण नेयाणि ॥ ५२ ॥

इय कम्मपगडि०त्ति गाहा । 'इय' त्ति भणियविहिणा कम्माण पगइट्ठाणाणि कम्मपगइट्ठाणाणि । 'सुट्टु' त्ति अब्व वमुवओग करेत्तु । ताणि काणि कम्मपगइट्ठाणाणि ? भण्णति—बंधुदय-संतकम्माण ठाणाणि । 'गइआइएहिं' ति—

गइ इंदिए य काए, जोए वेये कसाय णाणे य । संजम दंसण लेसा, भव सम्मे सण्णि आहारे ॥ त्ति

एएहिं चोद्दसहिं अट्ठसु अणुओगदारेसु नेयव्वाणि । काणि ताणि जेसु नेयव्वाणि ? भण्णति—

संतपयपरूवणया, दव्वपमाण च खेत्त फुसणा य । कालंतर च भावो, अप्पाबहुग च दाराइ ॥

तत्थ संतपयपरूवणया—एव बंधुदय संताण संवेहो गुणट्ठाणेसु ओघेण भणिओ, आदेसेण वि गइ इंदिए य पडुच्च मग्ग णट्ठाणेसु भणिओ, तेणऽणुमाणेण कायादिगेसु वि मग्गणट्ठाणेसु भाणियव्व । तओ दव्वपमाणादीणि सत्त वि अणुओगदाराणि भाणियव्वाणि । 'चउप्पगारेण नेयाणि' त्ति पगइ ठिति अणुभाग प्पएसपगारेण नेयव्वाणि । पगतीए बंधुदय संते भणित्तु

१ च अबंधगाण च जहा का२ ॥ २ गा २२६ । एव का२ ॥ ३ पसु अ खे२ ॥ ४-५ गाथेमा सर्वेष्वपि मूलसूत्रादर्शेषूपलभ्यते ॥

तओ ठिति-अणुभाग-प्पएसाणं बंधुदय-संताणं ठाणाणि तेणेव विहिणा भाणियव्वाणि ॥ ५२ ॥

इदाणिं उदओदीरणाणं विसेसनिरूवणत्थं भण्णइ । कम्हा ? उदयसभावा उदीरण त्ति काउं ।

उदयस्सुदीरणाए, सामित्ताए[1] ण विज्जइ विसेसो । मोत्तूण य[2] ईयालं, सेसाणं सव्वपयडीणं॥५३॥

उदयस्सुदीरणाए० गाहा । उदओ नाम कालपत्तस्स दव्वस्स अणुभवणं । उदीरणा अकालपत्ताणं दव्वाणं उदए पाडणं । उदीरणा कहं ? भण्णइ—उदयावलियबाहिरिल्लठितीहितो कसायसहिया-ऽसहिएणं जोगकरणेणं दलियं आकड्डिय उदयपत्त-दलिएण समं अणुभवणं ति भणियं भवइ । तेसिं उदय-उदीरणाणं सामित्तं पडुच्च नत्थि विसेसो । किं भणियं भवइ ? जो णाणावरणाईणं कम्माणं वेयगो सो चेव तेसिं उदीरगो त्ति भणियं भवइ । कम्हा ? जत्थ उदओ तत्थ उदीरणा, जत्थ उदीरणा तत्थ उदओ । एत्थ अतिपसत्तं लक्खणं ति, पुणो नियमणं करेति—'मोत्तूण य ईयालं' एकचत्तालीसं पगईओ मोत्तूण सेसाणं सव्वपगईणं नत्थि विसेसो, एकचत्तालीसाए कम्मपगडीणं उदीरणाए विणा वि उदओ लब्भइ ॥ ५३ ॥

काणि ताणि कम्माणि ? कह वा लब्भति ? भण्णति—

नाणंतरायदसगं, दंसणनव वेयणिज्ज मिच्छत्तं ।
सम्मत्त-लोभ-वेया-ऽऽउगाणि नव नाम उच्चं[3] च ॥ ५४ ॥

१ °त्ताओ न वि° खे२ खे३ ॥ २ य एयालं खे२ । य इगुयाल खे३ ॥ ३ °च्चं वा ॥ खे३ ॥

माणतराय दसग० गाहा। पचण्ह णाणावरणाण, पचण्हमतरायाण, उवरिल्लाण चउण्ह दमणावरणीयाण, एएसिं चोद्-
सण्ह कम्माण सबजीवाण उदओदीरणा य ताव जाव खीणकसायद्धाए आवलिया सेस त्ति। तओ आवलियामेत्त काल
उदए वट्टमाणाण उदीरणा णत्थि। कह? आवलियागय न उदीरिज्जइ त्ति, उदयावलियाओ उवरिल्लाओ ठितीओ उदीरि
जति त्ति काउ। निद्दापणगाण सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयाण बितियसमयाओ आढवेत्तु उदओ भवइ उदीरणाए विणा वि,
जाव इदियपज्जत्तीए पज्जत्तउ त्ति। तओ बितियसमयपभिति उदओ य उदीरणा य भवति त्ति। एस आगमो—तेसिं जम्मि
समए उदओ फिट्टइ त्ति तम्मि समए उदीरणा य जुगव फिट्टति। दोण्ह वेदणियाण सबे पमत्ता जीवा वेडगा उदीरगा य।
अप्पमत्तसजएसु उदीरणा नत्थि त्ति उदओ चेव त्ति। एस आगमो—मिच्छत्तस्स पढमसम्मत्त उप्पाएतेण अतरकरण कय,
तत्थ पढमट्ठितीए आवलियासेसाए उदीरणा णत्थि, उदओ चेव। वेदगसम्मत्तस्स खइगसम्मत्त उप्पाएतेण मिच्छत्त सम्मामिच्छ
त्ताइ खवियाइ, तओ सम्मत्त सबोवट्टणाए उवट्टिय अंतोमुहुत्तट्ठितीय जाय, तओ खीयमाण खीयमाण आवलियामेत्तसेस
जाय, तओ पभिइ उदओ चेव, उदीरणा णत्थि। अहवा उवसमसेढिं पडिवज्जतस्स अतरकरणे कए पढमट्ठितीए आवलिय-
सेसाए उदओ चेव, उदीरणा णत्थि। लोभसजलणाए सबसत्ताण उदओ य उदीरणा य ताव जाव सुहुमसपराइगद्धाए
आवलियावसेस त्ति। तओ आवलियामेत्त काल उदओ चेव, उदीरणा णत्थि। तिण्ह वेयाण तेण तेण वेदेण सेढिं पडिव-
ण्णस्स अतरकरणे कए पढमट्ठितीए जाव आवलियासेस त्ति ताव उदओ य उदीरणा य जुगव। तवो आवलियामेत्त काल
उदओ चेव, उदीरणा नत्थि। चउण्ह आउगाणऽप्पऽप्पणो अंते आवलियमेत्त काल उदओ चेव, उदीरणा नत्थि। अण्ण

च—मणुस्साउगस्स सव्वे अप्पमत्ता जीवा अणुदीरगा वेयगा चेव । '[1]नव नाम उच्चं चे'ति मणुस्सगति-पंचिंदियजाइ-तस-बादर-पज्जत्त-सुभग-आदेज्ज-जसकित्ति-तित्थगरनामाणं एएसिं नवण्हं कम्माणं उच्चागोयस्स य सव्वे सजोगिजीवा उदीरगा वेयगा य, अजोगिजीवा अणुदीरगा वेयगा चेव । सेसाणं कम्माणं उदय उदीरणा य जुगवं आढवेंति जुगवं फिट्टंति ॥५४॥

उदओदीरणाणं विसेसो भणिओ । इदाणिं गुणट्ठाणमहिकिच्च को काओ पगईओ बंधइ ? को काओ[3] न बंधति ? त्ति, बंधविसेसनिरूवणत्थं भण्णइ—

तित्थगरा-ऽऽहारगविरहियाउ अज्जेइ सव्वपयडीओ ।
मिच्छत्तवेयगो सासणो वि उगुवीससेसाओ ॥ ५५ ॥

तित्थगराहार० गाहा । 'तित्थगरा-ऽऽहारविरहियाउ अज्जेति सव्वपगतीओ मिच्छत्तवेयगो' त्ति बंधं पडुच्च वीसुत्तरं पगतिसतं गहियं, तं०—णाणावरणा पंच दंसणावरणा णव साता-ऽसातं मिच्छत्तं सोलस कसाया नव नोकसाया चत्तारि आउगाणि चत्तारि गतीओ पंच जातीओ पंच सरीराणि, पंच पंच बंधण-संघाया सरीरग्गहणेणं गहिया, छ संठाणा छ संघयणा तिण्णि अंगोवंगा वण्ण-गंध-रस-फासा सामण्णेण गहिया चत्तारि आणुपुव्वीओ अगरुलहु उवघाय पराघाय उस्सास आयाव उज्जोव विहायगइदुगं तस-थावरादिवीसं निमेणं तित्थगरनामं उच्चा-नीयागोयं पंच अंतरायमिति । एयं वीसुत्तरं पगइसयं ।

---

१ एतदर्थसाधिकेमा गाथा त्रिष्वपि मूलसूत्रादर्शेषु लभ्यते—मणुयगइ जाइ तस बायरं च पज्जत्त सुभग आएज्जं । जसकित्ती तित्थयरं, णामस्स हवंति णव एया ॥ २ °दओदी° का२ ॥ ३ °ओ पगतीओ न का२ ॥ ४ °गवज्जियाउ खे१ ॥ ५ °राइय° का१ का२ ॥

एयाओ वीसुत्तराओ पगडिसयाओ तित्थगर आहारगसरीर आहारगगोवग च मोत्तूण सेसाओ सत्तरसुत्तर पगतिसय अज्झेइ-बधइ मिच्छद्दिट्ठी, तित्थगरा-ऽऽहारगाति सम्मत्त सजमपच्चयाति त्ति न बधति । 'सासणो वि उगुवीससेसाउ' त्ति सासण सम्मद्दिट्ठी एगूणवीससेस-एकुत्तर पगडिसय बधति । कह ? भण्णइ—पुव्वुत्ताणि तिण्णि, मिच्छत्तपच्चयाणि सोलस, त०—मिच्छत्त नपुसगवेओ निरयाउग निरयगइ एगिंदिय बे०-ते० चउरिंदियजाइ हुडसठाण असपत्तसेवट्ठ सघयण निरयाणुपुव्वि आताव थावरं सुहुम अपज्जत्त साहारणमिति । एयाणि सोलस मिच्छत्तोदयनिमित्ताणि सासणम्मि मिच्छत्तोदयाभावाओ बध न एति । एया एगूणवीस मोत्तूण सेसा सव्वाओ[1] बधति ॥ ५५ ॥

छायालसेस मीसो, अविरयसम्मो तियालपरिसेसे ।
तेपन्न देसविरओ, विरओ सगवन्न सेसाओ ॥ ५६ ॥

छायाल० गाहा । ' छायालसेस मीसो' त्ति मीसो—सम्मामिच्छद्दिट्ठी छायालीस पगडीओ मोत्तूण सेसाओ चोवत्तरि पगडीओ बधइ । तत्थ छायालीसा पुव्वुत्ताणि एगूणवीस, सासणम्मि पणुवीस वोच्छिज्जति, त०—थीणगिद्धितिग अणता-णुबधि४ इत्थिवेदो तिरियाउग तिरियगइ आधन्तवज्जाणि चत्तारि चत्तारि सठाण सघयणाणि तिरियाणुपुव्वी उज्जोव अप-सत्थविहायगइ दूहग दुस्सर अणाएज्ज नीयागोयमिति । एयाणि सकिलिट्ठतरो बधइ त्ति, सासणाओ सम्मामिच्छो विसुद्ध-

१ बेइदिय तेइदिय चउ का१ का२ ॥ २ ओ य व कां१ ॥ ३ सेसा । खे३ ॥

तरो त्ति, अणंताणुबंधिउदयरहियत्ताओ । अन्यच्च—आउगं च न बंधइ त्ति, मणुस्स-देवाउगाणि वि बंधाओ फेडियाणि ।
एयाओ छायालीसं पगडीओ मोत्तूण सेसाणि बंधति । 'अविरयसम्मो तियालपरिसेसं' त्ति अविरयसम्मद्दिट्ठी तेयालीसं
पगडीओ न बंधति, तं०—अणंतरुत्ताओ छायालीसाओ मणुयाउगं देवाउगं तित्थगरनामं च अविरयसम्मो बंधइ त्ति फेडिए
'सेसाणि तेयालीसं, ताओ मोत्तूण सेसाओ सत्तसत्तरिं पगडीओ बंधइ त्ति । 'तेवण्ण देसविरओ' त्ति तेवण्णं पगडीओ
देसविरओ न बंधति । काओ ? भण्णइ—जा असंजयसम्मद्दिट्ठी ण बंधति ताओ तेयालीसं, असंजयसम्मद्दिट्ठीम्मि दस
वोच्छिज्जंति, तं०—अपच्चक्खाणावरणीया४ मणुयाउगं मणुस्सगई ओरालियसरीरं वज्जरिसभनारायसंघयणं ओरालियंगो-
वंगं मणुयाणुपुवी, एयाओ तेयालीससहियाओ तेवण्णं भवंति । एयाओ मोत्तूण सेसा सत्तट्ठी ता बंधति । 'विरओ सगप-
ण्णसेसाओ' त्ति विरओ–पमत्तसंजओ सत्तावण्णं पगडी न बंधति । का ता ? पुव्वुत्ता तेवण्णं देसविरयम्मि पच्चक्खाणावरण-
चउक्कं वोच्छिज्जति । एयहिं सत्तावण्णं भवंति । एए मोत्तूण सेसाओ तेवट्ठिं ताओ बंधति ॥ ५६ ॥

उगुसट्ठिमप्पमत्तो, बंधइ देवाउँयस्स इयरो वि । अट्ठावन्नमपुव्वो, छप्पन्नं वा वि छव्वीसं ॥ ५७ ॥

उगुसट्ठिमप्पमत्तो बंधति० त्ति । इयाणिं बंधियव्वाओ थोवाओ त्ति ताओ भण्णंति—एगूणसट्ठी पगडीओ अपमत्तसंजओ
बंधति । का ता ? जाओ तेवट्ठिं पमत्तसंजओ बंधइ तम्मि छ पगडीओ वोच्छिज्जंति, तं०—असायं अरति सोग अथिरं असुभं
अजसकित्ती, एयाओ मोत्तूण सेसाओ सत्तावण्णं, तम्मि आहारगसरीरं आहारगअंगोवंगं च बंधति, छूढे एगूणसट्ठी भवति ।

१ °सेस त्ति अ° का१ ॥ २ सेसा ते° का२ ॥ ३ इगुस° रो२ ॥ ४ °उगं च इ° खे१ ॥

'देवाउगस्स इयरो वि' त्ति देवाउगं अप्पमत्तसंजओ वि बंधति। एएण वयणेण किं भणियं भवति? आउगं पमत्तसंजओ चेव बंधति, तेण आढत्तं कयाइ अप्पमत्तभावम्मि वि होज्ज त्ति, अप्पमत्तो आउगं न आढवेति बंधिउं ति तस्सूयणत्थं 'देवाउगं इयरो वि' त्ति कयं। 'अट्ठावण्णमपुव्वो छप्पण्णं वा वि छव्वीसं' ति। एगूणसट्ठीओ देवाउगं न बंधति त्ति फेडिए अट्ठावण्णं अपुव्वकरणो बंधति ताव जाव अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जइमो भागो त्ति। तत्थ निद्दा पयलाणं बंधे वोच्छिण्णो छप्पण्णं सो चेव बंधति ताव जाव अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जइमो भागो सेसो त्ति। तत्थ देवगइ पंचिंदियजाइ वेउव्विगाऽऽहारग तेया-कम्मइगसरीर समचउरंससंठाण वेउव्वाऽऽहारगगोवंग वण्ण गंध रस फास देवगइ-आणुपुव्वी अगरुलहु उवघाय पराघाय ऊसास पसत्थविहायगइ तस बादर पज्जत्त पत्तेग थिर सुभग सुस्सर आदेज्ज निमेण तित्थगरमिति। एयासिं तीसाए पगडीणं जुगवं बंधे वोच्छिण्णे छव्वीसं बंधति सो चेव ताव जाव अपुव्वकरणद्धाए चरिमसमओ त्ति। एया अपुव्वकरणम्मि तिण्णि अवत्था भणिया ॥ ५७ ॥

बावीसा एगूणं, बंधइ अट्ठारसंत्ति अनियट्टी।
सतरस सुहुमसरागो, सायममोहो सजोगि त्ति ॥ ५८ ॥

बावीसा एगूण बंधइ अट्ठारस त्ति अणियट्टि० त्ति। बावीसमाइं काऊण एगूण बंधइ ताव जाव अट्ठारस त्ति अणियट्टी,

१ वीसं द खे१ ॥ २ रस त्ति भ° दे१ खे१ ॥

तं०—२२ । २१ । २० । १९ । १८ । अपुव्वकरणस्स चरिमसमए हास-भय-रति-दुगुंच्छाणं बंधे वोच्छिण्णे सेसा बावीसं, ता अणियट्टी बंधति, अट्ठाणवुती न बंधति ताव जाव अणियट्टिअद्धाए संखेज्जा भागा भवंति, एगो भागो सेसो त्ति । तत्थ पुरिसवेयस्स बंधे वोच्छिण्णे एकवीसं बंधइ, नवनउइं न बंधइ ताव जाव सेसद्धाए संखेज्जइमो भागो ठिओ त्ति । तत्थ कोह-संजलणाए बंधे वोच्छिण्णे वीसं बंधइ, सतं न बंधइ ताव जाव सेसद्धाए संखेज्जइमो भागो ठिओ त्ति । तत्थ माणसंजलणाए बंधे वोच्छिण्णे एगूणवीसं बंधइ, एगुत्तरं सयं न बंधइ ताव जाव सेसद्धाए संखेज्जइमो भागो ठिओ त्ति । तत्थ मायासंज-लणाए बंधे वोच्छिण्णे अट्ठारस बंधइ, बिउत्तरं सयं न बंधइ ताव जाव अणियट्टिअद्धाए चरिमसमओ त्ति । एया पंच अवत्था अणियट्टिम्मि भणिया । 'सत्तरस सुहुमरागो' त्ति सुहुमसंपराओ सत्तरसं कम्मपगडीओ बंधति । अणियट्टिचरि-मसमए लोभसंजलणाए बंधे वोच्छिण्णे सेसा सत्तरस—पंच णाणावरण चत्तारि दंसणावरण सायावेयणिय जसकित्ति उच्चा-गोयं पंच अंतराइयमिति । एया सत्तरस बंधति, तिउत्तरसयं न बंधति ताव जाव सुहुमसंपराइगस्स चरिमसमओ त्ति । 'सायममोहो सजोगि' त्ति सायावेयणीयं कम्मं अमोहो वि बंधति । केदूरं ? भण्णइ—जाव सजोगि त्ति । सुहुमरागस्स चरिमसमए पंच नाणावरण चत्तारि दंसणावरण जसकित्ति उच्चागोय पंचण्हं अंतराइयाणं बंधे वोच्छिण्णे सातस्स बंधो ताव अत्थि जाव उवसंत-खीणकसाय-सजोगिकेवलिचरिमसमओ त्ति । कम्हा ? जोगपच्चइगं ति काउं । सेसाणं कम्माणं बंधो नत्थि । अजोगिकेवलिम्मि बंधपच्चयाभावाओ सव्वेसिं पि बंधो नत्थि ॥ ५८ ॥

१ °गा गय त्ति, एगो का२ ॥

एसो उ बधसामित्तोहो गइयाइएसु वि तहेव । ओहाओ साहेज्जा, जत्थ जहा पगडिसब्भावो ॥५९॥

एसो उ बधसामित्तोघो॰गाहा । जो मिच्छद्दिट्ठियाइ सजोगिपज्जवसाणो बधमेदो भणिओ एसो बधसामित्तोघो वुच्चइ । 'गइयाइएसु वि तहेव' त्ति आएसेण गइयाइगेसु चोद्दससु मग्गणट्ठाणेसु 'तहेव' त्ति जहा ओघे भणिय तहा 'ओघाओ साहेज्जा' ओघभणियाओ बधविहीओ भणियविहीणा साहेत्तु भणेज्ज । 'जत्थ जहा पगइसब्भावो' त्ति गइ-इदियाइसु जेणं पुण कारणेण जहा पगतिसब्भावो जुज्जइ त्ति भवपच्चइग-गुणपच्चइगेण जोगा ऽजोग जाणित्तु भाणियव्व ति भणिय भवइ ॥५९॥

इदाणिं संत पडुच्च सव्वकम्माणि सव्वगईसु अत्थि नत्थि त्ति तन्निरूवणत्थ भण्णइ—

तित्थयर देव-निरयाउय च तिसु तिसु गईसु बोधव्व ।

अवसेसा पगडीओ, हवति सव्वासु वि गईसु ॥ ६० ॥

तित्थगर देव निरयाउ॰ गाहा । 'तित्थगर देवनिरयाउग च तिसु तिसु गईसु बोद्धव' त्ति । तित्थगरनाम देवाउग निरयाउगमिति एते तिण्णि वि तिसु तिसु गतीसु अत्थि; निरयगति देवगति मणुयगति एयासु तित्थगरनाम अत्थि, तिरिक्खेसु तित्थगरसतकम्मिगो[1] न उववज्जइ त्ति काउ तिरियगतीए तित्थगरसतकम्म नत्थि । तिरिक्ख मणुय देवगतीसु देवाउगं अत्थि, नेरइगा देवाउय न बधति न उववज्जति त्ति काउ, तेण निरयगईए देवाउग नत्थि । तिरिय मणु-नेरइएसु एएसु

१ °ण जेण पगारेण जहा का२ ॥ २ °गो नोवव का१ ॥

तिसु निरयाउगं अत्थि, देवा निरयाउगं न बंधंति न उववज्जंति त्ति काउं, तेण देवेसु निरयाउगं नत्थि। 'अवसेसा पगईओ भवंति सव्वासु वि गतीसु' सेसाओ सव्वपगईओ सव्वगतीसु वि संतकम्मं पडुच्च अत्थि ॥ ६० ॥

इदाणिं उवसमणाए अवसरो पत्तो, तं भण्णइ—

पढमकसायचउक्कं, दंसणतिग सत्तगा वि उवसंता।
अविरयसम्मत्ताओ, जाव नियट्टि त्ति नायव्वा ॥ ६१ ॥

पढमकसायचउक्कं० गाहा। पढमकसाया–अणंताणुबंधिणो४ 'दसणतिगं' सम्मत्त-मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्तादि 'सत्तगा वि' त्ति एयाओ सत्त वि कम्मपगडीओ 'उवसंत' त्ति उवसामियाओ। 'अविरयसम्मत्ताओ जाव नियट्टि' त्ति अविरयसम्मद्दिट्ठि-संजयासंजय-पमत्ता-ऽपमत्तसंजय-अपुव्वकरणा एएसु सव्वेसु उवसंता लब्भंति। किं भणियं भवइ? अपुव्वकरणं मोत्तूण सेसा एएसिं उवसामगाउ, अपुव्वकरणम्मि नियमा उवसंता लब्भंति।

तत्थ उवसामणा अणंताणुबंधीणं भण्णइ—असंजयातीणं तिण्हं अण्णयरो अण्णयरे जोगे तिहिं विसुद्धाहिं लेसाहिं सागारोवओगे य वट्टमाणो अंतोकोडाकोडीठितिसंतकम्मिओ परियट्टमाणीओ सुभपगतीओ चेव बंधति। समए समए असुभाणं कम्माणं अणुभागं अणंतगुणहाणी पकरेति, सुभाणं कम्माणं अणंतगुणवड्ढी पकरेति। ठितिबंधे वि पुण्णे पुण्णे पलिओवमसंखे-

१ °मस्स सं° कार ॥

जइभाग ओसरिऊण बंधइ । करणकालाओ पुव्व पि अंतोमुहुत्त विसुज्झतो अच्छति । अच्छित्तु एत्थ तिण्णि करणाइ करेइ अतो मुहुत्तियाइ, त जहा—अहापवत्तकरण अपुव्वकरणं अणियट्टिकरण ति । चउत्थी उवसतद्धा । तत्थ अहापवत्तकरण नाम समए समए अणतगुणाए विसोहीए वड्ढति, न तत्थ ठितिघाओ वा रसघाओ वा गुणसेढी वा गुणसकमो वा अत्थि । तत्थ असखेज्जलोगागासपएसमेत्ताणि विसोहिट्ठाणाणि । जे पढमसमए पडिवज्जति तेसिं छट्ठाणवडियाणि असखेज्जाणि ठाणाणि । तत्थ पढमसमए जहण्णिया विसोही थोवा, बितियसमये जहण्णिया विसोही अणतगुणा, ततियसमए जहण्णिया विसोही अणतगुणा, एव जाव तस्स करणस्स सखेज्जइभागो त्ति । तओ पढमसमए अहापवत्तस्स उक्कोसियाए विसोहीए पडिवण्णस्स जा विसोही सा अणतगुणा, तओ जओ जहण्णियाओ नियत्तो तओ उवरिल्लय जहण्णय विसोहिट्ठाण अणतगुण, तओ बितियसमए उक्कोसिया विसोही[1] अणतगुणा, तओ उवरिल्ल जहण्णय ठाण अणतगुण, तओ ततियसमए उक्कोसिया विसोही अणतगुणा । एव जहण्णय उक्कोसय च अणुपतेण अणतगुणाए सेढीए नेयव्व जाव अहापवत्तकरणस्स अतिमजहण्ण ति । तओ उक्कस्साणि ठाणाणि अणतगुणाए सेढीए नेयव्वाणि जाव अहापवत्तकरणस्स दुचरिमाओ उक्कोसियाओ त्ति । दुचरिमा उक्कोसियाओ विसोहीओ चरिमसमए उक्कोसिया विसोही अणतगुणा । एव अहापवत्तकरण भणिय ।

अपुव्वकरणस्स असखेज्जलोगागासपएसमेत्ताणि विसोहिठाणाणि । तस्स पढमसमए पडिवज्जमाणाण छट्ठाणपडियाणि असखेज्जाणि ठाणाणि । तत्थ पढमसमए जहण्णिया जा विसोही थोवा, सा य अहापवत्तचरिमसमयचरिमट्ठाणविसोहीओ

१ ही एव अ कार ॥

वि अणंतगुणा, तओ अपुव्वकरणस्स पढमसमयम्मि चेव उक्कस्सिया विसोही अणंतगुणा, तओ बितियसमए जहण्णिया विसोही अणंतगुणा । एवं जहण्णयं उक्कस्सयं च सेढीए नेतव्वं जाव अपुव्वकरणस्स चरिमसमओ त्ति । अपुव्वकरणस्स चरिमसमए जहण्णिया विसोही दुचरिमसमयउक्कस्सगाओ विसोहीओ अणंतगुणा, तस्सेवुक्कस्सिया विसोही अणंतगुणा । अपुव्वकरणं ति किं भणियं भवइ ? अपुव्वं अपुव्वं किरियं नियच्छति त्ति अपुव्वकरणं । तस्स पढमसमए ठितिघाओ रसघाओ गुणसेढी गुणसंकमो अण्णो ठितिबंधो य जुगवं पवत्तंति [त्ति] अपुव्वं करणं भण्णइ । तत्थ ठितिघाओ नाम ठितिसंतकम्मस्स अग्गग्गाओ उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहत्तं जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं ठितिं छिंदित्तु तं दलियं हेट्ठओ जाओ ठितीओ न खंडेति तत्थ छुभति । अंतोमुहुत्तेण तं दलियं उक्किरति । तओ पुणो हेट्ठाओ पलिओवमस्स संखेज्जइभागं तेणेव कमेण छिंदति निखिवति य । एवं अपुव्वकरणद्धाए ठितिखंडसहस्साणि बहूणि गयाणि भवंति । तओ अपुव्वकरणद्धा समत्ता भवति। अपुव्वकरणस्स पढमसमए जं ठितिसंतकम्मं तं तस्सेव चरिमसमए संखेज्जगुणहीणं जायं ।

तत्थ अणुभागघाओ णाम जं असुभपगतीणं अणुभागसंतकम्मं तस्स अणंतिमं भागं मोत्तूण अंतोमुहुत्तेण समए समए अणंता अणुभागा विणासिज्जंति । तओ पुणो सेसस्स अणंतिमं भागं मोत्तूण अंतोमुहुत्तेण अणंता भागा विणासिज्जंति । एवं पुणो पुणो एगम्मि ठितिखंडगकाले अणेगाइं अणुभागखंडगसहस्साइं जंति । एवं बहूहिं ठितिखंडेहिं अपुव्वकरणं परिसमत्तं भवति ।

---

१ पत्त त्ति अ° कार ॥

तत्थ गुणसेढी णाम कालओ अपुव्वकरणद्धाओ अणियट्टिकरणद्धाओ 卐 य विसेसाहिगो गच्छो ठ्ठविज्जति । अंतोमुहुत्त-पमाणमेत्तासु ठितिसु उवरिल्लाउ ठितीउ दलिय घेत्तूण उदयावलियाउ卐 उवरिल्लीसु ठितीसु अंतोमुहुत्तप्पमाणमेत्तासु दलिय निखिवति । ज पढमसमए निक्खिप्पमाण दलिय त गुणसेढीए मूलिल्लठितीए थोव, तओ बितियठितीए असखेज्जगुण, एव जाव अंतोमुहुत्त अंतिमिया ठिति त्ति । एव बितियसमयगहिय पढमसमयगहियाओ दलियाओ असखेज्जगुण नेयव्व । बिति यसमए वि निक्खिप्पमाण एव चेव भाणियव्व । एव ततियसमए वि गहण निक्खेवाइ नेयव्वाइ । गुणसेढीनिक्खेवो सेसे सेसेसु समएसु । एसा गुणसेढी ।

गुणसंकमो नाम—अपुव्वकरणस्स पढमसमए जं परपगइ सकामेइ अणताणुबंधियाईण असुहाण दलिय त थोव, बिति यसमए ज परपगइ सकामिज्जति त असखेज्जगुण, ततियसमए असखेज्जगुणं, एव नेयव्व । एसो गुणसकमो ।

अण्णो ठितिबधो त्ति अपुव्वकरणस्स पढमसमए अण्णो खुड्डलओ ठितिबधो आढविज्जति । ठितिबधो ठितिखडग च जुगव आढप्पति जुगव च निट्ठविज्जति । एव एए पचऽहिगारा अपुव्वकरणस्स पढमसमए जुगव आढविज्जति । एव अपु व्वकरण भणिय ।

अणियट्टिकरणं णाम अण्णोण्ण नाइवट्टति परिणामादीहिं ति अणियट्टी । किं भणिय भवइ ? भण्णइ—अणियट्टिट्ठाण जे पढमसमए पडिवण्णा तेसिं सव्वेसिं परिणामो तुल्लो, बितियसमए वि जत्तिया वट्टति तेसिं सव्वेसिं परिणामो तुल्लो, एव

१ स्वस्तिकद्विकान्तर्वर्ती पाठ का२प्रतेरस्ति ॥

नेयव्वं ताव जाव चरिमसमए वि सव्वेसिं तुल्लो परिणामो । अणियट्टीकरणस्स परिणामट्ठाणाणि अंतोमुहुत्तप्पमाणमेत्ताणि । अणियट्टिकरणस्स एक्कम्मि एक्कम्मि समए वट्टमाणाणं विगप्पो नत्थि । तस्स वि पढमसमए पुव्वुत्ता पंच अहिगारा जुगवं पवत्तंति । एवं अणियट्टिअद्धाए संखेज्जेसु भागेसु गएसु अणंताणुबंधीणं अंतरं करेति, हेट्ठओ आवलियामेत्तं मोत्तूणं । तओ उवरिं अंतोमुहुत्तमेत्तं ठितिं खंडइ । तत्थ उक्किरिज्जमाणं दलियं परपगतीसु बज्झमाणासु संकामेति । अंतोमुहुत्तेणं ठिति-बंधगद्धाए समं अंतरं कीरमाणं कयं भवति । तओ दुसमयकए अंतरे चत्तारि वि पढमकसाए जुगवं च उवसामेति, तम्मि चेव समए पढमट्ठितिआवलियागयं दलियं थिबुगसंकमेणं वेदिज्जमाणीसु पगडीसु संछुभति उवरिमठितिगयं च उवसामेति । उवसामणा णाम जहा धूली पाणिएण सित्ता दुहणादीहिं कोट्टिया निप्फंदा भवति, एवं कम्मधूली वि विसोहिपाणियपरि-सित्ता अणियट्टिकरणकिरियाकोट्टिया उदय-उदीरण-संकम-णिहत्ति-णिकायणाणं ण जोग्गा भवति । तं पढमसमए थोवं दलियं उवसामेति, बितियसमए असंखेज्जगुणं दलियं, तइयसमए असंखेज्जगुणं, एवं जाव अंतोमुहुत्तं कालं । एवं अणंता-णुबंधिणो उवसंता भवंति । एयं एकीयमएण भणियं । अण्णेसिं आयरियाणं अणंताणुबंधीणं उवसामणा नाम नत्थि, विसंजोयणा णाम अणंताणुबंधीणं भवति । ते कहं विसंजोइज्जंति ? भण्णइ—पुव्वुत्ता असंजयादओ तिण्णि वेदगसम्मद्दिट्ठिणो चउगइगा—नारग-देवा अविरयसम्मद्दिट्ठी, तिरिया अविरयसम्मद्दिट्ठी देसविरया य, मणुया अविरया देसविरया विरया य । एए जहासंभवं विसोहिवेगेण परिणया अणंताणुबंधिणो विसंजोयणत्थं तिण्णि करणाइं करिंति, तं०—अहापवत्तं अपु-

---

१ °सामिप्प तम्मि स ॥

त्तकरण अणियट्टिकरण च । करणाण लक्खण पुव्वुत्त । पूर्ववत् ठितिघायादि जाव अणियट्टिकरण पत्तो अणताणुबधिणो ठिर्ति उव्वट्टेंतो उव्वट्टेंतो पलिओवमस्स असखेज्जइभागमेत्त करेति । उव्वट्टणाविही जहा कम्मपगडीसगहणीए उव्वलणसकमे तहा भाणियव्व । त पलिओवमस्स असखेज्जतिभागठितिकय बज्झमाणियासु मोहपगडीसु परिणामेति । पढमसमए थोव परिणामेति, बितियसमए असखेज्जगुण, एव जाव चरिमसमए सव्वसकमेण असखेज्जगुण परिणामेति, आवलियागय मोत्तूण । आवलियागय थिबुकसकमेण वेदिज्जमाणीसु पगडीसु सकामेति । एव अणताणुबधिणो विसजोइया भवति ताहे चउवीससतकम्मिओ भवति । अणताणुबधीण विसजोयणा भणिया ।

इदाणि दसणतिगस्स उवसामणा भण्णति—तत्थ मिच्छत्तस्स उवसामगो मिच्छद्दिट्ठी वेदगसम्मद्दिट्ठी य, इयरेसि दोण्ह वेयगसम्मद्दिट्ठी चेव उवसामगो । तत्थ मिच्छद्दिट्ठिस्स मिच्छत्तउवसामणे विही जहा कम्मपगडीसगहणीए पढमसम्मत्त उप्पाएतस्स सा चेव भाणियव्वा, नवरि मिच्छद्दिट्ठिस्स नेव सम्मत्त देसविरइ सव्वविरइ वा सम्मत्तसहिय पडिवज्जमाणस्स, त पडुच्च असजय देसविरय पमत्ता ऽपमत्तसजएसु दसिणतिग उवसत लब्भइ, सेढीओ वा परिवडियाण असजयादीण । इयाणि वेयगसम्मद्दिट्ठिस्स मिच्छत्तादितिग उवसामेन्तस्स विही भण्णति—सो उवसमसेढि पडिवज्जिउकामो पढम अणताणुबधिणो विसजोएति, ते विसजोएन्तस्स विही भणिओ । तओ अतोमुहुत्तेण दसणमोहतिग सजमे वट्टमाणो उवसामेत्ति, अणताणुबधिणो विसजोएन्तस्स जाणि करणाणि अहापवत्तादीणि परूविताणि जाव अणियट्टिअद्धाए अन्तरकरण कय ति

१ मिच्छद्दिट्ठी वेयगसम्मद्दिट्ठी' सटिप्पनकम् ॥

ताव एत्थ वि तहा चेव भाणियव्वं। अंतरकरणं करेंतो वेदगसम्मत्तस्स पढमट्ठिर्ति अंतोमुहुत्तं ठ्वेति, सेसाणं दोण्हं आवलियमेत्तं पढमठिर्ति ठवेत्ता किंचूणमुहुत्तप्पमाणमेत्तं ठिर्तिं खंडेति। बज्झमाणीणं पगतीणं ठितिबंधद्धापमाणमेत्तेण कालेणं उक्किरिज्जमाणं दलियं सम्मत्तस्स पढमट्ठितीए पक्खिववति, सम्मत्तस्स बंधाभावाओ। एवं अंतरं कीरमाणं कयं भवति। मिच्छत्तसम्मामिच्छत्ताणं पढमट्ठितीओ सम्मत्तस्स पढमठितीए थिवुगसंकमेणं संकामेति। एवं सम्मत्तस्स पढमट्ठितीए झीणाए उवसमसम्मद्दिट्ठी भवति। एवं तिण्णि वि उवसंताइं वुच्चंति। तओ अंतोमुहुत्तेणं उवसंतदंसणमोहणिज्जो चरित्तमोहं उवसामेउकामो अहापवत्तादीणि तिण्णि करणाणि करेति। तेसिं लक्खणं पुव्वुत्तं, नवरि अहापवत्तकरणं अपमत्तगुणट्ठाणे भवति, अपुव्वकरणं अपुव्वकरणगुणट्ठाणम्मि चेव। तत्थ ट्ठितिघायादीणि पुव्वुत्ताणि। नवरि सव्वासिं असुभपगतीणं अबज्झमाणीणं अपुव्वकरणपढमसमए चेव गुणसंकमो पवत्तति। अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जइमे भागे गए निद्दा-पयलाणं बंधो वोच्छिज्जति। तओ बहूहिं ठितिखंडगसहस्सेहिं गएहिं अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जा भागा गया भवंति। तत्थ परभवियाणं नामाणं तीसाए पगडीणं बंधवोच्छेदो भवति। तओ ठितिखंडगपुहत्ते गते अपुव्वकरणद्धाए चरिमसमए हास-रइ-भय-दुगुंछाणं चउण्हं कम्माणं बंधवोच्छेदो, हास-रति-अरति-सोग-भय-दुगुंछाणं च छण्हं कम्माणं उदयवोच्छेदो य, सव्वकम्माणं च अपसत्थउवसमणा-निहत्ति-निकायणाकरणाइं च वोच्छिज्जंति। एएसु असंजयादि-अपुव्वंतेसु सत्त कम्माणि उवसंताणि लब्भंति।

[1]सत्तऽट्ठ नव य पनरस, सोलस अट्ठारसे व [2]उगुवीसा। एगाहि दु चउवीसा, पणुवीसा बायरे जाण॥

---

१ गाथेमा सर्वेषु मूलसूत्रादर्शेषूपलभ्यते॥ २ उगवी° खे२॥

सत्तट्ठनव० गाहा । तओ बितियसमए अणियट्टिओ जाओ । अणियट्टिम्मि वि ठितिघायादीणि तहेव । एव ठितिसतकम्म मोहस्स परिहायमाण परिहायमाण अणियट्टिस्स पढमसमयट्ठितिसताओ[1] सखेज्जगुणहीन जाय । अणियट्टिअद्धाए सखेज्जेसु भागेसु गएसु ताहे एक्कवीसाए पगतीण अंतर करेइ । एत्थ अपुव्वकरण अणियट्टिअद्धासु अणेगाइ वत्तव्वगाइ जहा कसायपाहुडे कम्मपगडिसगहणीए वा तहा वत्तव्व । अतर किचा नपुसगवेद उवसामेइ, उवसामणाविही पूर्ववत् । एव अट्ठ उवसताणि । तओ अतोमुहुत्तेण इत्थिवेय उवसामेइ, उवसामिए नव । तओ अतोमुहुत्तेण छन्नोकसाए उवसामेइ, एव पण्णरस उवसता भवति । तम्मि चेव समए पुरिसवेयस्स बधोदयवोच्छेओ भवति । तओ समऊणदुआवलियाहिं पुरिसवेय उवसामेइ, उवसते सोलस । तओ अतोमुहुत्तेण अपच्चक्खाणावरण-पच्चक्खाणावरणकोहे दो वि जुगव उवसामेइ, एव अट्ठारस । तम्मि चेव समए कोहसजलणाए बधोदयोदीरणावोच्छेओ य । तओ समऊणदुआवलिएहिं कोहसजलण उवसामेइ, एगूणवीस । तओ अंतोमुहुत्तेण अपच्चक्खाणावरण पच्चक्खाणावरणमाणे दो वि जुगव उवसामेइ, उवसते एक्कवीस । तम्मि चेव समए माणसजलणाए बधोदयोदीरणावोच्छेओ य । तओ समऊणदुआवलिएहिं माणसजलण उवसामेति, उवसते बावीस । तओ अतोमुहुत्तेण अपच्चक्खाणावरण पच्चक्खाणावरणमायाओ दो वि जुगव उवसामेइ, उवसते चउवीस । तम्मि चेव समए मायासजलणाए बधोदओदीरणावोच्छेओ य । तओ सेकाले लोभवेयगो लोभवेयगद्धाए दोसु तिभागेसु बीयट्ठितीओ दलिय आणेत्तु पढमट्ठितिं करेति । तत्थ पढमो तिभागो अस्सकण्णकरणद्धा, तम्मि विसोहीए वड्ढमाणो अपु-

---

१ ओ भसदे का० २ ॥ २ वोच्छिज्जति । तओ स का० २ ॥

बफड्डगाइं करेइ । मायासंजलणाए बंधे वोच्छिण्णे तओ समऊणदुआवलिएहिं मायासंजलणं उवसामेइ, उवसंते पणुवीसं ।
अस्सकण्णकरणे वट्टमाणो एवं अस्सकण्णकरणद्धाए कयाए तओ लोभवेयगद्धाए बिइए तिभागे वट्टमाणो लोभसंजलणाए
किट्टीओ करेइ जाव अंतगयं । किट्टीकरणद्धाए चरिमसमए अपच्चक्खाणावरण-पच्चक्खाणावरणलोभे दो वि जुगवं उवसा-
मेइ, उवसंते सत्तावीसं उवसंता भवंति । तम्मि चेव समए लोहसंजलणाए बंधवोच्छेओ बायरलोभोदयवोच्छेओ य । तओ
सेकाले सुहुमसंपराइओ होइ । किट्टीकयाओ दलियाओ आणेत्तु पढमट्ठितिं करेइ वेएइ य ।

[1]सत्तावीस सुहुमे, अट्ठावीसं[2] पि मोहपयडीओ । उवसंतवीयरागे, उवसंता होंति नायव्वा ॥

सत्तावीसं सुहुमे० गाहा । सत्तगाओ आढवेत्तु जाव पणुवीसं ताव बायरो त्ति अनियट्टी तम्मि उवसंताइं लब्भंति ।
सत्तावीसं सुहुमरागम्मि उवसंताइं लब्भंति । सुहुमसंपराइगद्धा अंतोमुहुत्तं, तम्मि काले सुहुमकिट्टीकयं समऊणदुआवलिय-
बद्धं च उवसामेति । सुहुमसंपराइगस्स चरिमसमए लोभसंजलणा उवसंता भवति । तम्मि चेव समए पंचन्हं णाणावरणी-
याणं चउन्हं दंसणावरणीयाणं पंचण्हं अंतराइयाणं जसकित्ति उच्चागोयस्स य बंधवोच्छेदो । तओ सेकाले उवसंतकसाओ
भवति, तम्मि 'अट्ठावीसं पि मोहपगडीओ उवसंतवीयरागे उवसंता हुंति नायव' त्ति उवसंतकसायम्मि अट्ठावीसं पि
मोहपगडीओ उवसंताओ भवंति । उवसंतत्ताओ वीयरागो उवसंतवीयरागो, सो जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं
कालं लब्भइ । तस्स परिवडणं नियमा भवक्खएण वा अद्धाखएण वा । भवक्खओ मरंतस्स, अद्धाखओ उवसंतद्धाए पुण्णाए

१ इमा गाथा त्रिष्वपि मूलसूत्रप्रतिषु विद्यते ॥ २ °सं च मो° खेर ॥

परिवडति । सो जहा आरूढो तहा चेव परिवडति, जहिं उदओदीरण बधादओ ठिया तहिं तहिं परिवडतस्स ते आढवि ज्जति, एव जाव पमत्तसजओ ताव परिवडति, तओ हेट्ठिल्ल अणतरदुग पि कोइ पावइ, सासणभाव पि गच्छति कोइ । जो भवक्खएण परिवडति तस्स पढमसमए चेव सव्वकरणाइ पवत्तति । एस विसेसो—उक्कोसेण एगभवे दो वाराओ उवसम सेढिं पडिवज्जति, जो दुवे वारे उवसमसेढिं पडिवज्जइ तस्स नियमा तम्मि भवे खवगसेढी नत्थि, जो एक्कसिं उवसमसेढिं पडिवज्जइ तस्स खवगसेढी होज्ज वा । विसेसपवचो जहा कम्मपगडिसगहणीए ॥ ६१ ॥

एव उवसमसेढी परूविया । इदाणिं खवगसेढी भण्णइ—

पढमकसायचउक्क, इत्तो मिच्छत्तमीससम्मत्त । अविरयसम्मे देसे[1], पमत्त अपमत्त खीयति॥ ६२॥

पढमकसायचउक्क० गाहा । जो खवगसेढिं पडिवज्जति सो नियमा मणूसो अट्ठवासाओ उवरिं वट्टमाणो । सो पढममेव अणताणुबधिणो विसजोएइ वा खवेइ त्ति वा एगट्ठ । विसजोयविही पुव्वभणिया तहा चेव । एव अणताणुबधिणो विसजो- एत्तु 'एत्तो मिच्छत्तमीससम्मत्त' ति तओ अतोमुहुत्तेण दसणमोहखवणत्थ तिण्णि करणाणि करेइ, करणाण लक्खण पुव्वुत्त जाव अणियट्टिकरण ताव पूर्ववद् वक्तव्यम् । अणियट्टिअद्धाए वट्टमाणो दसणतिगस्स ठितिसत उवट्टेंतो उवट्टेंतो पलिओवमस्स असखेज्जइभाग करेइ, तओ मिच्छत्तदलिय सम्मामिच्छत्त सम्मत्तेसु पक्खिवति—पढमसमए थोव, बितिय-

1 से, विरय पमत्तऽप्पमत्ते य खी खे1 ख2 ॥

समए असंखेज्जगुणं, एवं जाव अंतोमुहुत्तेण कालेणं सव्वं संकामेति । चरमसमए आवलियागयं मोत्तूण सेसं सव्वसंकमणाए संकामेति, एवं मिच्छत्तं खवियं भवति । तओ अंतोमुहुत्तेणं सम्मामिच्छत्तं पि एएणेव कमेणं सम्मत्ते पक्खिवति, एवं सम्मामिच्छत्तं खवियं भवति । तओ सम्मत्तं उवट्टिज्जमाणं उवट्टिज्जमाणं अंतोमुहुत्तेणं कालेणं अंतोमुहुत्तठितीयं जायं । तं कमेण वेदिज्जमाणं वेदिज्जमाणं समयाहियावलियसेसं जायं, तम्मि समए उदीरणा फिट्टति । तओ उदएण चेव वेदेंतो वेदेंतो चरमसमयवेयगसम्मद्दिट्ठी जाओ । तओ सेकाले खइगसम्मद्दिट्ठी जाओ । एवं दंसणतिगस्स खवणा भणिया ।

एए सत्त कम्मंसे को खवेति ? भण्णति—'अविरयसम्मे देसविरय-पमत्ता-ऽपमत्ते य खीयंति' त्ति । असंजयसम्मद्दिट्ठीपभिति जाव अप्पमत्तसंजओ ताव एए सत्त वि कम्मंसे खवेति । जइ बद्धाउगो तो एत्थं चेव ट्ठाति । अबद्धाउगो तो अंतोमुहुत्तेणं पुणो चरित्तमोहखवणनिमित्तं अहापवत्ताईणि तिण्णि करणाणि करेति । तेसिं लक्खणं परिभासा य पुव्वुत्ता । अणंतर जहा उवसामगस्स तहा चेव ट्ठितिघायादीहिं कम्माणि खविज्जमाणाणि खविज्जमाणाणि अणियट्टिअद्धाए पलिओवमस्स असंखेज्जइभागमेत्तठितिगाणि जायाणि ।

अणियट्टिबायरे थीणगिद्धितिग णिरयतिरियणामाउ । संखेज्जइमे सेसे, तप्पाओगाउ खीयति ॥

अणियट्टिबायरे थीण० गाहा । अणियट्टिअद्धाए असंखेज्जेसु भागेसु गतेसु थीणगिद्धितिग निरयगति तिरियगति एगिंदिय-बे०-ते०-चउरिंदियजाइ निरय-तिरियाणुपुव्वीओ आयाव उज्जोव थावर सुहुम साहारणमिति एएसिं सोलसण्हं कम्माणं

१ सर्वास्वपि मूलसूत्रप्रतिष्विय गाथोपलभ्यते ॥

उवलणविहिणा उवट्टिजमोणा उवट्टिजमोणा पलिओवमस्स असखेजइभागमेत्ता ठिती जाया । तओ वज्जमाणियासु गुण-संकमेण छुब्भताणि छुब्भंताणि खीणाणि भवति ।

[3]एत्तो हणइ कसायट्ठग पि पच्छा णपुसग इत्थि । तो णोकमायछक्क, छुब्भइ सजलणकोहम्मि ॥

एत्तो हणइ० गाहा । अट्ठ कसाया—अपच्चक्खाणावरण पचक्खाणावरणा । एए अट्ठ वि पुव खवितुमाढत्ता अतोमुहुत्त खवि ज्जमाणा खविज्जमाणा गया न ताव खविया । तत्थ किर सोलस पुव्वुत्ताणि कम्माणि एयविउमाढत्ताणि खविज्जमाणाणि खविज्ज माणाणि अतरे खीणाणि भवति । पच्छा अट्ठ कसाया उवलणविहिणा अतोमुहुत्तेण खीयति त्ति । एय एगेसि मत । अण्णे यायरिया भणति—सोलस कम्माणि पुव खविउमाढविज्जति, तओ अतरे पुव अट्ठ कमाया खीयति, पच्छा सोलसकम्माणि, एस सुत्ताएसो । तओ अतोमुहुत्तेण णवण्ह नोकसायाण चउण्ह सजलणाण च अतरकरण करेति । अतरकरणविही जहा कम्म-पगडीसगहणीए । अतर करेत्तु नपुसगवेय खवेत्तुमाढवेति, खवणविही उवलणालक्खणेण । अतरकरणस्स उवरिमठिति दलिय उवट्टिजमाण उवट्टिजमाण पलिओवमस्स असखेजइभागमेत्त जाय । तओ त परपगईसु असखेज्जगुणेण सछुब्भमाण सछुब्भमाण अतोमुहुत्तेण सछूढ भवति । एव नपुमगवेदो खीणो । तओ अंतोमुहुत्तेण इत्थिवेदो वि य एएणेव कमेण खय गच्छति । तओ सत्त वि नोकसाए जुगव खवेत्तुमाढवेति । तओ पभिति छण्णोकसाया पुरिसवेदम्मि न सकमति, कोहस-जलणाए सकमति । तओ खविज्जमाणा खविज्जमाणा अतोमुहुत्तेण 'तो नोकसायछक्क पि छुभति सजलणकोहम्मि' त्ति

१-२ माण स ॥ ३ गाथेमा सर्वेष्वपि मूलसूत्रादर्शेषु लभ्यते ॥

छन्नोकसाया कोहसंजलणाए संछुद्धा । तम्मि चेव समए पुरिसवेयस्स बंधोदयोदीरणवोच्छेओ, समऊणदुआवलियबद्धं मोत्तूण सेसदलियखओ य, तओ सेकाले अवेयगो ।

कोहं वेदेमाणस्स कोहद्धाए तिण्णि तिभागा—अस्सकण्णकरणद्धा किट्टिकरणद्धा किट्टिवेयगद्ध त्ति । तत्थ अस्सकण्णकरणद्धाए वट्टमाणो अणंताइं समए समए अपुव्वफड्डगाइं चउण्हं संजलणाणं करेति । किट्टिकरणद्धाए वट्टमाणो समए समए चउण्हं संजलणाणं बारस किट्टीओ करेति, एक्केक्कस्स कसायस्स तिण्णि तिण्णि पढमकिट्टी बितियकिट्टी ततियकिट्टि त्ति । एवं कोहेण पडिवण्णस्स । माणेण पडिवण्णो कोहे खविए उव्वलणालक्खणेणं सेसाणं तिण्ह कसायाणं नव किट्टीओ करेति पुव्वकमेणं । मायाए पडिवण्णो कोह-माणेहिं खविएहिं सेसदुगस्स छकिट्टीओ करेति पुव्वकमेणं । लोभेणं पडिवण्णो हेट्ठतिगे खविए लोभस्स तिण्णि किट्टीओ करेति । एसा किट्टीकरणविही । तत्थ किट्टीवेयगद्धा—किट्टीकरणद्धाए निट्ठियाए कोहेण पडिवण्णो सेकाले पढमकिट्टीदलियं बितियठितिगयं उकड्डेत्तु पढमठितियं करेइ वेदेइ य । पढमट्ठितिकरणं जहा कम्मपगडिसंगहणीए । तं कमेण वेदेति जाव समयाहियावलिया सेस त्ति । तम्मि समए बितियकिट्टीओ दलियं उकड्ढित्तु पढमठितिं करेइ वेदेइ य, तं पि कमेण वेदेति जाव समयाहियावलिया सेस त्ति । तओ सेकाले कोहस्स ततियकिट्टीओ दलियं कड्ढित्तु ततियकिट्टीए पढमठितिं करेति वेदेति य ताव जाव समयाहियावलिया सेस त्ति ॥ ६२ ॥

पुरिसं कोहे कोहं, माणे माणं च छुहइ मायाए । मायं च छुहइ लोभे, लोभं सुहुमं[1] पि तो हणइ॥ ६३ ॥

---

१ °मं च तो खे२ । °म पि लो ह° खे३ ॥

पुरिसं कोहे० गाहा । पुरिसवेयस्स बंधे वोच्छिण्णे तओ समयूणदुयावलियमेत्तेण कालेण अस्सकण्णकरणद्धाए वट्टमाणो पुरिसवेयं वेदेंतो कोहम्मि सव्वसंकमणाए सछुभति । एव पुरिसवेओ खीणो भवति । 'कोह माणे' त्ति तिसु वि कोहवेद गद्धासु वट्टमाणो कोहसंजलण माणसंजलणाए य खिवतो खिवतो जाव ततियकिट्टिवेदगद्धाए चरिमसमओ ताव आगओ, तम्मि समए कोहसंजलणाए बंधोदओदीरणा य जुगवं फिट्टति, सतकम्म पि समयूणदुआवलियबद्धं मोत्तूण सव्वं माणम्मि पक्खित्त, तओ सेकाले माणस्स पढमकिट्टीओ दलिय ओकड्डित्तु पढमठिर्ति करेति वेदेइ य ताव जाव अंतोमुहुत्त । कोहस्स बंधे वोच्छिण्णे कोहसंजलणाए दलिय ओकड्डिति, तओ समऊणदुआवलियमेत्तेणं कालेण खीयमाणं खीयमाणं माणम्मि सव्वसंकमेण संकमति । एव माणस्स पढमकिट्टीए पढमट्ठिई समयाहियावलिया सेस त्ति । तओ सेकाले माणस्स बितियकि ट्टीओ दलिय उकड्डित्तु पढमठिर्ति करेइ वेदेइ य कमेण ताव जाव समयाहियावलिया सेस त्ति । ततो सेकाले माणस्स ततियकिट्टीओ दलिय उकड्डित्तु पढमट्ठिर्ति करेति वेदइ य कमेण ताव जाव समयाहियावलिया सेस त्ति । तम्मि समए माणस्स बंधोदओदीरणा य जुगवं फिट्टति, सतकम्म पि समयूणदुआवलियाबद्धं मोत्तूण सेस सव्व मायाए सछुद्ध । 'माणं च छुभति मायाए' त्ति तओ सेकाले मायाए पढमकिट्टीओ दलिय ओकड्डेत्तु पढमठिर्ति करेइ वेदेइ य कमेण ताव जाव अंतोमुहुत्त काल । माणसंजलणाए बंधे वोच्छिण्णे तओ समऊणदुआवलियमेत्तेण कालेण मायासंजलणम्मि सव्वसंकमेण माणं सछुभवि । तओ मायाए पढमकिट्टीए पढमठितीए समयाहियावलियाए सेसाए तओ सेकाले मायाए बितियकिट्टीओ दलिय ओकड्डित्तु पढमठिर्ति करेइ वेदेइ य ताव जाव समयाहियावलिया सेस त्ति । तओ सेकाले मायाए ततियकिट्टीओ

दलियं ओकड्ढित्तु पढमठिर्तिं करेइ अंतोमुहुत्तप्पमाणं वेदेइ य ताव जाव समयाहियावलिया सेस त्ति । तम्मि समए मायाए बंधोदओदीरणा य जुगवं फिट्टंति, संतकम्मं पि समऊणदुयावलियबद्धं मोत्तूण सेसं सव्वं लोभसंजलणम्मि पक्खित्तं । तओ सेकाले लोभस्स पढमकिट्टीओ दलियं ओकड्ढित्तु पढमठिर्तिं करेइ अंतोमुहुत्तप्पमाणमेत्तं, तं च लोभवेयगद्धाए तिभागो वेदेइ य । मायासंजलणाबंधे वोच्छिण्णे तओ समऊणदुआवलियमेत्तेणं कालेणं लोभम्मि मायासंजलणा सव्वसंकमेण संकंता भवति, 'मायं च छुभति लोभे' ति गयं । एवं लोभसंजलणाए पढमकिट्टीओ पढमट्ठिती समयाहिआवलियसेसा जाया । तओ सेकाले लोभस्स बितियकिट्टीओ दलियं ओकड्ढित्तु पढमट्ठिर्तिं करेइ बीयतिभागमेत्तं । तं वेयंतो बितियकिट्टीओ तइयकिट्टीओ य दलियं घेत्तूणं सुहुमसंपराइयकिट्टीओ करेइ । तेसिं लक्खणं जहा कसायपाहुडे । एवं अंतोमुहुत्तं किट्टीओ करेति ताव जाव लोभस्स बितियकिट्टीए पढमट्ठिती समयाहियावलियसेस त्ति । तम्मि समए लोभसंजलणाए बंधवोच्छेओ बायरकसायाणं उदओदीरणावोच्छेओ य अनियट्टिकालवोच्छेओ य जुगवं भवंति । तओ सेकाले सुहुमसंपराइगकिट्टीओ दलियं ओकड्ढित्तु पढमट्ठिर्तिं करेइ ततियतिभागमेत्तं वेदेइ य । तओ सुहुमसंपराइओ वुच्चइ । अतीयम्मि आवलिया छड्डियाओ ताओ सव्वत्थ वेतिज्जमाणीसु थिबुगसंकमेणं विपच्चंति । एसो पुव्वमक्खाणिओ अत्थो, अओ इयाणिं भणितो । 'लोभं सुहुमं पि तो हणति' त्ति सो सुहुमसंपराइगो लोभस्स सुहुमकिट्टिं वेदेमाणो सुहुमकिट्टीकयं दलियं समयूणदुआवलियबद्धं च समए समए खवेइ ठितिघायादीहिं । एवं जाव सुहुमसंपराइगद्धाए संखेज्जा भागा गय त्ति । तओ संखेज्जइमे लोभसंजलणं सव्वोवट्टणाए उवट्टेत्तु सेससुहुमसंपराइगद्धाए संकमं करेइ, सा य अंतोमुहुत्तमेत्ता । तओ पभिति मोहस्स ठितिघाओ नत्थि, सेसाणं

कम्माणं ठितिघातादओ पवत्तति चेव । त ओवट्टियठिर्ति उदओदीरणाहिं वेदतो वेदेंतो गओ ताव जाव समयाहियावलिया सेस त्ति । तम्मि समए उदीरणा पुव्वुत्ता फिट्टा । उदएण चेव वेदेति ताव जाव चरिमसमओ त्ति । तम्मि समए सुहुमस पराइगस्स पचण्ह णाणावरणाण चउण्हं दसणावरणाण जसकित्ती उच्चागोय पचण्हमतराइगाण एएसिं सोलसण्ह कम्माण बधवोच्छेओ मोहणिज्जस्स उदय-सतवोच्छेदो य भवति । तओ सेकाले खीणकसाओ जाओ । तस्स खीणकसायस्स ठिति घातादओ पूर्ववत् । एव खीणकसायद्धाअंतोमुहुत्तपमाणमेत्ताए सखेज्जेसु भागेसु गतेसु सखेज्जइमे सेसे पच णाणवरण छदस-णावरण पचन्हमतराइगाण एएसिं सोलसण्ह कम्माण ठितिसतकम्म सव्वोवट्टणाए उवट्टेत्तु सेसखीणकसायद्धासम करेइ । तओ पभिइ एयासिं ठितिघाओ फिट्टो, सेसाण अत्थि चेव, नवरिं निद्दादुगस्स एकेण समएण ऊणियठिर्ति ठवेइ । दलिप पडुच्च कालो उ तुल्लो ।

[1]खीणकसाय दुचरिमे निद्द पयल च हणइ छउमत्थो । आवरणमतराए छउमत्थो चरिमसमयम्मि ॥

खीणकसायदुचरिमे निद्द पयल च हणति छउमत्थो० त्ति । एव खीणकसाओ कम्माणि तिण्णि उदएणेव खवेंतो खवेंतो गओ ताव जाव समयाहियावलिया सेस त्ति । निद्दादुगवज्जियाण चोद्दसण्ह कम्माण उदीरणा फिट्टा । तओ आवलियामेत्त काल उदएणेव वेइज्जति ताव जाव खीणकसायस्स दुचरिमसमओ त्ति । तम्मि दुचरिमसमए निद्दादुगाणि थिवुगाणि अण्णहिं सकताणि एव निद्दादुग खीण उदयाभावाओ । 'आवरणमतराए छउमत्थो चरिमसमयम्मि' त्ति एयासिं चोद्दसण्ह पग

१ गाथेमा सर्वेष्वपि मूलसूत्रपुस्तकेषूपलभ्यते ॥

डीणं उदय संतखओ खीणकसायस्स चरिमसमए भवति । तओ य सेकाले आवरणविग्घरहिओ केवली भवति ।

संभिन्न पासतो, लोगमलोग च सव्वओ सव्व । त नत्थि ज न पासइ, भूयं भव्व भविस्स च ॥ (आवश्यकनिर्युक्तिगा० १२७)

संभिण्णं पासंतो० गाहा । जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडिं देसूणं केवली विहरिय समुग्घायं गंतूण वा अगंतूण वा अघाइकम्माणं खयनिमित्तं सुहुमकिरियमप्पडिवाइं झाणमब्भुवेइ, पुव्वं ताव मणजोगं बायरं निरुंभइ, तओ वइजोगं, तओ कायजोगं बायरं निरुंभति, तओ मणजोगं सुहुमं निरुंभइ, तओ वइजोगं, तओ सुहुमं कायजोगं निरुंभंतो सुहुमुस्सासो सुहुमकिरियमप्पडिवाइज्झाणं समल्लियइ । तम्मि झाणम्मि वट्टमाणो आउगवज्जाणि सव्वकम्माणि उव्वट्टेति ठिति-रसघाएहिं ताव जाव चरिमसमयसजोगिकेवलि त्ति । तस्स चरिमसमयसजोगिकेवलिस्स सव्वकम्माणि उव्वट्टिज्जमाणाणि उव्वट्टिज्जमाणाणि सव्वोवट्टणाए उव्वट्टियाणि अजोगिकेवलिकालसमठितियाणि जायाणि । जेसिं कम्माणं अजोगिम्मि उदओ नत्थि तेसिं ठितिं समऊणं ठवेइ, दलियं पडुच्च, न कालं । तम्मि चेव समए ओरालिय-तेया-कम्मइगसरीरसंबद्धाणं बंधण संघाय छन्हं संठाणाणं पढमसंघयण ओरालियंगोवंगं वण्ण गंध रस फास अगरु० उवघाय पराघाय विहग० २ पत्तेय थिराथिर सुभासुभ निमेणणामाणं एएसिं कम्माणं उदओदीरणाणं वोच्छेओ, ऊसास-सरा हेट्ठओ निरुद्धा । तओ सेकाले अजोगिकेवली जाओ, तस्स कालो अजहण्णमणुक्कोसिओ अंतोमुहुत्तिओ । तम्मि काले वट्टमाणो उवरयकिरियं अप्पडिवाइं झाणं झियाइ कम्माणं खवणनिमित्तं । एवं सो अजोगिकेवली ठिति-घायाइरहिओ उदयवंताणि ठितिखएणं अणुभवंतो खवेइ । जेसिं उदओ नत्थि ताणि ठितिखएणं वेयंतो वेदिज्जमाणिगासु थिबुगसंकमेणं संकामेंतो वेदिज्जमाणपगतित्तणेण

वेदेंतो वेदेंतो जाति ताव जाव दुचरिमसमओ त्ति ॥ ६३ ॥

देवगइसहगयाओ, दुचरिमसमयभवियम्मि खीयति। सविवागेयरणामा, णीयागोय पि तत्थेव ॥६४॥

देवगइसहगयाओ० गाहा। 'देवगइसहगयाउ'त्ति देवगतिणा सह एगतेण बधो जासिं ताओ देवगइसहगयाओ। काओ ताओ? भण्णति—देवगति वेउव्वा ऽऽहारगसरीरा एएसिं चेव बंधण संघाया वेउव्वा ऽऽहारगसरीरअंगोवंगा देवाणुपुव्वी य, एयाओ देवगइसहगयाओ। 'दुचरिमसमयभवियम्मि खीयति' त्ति दोण्णि समया सेसा भवसिद्धियत्तणस्स जस्स सो दुचरिमसमयभवसिद्धिओ तम्मि दुचरिमभवसिद्धियम्मि खीयति, काओ खीयति? देवगइसहगयाओ। 'सविवागेयरणामा णीयागोय पि तत्थेव' विवागो णाम उदओ, जेसिं उदओ णामकम्माण नत्थि ते सविवागेयरनामा अणुदयणामानामित्यर्थः। के ते? भण्णति त०—ओरालिय-तेय-कम्मइगसरीर एतेसिं चेव बंधणा तिण्णि संघाया तिण्णि छ संठाणा छ संघयणाणि ओरालियसरीरअंगोवंग वण्ण गंध रस फास मणुयाणुपुव्वी अगरुलहुग उवघाय पराघाय उस्सास पसत्था ऽपसत्थविहायगति अपज्जत्तग पत्तेय थिराथिर सुभासुभ दूभग सुस्सर दुस्सर अणादेज्ज अजसकित्ति निमेणमिति। एयाओ देवगइसहगयाहिं सम दुचरिमसमयभवियम्मि खय गच्छति। अण्ण च 'नीयागोय पि तत्थेव'त्ति तत्थेव समए णीयागोय पि खय गच्छति, उदयाभावाओ। अण्णयरवेयणीय ति साया ऽसायाण अण्णयर वेयणीय जस्स उदओ नत्थि त पि तत्थेव समए खय गच्छति।

---

१ ओ ताओ? दे॰ का२ ॥ २ टीकाया यशःकीर्ति इति पाठ॰ ॥

जति साएण पडिवण्णो तो असायं पुवं खवेति, जइ असाएण अजोगितं पडिवण्णो तो सायवेयणीयं पुवं खवेति ॥ ६४ ॥

अन्नयरवेयणिज्जं[2], मणुयाउं उच्चगोयं[3] नाम नव । वेएइ अजोगिजिणो, उक्कोस जहन्न एक्कारं ॥६५॥

अण्णयरवेयणीयं० गाहा । 'अण्णयरवेयणीयं' सायं असायं वा खवियसेसं मणुस्साउग उच्चागोयं णामम्मि णव पगडीओ 'वेदेति' अणुभवति 'अजोगिजिणो' अजोगिकेवली उक्कोसेणं बारस पगडीओ वेदेति, जहण्णेणं एक्कारस तित्थगरविरहियाओ चेव वेदेति ॥ ६५ ॥

पुव्वुद्दिट्ठाणि णव णामाणि तण्णिरूवणत्थं भणति—

मणुयगइ-जाइ तस बायरं च पज्जत्त सुभगमाएज्जं । जसकित्ती तित्थयरं, णामस्स हवंति णव एया ॥६६॥

मणुयगतिजाति० गाहा । गाहासिद्धो चेव अत्थो ॥ ६६ ॥

तच्चाणुपुव्विसहिया[4], तेरस भवसिद्धियस्स चरिमम्मि । सन्तंसगमुक्कोसं, जहन्नगं बारस हवंति ॥६७॥

तच्चाणुपुवीसहिया० गाहा । ततियाणुपुवी मणुयाणुपुवीत्यर्थः, तेण सहिता तच्चाणुपुविसहिता ताणि बारस तेरस भवंति, भवसिद्धिगस्स चरिमसमए भवंति । 'सन्तंसगमुक्कोसं' संतकम्ममुक्कोसेणं भवति । 'जहण्णगं बारस हवंति' जहण्णेणं तित्थग-

---

१ अत आरभ्य ग्रन्थपरिसमाप्तिपर्यन्तं का२ प्रतेरेव पाठ, सं—का१ प्रत्यो खण्डितत्वात् ॥ २ °यणीयं, म° खे२ ॥ ३ °य णामं च । वे° खे१ । °य नामेणं । वे° खे३ ॥ ४ "अत्रैव मतान्तर दर्शयति—तच्चाणुपुव्वि०" इति सप्ततिकाटीकायाम् ॥

रणाभरहिया ता चेव बारस चरिमसमए भवति । अण्णे आयरिया भणंति—मणुयाणुपुवी दुचरिमसमए च्चेव खविज त्ति, कम्हा ? उदयाभावाओ । तम्हा बारस सन्ताणि उक्कोसेण, जहण्णेण एक्कारस चरिमसमए भवंति ॥ ६७ ॥

मणुयगइसहगयाओ, भव-खेत्तविवाग जीववागु त्ति । वेयणियन्नयरुच्चं, च चरिमभवियस्स खीयंति ॥६८॥

मणुयगइसहगयाउ० गाहा । मणुयगतिणामेण सह उदओ जेसिं णामाण ताओ मणुयगतिसहगयाओ । 'भवखेत्तविवागजीववाग' त्ति भवविवागा खेत्तविवागा जीवविवागा य । तत्थ भवविवागा मणुयाउगं, खेत्तविवागा मणुयाणुपुवी, सेसाणि णव जीवविवागाणि । एयाणि एक्कारस, 'वेयणियण्णयरुच्चं च' अण्णयरं वेयणीयं उच्चागोयं वा 'चरिमभवियस्स खीयंति' त्ति एयाणि तेरस चरिमभवसिद्धियस्स खीयंति त्ति । ततो कम्मविमोक्खसमए चेव उड्ढं गच्छति आलोकान्तम् ॥६८॥

अह सुइयसयलजयसिहरमरुयणिरुवमसहावसिद्धिसुहं । अणिहणमव्वावाहं, तिरयणसारं अणुहवंति ॥६९॥

अह सुतिय० गाहा । 'अथ' इति आनन्तर्ये कर्ममोक्षानन्तरमेव प्राप्नोति 'सुतिय' सुद्धं णिरजणं 'सगल' सपुण्णं अखंडं 'जगसिहरं' लोगग्गं 'अरुअं' वाहिरहियं 'णिरुवमं' उवमाणं जस्स नत्थि एरिसं तारिसं ति, 'महावसिद्धिसुहं' जहा संसारसुहाणि कृत्रिमाणि ण तहा सिद्धिसुहं, बाहिरकारणनिरपेक्षमित्यर्थः, 'अणिहणं' निहणं जस्स णत्थि तं अणिहणं अव्वावाहं णाम अविणासितं । सुद्धं सपुण्णं [लोगग्गं] वाहिरहियं णिरुवमं अणिहणं अव्वाबाहं महावसिद्धिसुहं 'तिरयणसारं अणुभवंति' त्ति

१ वाग त्ति । खे२ । वागसा । खे१ । २ अ, भवचरिमसमयम्मि खी खे२ ॥

णाण-दंसण-चरित्ताणि तिरयणं तेसिं सारं—फलं तं अणुभवंति ॥ ६९ ॥

दुरहिगम-णिउण-परमत्थ-रुइर-बहुभंगदिट्ठिवायाओ। अत्था अणुसरियव्वा, बंधोदय-संतकम्माणं॥७०॥

दुरहिगम० गाहा । अहिगमिउं दु ति दुरहिगमो पमाण-णय-णिक्खेवादीहि अणुगम्मंतो तम्हा दुरहिगमो, णिउणो णाम सूक्ष्मः, परमट्ठ त्ति—तत्तं, रुचिरं—रम्यं हृदयप्रह्लादकरं, बहुभंग त्ति—बहुविगप्पं, दुरहिगमं च णिपुणं च परमार्थं च रुचिरं च बहुभंगं च जं तं दुरहिगम-णिउण-परमट्ठ-रुचिर-बहुभंगं। किं तं ? दिट्ठिवाओ, ततो दिट्ठिवायाओ 'अत्था अणुसरियव्वा बंधोदयसंतकम्माणं' ति बंधोदय-संताणं अत्था अणुसरियव्वा—चिन्तेयव्व त्ति । एते अट्ठा दिट्ठिवाए विगप्पेण चिंतिया ततो दिट्ठिवायाओ एते साहेयव्व त्ति भणियं भवति ॥ ७० ॥

इदाणिं आयरिओ अप्पणो पमादभावं अप्पागमत्तं च पदंसन्तो अण्णेसिं आयरियाणं अप्पमायं बहुश्रुतत्वं च प्रख्यापयन् इमं भणति—

जो जत्थ अपडिपुन्नो, अत्थो अप्पागमेण बद्धो त्ति। तं खमिऊण बहुसुया, पूरेऊणं परिकहिंतु ॥७१॥

---

१ अस्माद् गाथासूत्रादनन्तर सर्वेष्वपि मूलसूत्रादर्शेष्विय गाथा वरिवर्तते—गाहग्गं सत्तरीए, चंदमहत्तरमयाणुसारीए । टिक्काए णियमियाण, एगूणा होइ णउई उ ॥

जो जत्थ अपडिपुण्णो० गाहा । 'जो जत्थ' त्ति जो अत्थो बंधोदय-सतेसु 'अपडिपुण्णो' खडो जाओ 'अप्पागमेण बद्धो'त्ति आगमो-सुच अप्पो आगमो जस्स सो तहा तेण अप्पागमेण बद्धो त्ति काउ 'त खमिऊण बहुसुता' त अवराह खमिऊण दोसं अघेत्तूण बहुसुता दिट्ठिवायण्णो 'पूरेऊण परिकहेंतु' त्ति त विगल अत्थ पूरेऊण-मगल करेत्तु परिकहिंतु-भणतु त्ति ॥ ७१ ॥

सभास-चुण्णिया सित्तरी समत्ता ॥

प्रथमं परिशिष्टम् ।

अस्मिन् ग्रन्थे प्रमाणतयोद्धृतानां शास्त्रीयावतरणानामकारादिक्रमेणानुक्रमः ।

द्वितीयं परिशिष्टम् ।

सप्ततिकाचूर्णि-टिप्पण्यन्तर्गतानां ग्रन्थकृन्नाम्नां सूची ।

तृतीय परिशिष्टम्।

सप्ततिकाचूर्णि-टिप्पण्यन्तर्भूताना ग्रन्थनाम्नां सूची।

चतुर्थं परिशिष्टम् ।

सप्ततिकाचूर्ण्यन्तर्गतानां पारिभाषिकशब्दानामनुक्रमः ।

